हिन्दी चेतना

वर्ष १३, अंक ५०, अप्रैल २०११ ● Year 13, Issue 50, April 2011

हिन्दी प्रचारिणी सभा, कैनेडा की त्रैमासिक पत्रिका Hindi Chetna ● Quarterly Magazine of Hindi Pracharini Sabha, Canada

इस अंक में

सम्पादकीय		03
पाती		04
प्रज्ञा परिशोधन		07
कहानी..		
वो एक पल	● नीना पॉल	10
छोटा दर्द बड़ा दर्द	● शैलजा सक्सेना	17
उत्तरायण	● सुदर्शन प्रियदर्शिनी	21
व्यंग्य		
आप जलूल आना....	● समीर लाल 'समीर'	26
आलेख		
सरकार, समाज और...	● देवेन्द्र पाल गुप्ता	28
हम सैल्फमेड नहीं	● सीताराम गुप्ता	30
पाश्चात्य पृष्ठभूमि...	● प्रीत अरोड़ा	33
कविताएं..		
संवादों का पुल	● निर्मल गुप्त	37
सरकारी अफसर	● अनिल श्रीवास्तव	38
प्रतिशोध की ज्वाला	● पंकज त्रिवेदी	38
बादल	● मधु वार्ष्णेय	38
वो बातें	● दीपक 'मशाल'	39
अरबी श्राताओं के...	● भारतेन्दु श्रीवास्तव	39
जाने के बाद	● बिंदू सिंह	40
ग़ज़ल	● डॉ. अफ़रोज़ ताज	40
विनय श्रद्धांजलि	● भगवतशरण श्रीवास्तव	41
एक रात की...	● अलका सैनी	41
माँ की रसोई+देखना	● जयप्रकाश मानस	41
पिरामिड की ममी	● अनिल प्रभा कुमार	43
पिचकारियाँ+कलाई पर	● रेखा मैत्र	43
कभी नहीं	● डॉ. पद्मा विजय दास	43
लघु कथाएं..		
बाल-कथा : पापा-माँ	● रचना श्रीवास्तव	45
बेटियां	● आकांक्षा यादव	47
मंत्रीजी का विश्वास	● महेश द्विवेदी	47
पुस्तक समीक्षा		
रेखा मैत्र के...	● गुलशन मधुर	48
कौन-सी ज़मीन	● अखिलेश शुक्ल	50
अनुस्मृति...	● भगवतशरण शुक्ल	53
विलोम चित्रकाव्य शाला		54
चित्रकाव्य कार्यशाला		55
साहित्य समाचार		56-59
अधेड़ उम्र में थामी...	● हरीश चंद्र शर्मा	61
आख़िरी पन्ना	● सुधा ओम ढींगरा	64

नीना पॉल, यू.के.

10◂

वो एक पल

28 ▾

आलेख

सरकार, समाज और सीनियर सिटीजन

देवेन्द्र पाल गुप्ता 'सुहृद', भारत

छोटा दर्द बड़ा दर्द

शैलजा सक्सेना, कैनेडा

17 ▴

"हिन्दी चेतना" सभी लेखकों का स्वागत करती है कि आप अपनी रचनायें प्रकाशन हेतु हमें भेजें। सम्पादकीय मण्डल की इच्छा है कि "हिन्दी चेतना" साहित्य की एक पूर्ण रूप से संतुलित पत्रिका हो, अर्थात साहित्य के सभी पक्षों का संतुलन। एक साहित्यिक पत्रिका में आलेख, कविता और कहानियों का उचित संतुलन होना आवश्यक है, ताकि हर वर्ग के पाठक पढ़ने का आनन्द प्राप्त कर सकें। इसीलिए हम सभी लेखकों को आमंत्रित करते हैं कि हमें अपनी मौलिक रचनाएँ ही भेजें। अगले अंक के लिए अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भेज दें। अगर संभव हो तो अपना चित्र भी साथ अवश्य भेजें।

रचनाएँ भेजते हुये निम्नलिखित नियमों का ध्यान रखें :

1. *हिन्दी चेतना अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर तथा जनवरी में प्रकाशित होगी।*
2. *प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा।*
3. *पत्रिका में राजनैतिक तथा विवादास्पद विषयों पर लिखित रचनाएँ प्रकाशित नहीं की जायेंगी।*
4. *रचना के स्वीकार या अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार संपादक मंडल का होगा।*
5. *प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जायेगा।*
6. *पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक तथा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।*

•
संरक्षक एवं प्रमुख सम्पादक
श्री श्याम त्रिपाठी, कैनेडा
•
सम्पादक
डॉ. सुधा ओम ढींगरा, अमेरिका
•
सहयोगी सम्पादक
डॉ. निर्मला आदेश, कैनेडा
अभिनव शुक्ल, अमेरिका
डॉ. अफ़रोज़ ताज, अमेरिका
आत्माराम शर्मा, भारत
अमित कुमार सिंह, भारत
•
परामर्श मंडल
पद्मश्री विजय चोपड़ा, भारत
मुख्य सम्पादक, पंजाब केसरी पत्र समूह
पूर्णिमा वर्मन, शारजाह
सम्पादक, अभिव्यक्ति-अनुभूति
तेजेन्द्र शर्मा, लंदन
महासचिव, कथा यू.के.
विजय माथुर, कैनेडा
सरोज सोनी, कैनेडा
राज महेश्वरी, कैनेडा
श्री नाथ द्विवेदी, कैनेडा
डॉ. कमल किशोर गोयनका, भारत
चाँद शुक्ला 'हदियाबादी', डेनमार्क
डायरेक्टर, रेडियो सबरंग,
अध्यक्ष, वैश्विक समुदाय रेडियो प्रसारण माध्यम
•
विदेश प्रतिनिधि
आकांक्षा यादव, अंडमान-निकोबार
मुर्तजा शरीफ, पाकिस्तान
राजेश डागा, ओमान
दीपक मशाल, यू.के.
उदित तिवारी, भारत
डॉ. अंजना संधीर, भारत
विनोद चन्द्र पाण्डेय, भारत
•
सहयोगी
सुषमा शर्मा, आलोक गुप्ता, भारत
अदिति मजूमदार, डैनी कावल, कैनेडा

मौन में दिव्य संगीत बजने लगा, शब्द नव ब्रम्ह का रूप लेने लगे,
चेतना चेतना में विलय हो गयी, सूर्य उगने लगा रात छिपने लगी,
एक वीणा बजी, आत्मा में कहीं,नृत्य करने लगा एक मन मोर सा।

– अभिनव शुक्ल

विशेष सूचना

पाठको ! 'हिन्दी चेतना' का इस वर्ष का विशेषांक व्यंग्य यात्रा के संपादक प्रतिष्ठित व्यंग्यकार, डॉ. प्रेम जनमेजय पर होगा।

आप अपनी रचनाएँ पहली अगस्त तक हमें भेज दें। रचनाएँ भेजने के लिए ईमेल हैं :

श्याम त्रिपाठी : shiamtripathi@gmail.com

सुधा ओम ढींगरा : sudhadrishti@gmail.com

Hindi Chetna is a literay magazine published quarterly in Toronto, Ontario under the editorship of Mr. Shiam Tripathi. Hindi Chetna aims to promote the Hindi language, Indian culture and the rich heritage of India to our children growing in the Canadian society. It focuses on Hindi Literature and encourages creative writers, young and old, in North America to write for the magazine. It serves to keep readers in touch with new trends in modern writing. Hindi Chetna has provided a forum for Hindi writers, poets and readers to maintain communication with each other through the magazine. It has brought many local and international writers together to foster the spirit of friendship and harmony.

HINDI CHETNA
6 Larksmere Court, Markham, Ontario, L3R 3R1
Phone : (905) 475 - 7165 Fax : (905) 475 - 8667
e-mail : hindicehetna@yahoo.ca

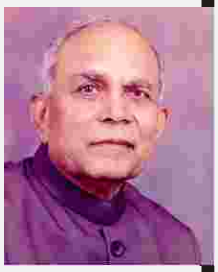

कुछ भी लिखने से पूर्व मेरी लेखनी अवरुद्ध हो जाती है और मुझे जापान के भयंकर प्राकृतिक तांडव से व्याकुल मानवता की चीत्कार सुनाई पड़ती है। लगभग ६० वर्ष हुए जब कि हीरोशिमा की आग अभी भी शांत न हो पायी थी; वे घाव अभी तक भर भी न पाए थे कि दुर्भाग्य ने भयंकर तूफ़ान से देश को 50 वर्ष पीछे धकेल दिया। निर्माण करने में युग लग जाते हैं किन्तु उसे ध्वस्त होने में पल भी नहीं लगते। विश्व को हिला देने वाली इस दुर्घटना ने मनुष्य को जो पाठ सिखाया है, वह हम, युगों-युगों तक भूल नहीं पायेंगे। ईश्वर उस देश के नेताओं को सुमति और धैर्य प्रदान करे तथा उनके हृदयों में आशा की नई किरण पैदा करे। मेरा विश्वास है कि विश्व के हर लेखक की साँस कुछ क्षणों के लिए अवश्य ठहर गयी होगी। हम केवल उनके लिए दो आँसू ही बहा सकते हैं। 'हिंदी चेतना' उस उन्नतिशील देश के उन लाखों लोगों की आत्मा की शान्ति के लिए सहानुभूति के पुष्प अर्पित करती है।

'हिंदी चेतना' का प्रथम अंक सरस्वती के मुखपृष्ठ से प्रारम्भ हुआ था और इस अंक का मुखपृष्ठ भी माँ सरस्वती को समर्पित है। हमारे मुखपृष्ठ का श्रेय कलाकार श्री अरविन्द नराले जी को जाता है जो अपनी बहिर्मुखी प्रतिभा से हमारी पत्रिका की शोभा बढ़ा रहे हैं। यही नहीं अनेकों लोग जिनके नाम सामने नहीं आते वे गुप्त रूप से जो साथ दे रहे हैं, मेरे पास शब्द नहीं कि कैसे उनका आभार प्रकट करूँ। उदाहरणार्थ, अभिनव शुक्ल, अदिति मजूमदार, दीपक मशाल और भी कई लोग जिनके सहयोग से इस पत्रिका में जो प्रगति दिखाई देती है, वह शायद सम्भव न हो पाती। ये तरुण लोग ही 'हिंदी चेतना' का भविष्य हैं।

साथ ही जब मैं पत्रिका में प्रशंसा के अनेकों पत्र पढ़ता हूँ तो मन बहुत ही प्रसन्न हो जाता है। यही हिन्दी चेतना की प्रगति है और यही उसका मूल्यांकन। आप लोगों के स्नेह भरे पत्र ही हमारी प्रेरणा हैं और हमारा मार्गदर्शन। यह सम्बन्ध हमारा प्रोत्साहन बढ़ाते हैं और हमें नई दिशा दिखलाते हैं। हमारे नये- नये लेखक जो हमारे साथी हैं, उनकी सुंदर रचनाओं से पाठकों को जो आनन्द मिलता है, यह अच्छे साहित्य सृजन का साक्षात्कार है। हाँ एक बात स्पष्ट करना चाहूँगा कि 'हिंदी चेतना' का मुख्य उद्देश्य स्तरीय रचनाएँ हैं... यह पत्रिका कैनेडा और उत्तरी अमेरिका की है अतः पुराने लेखकों के साथ आप को विदेशों के नए लेखक, कवि और व्यंग्यकार भी इसमें मिलेंगे। उद्देश्य युवा पीढ़ी को प्रोत्साहित करना है।

अभी दो दिन हुए कि भारत से इतनी दूरी पर बैठे हुए जब हमने भारतीय क्रिकेट टीम को अपने पड़ोसी श्रीलंका के साथ विश्व कप में खेलते हुए देखा तो उस समय हमारे हृदय में वही धड़कन थी जो भारतवासियों में धड़क रही थी। हमारा सुख-चैन, दुःख-दर्द मातृभूमि के साथ साझा है, लेकिन खेद की बात है कि हमारा साहित्य एक नहीं जबकि हमारी भाषा एक है। हमें इन दूरिओं को मिटाना होगा और साहित्य को पान की तरह स्वादिष्ट बनाना होगा।

आपका
श्याम त्रिपाठी

हिन्दी चेतना को पढ़िये, पता है :
http://hindi-chetna.blogspot.com

हिन्दी चेतना की समीक्षा अवश्य देखें :
http://KathaChakra.blogspot.com

घर बैठे पुस्तकें प्राप्त करें :
http://www.pustak.org

हिन्दी चेतना को आप ऑनलाइन भी पढ़ सकते हैं :
Visit our Web Site :
http://www.vibhom.com
http://www.vibhom.com/hindi%20chetna.html

पाती

हिन्दी चेतना का जनवरी अंक मिला। पत्रिका प्रभावित करती है न केवल अपनी रूप-सज्जा के कारण बल्कि विषय सामग्री के वैविध्य और उसके स्तर पर भी। आप सबको बधाई। मुझे किशोर चौधरी की कहानी 'इक फ़ासले के दरम्यान खिले हुए चमेली के फूल' भी अच्छी लगी। पुस्तक समीक्षा स्तम्भ प्रशंसनीय है। भारत में ऐसी पत्रिका की अपेक्षा की जा सकती है पर विदेश में रहते हुए, इस स्तर की पत्रिका निकालने का काम सराहनीय है। इस एक वर्ष में हिन्दी चेतना की सामग्री में जो सकारात्मक बदलाव आए हैं उसमें आपकी मेहनत और निष्ठा को स्पष्ट देखा जा सकता है। मेरी शुभकामनाएं कि पत्रिका और भी समृद्ध और सफल हो।

अनिल प्रभा कुमार
न्यूजर्सी, अमेरिका

'हिंदी चेतना' मेरे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। मैं इस पत्रिका से काफ़ी क़रीब से जुड़ी हुई हूँ। महामना मदन मोहन मालवीयजी के बारे में बहुत कुछ जानने को मिला। इस अंक में श्री अयोध्या सिंह उपाध्य 'हरिऔध' और श्री मैथलीशरण गुप्त की चंद पंक्तिया भी पढ़ने को मिलीं। प्यार की सौगात, वह युवक, यादों के झरोखे इत्यादि लेख एवं स्तम्भ मुझे बहुत अच्छे लगे।

बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

अदिति मजूमदार, अमेरिका

हिन्दी चेतना का जनवरी-मार्च अंक देख आशा से कई गुना ज़्यादा प्रसन्नता हुई। हिन्दी-चेतना के प्रति मेरा यह विश्वास और भी प्रगाढ़ हुआ है कि साहित्य की विश्वस्तरीय पत्रिकाओं के बीच अलग से अपनी पहचान कराती ये मनमोहक पत्रिका उन पत्रिकाओं में से है जिनमें लेखक या कवि के नाम को नहीं बल्कि उनके कृत्यों की उत्कृष्टता को वरीयता दी जाती है। इसीलिये पाठक के लिए अचम्भे की बात नहीं कि नामी-गिरामी और स्थापित साहित्यकारों के बीच कई कोपलों को भी सम्मानित स्थान दिया जाता है। पूरा विश्वास है कि इसी तरह आपके सम्पादन में हमारी हिन्दी-चेतना ना सिर्फ पत्रिकाओं में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करेगी बल्कि अक्षरशः हिन्दी के प्रचार-प्रसार में और पत्रिकाओं को प्रेरणा देगी.

दीपक मशाल, यू.के.

इस अंक के सम्पादकीय में प्रेमचंद के योगदान और उनपर लगे आरोपों की चर्चा है। आज तो उनकी कहानियों को दलितों के विरुद्ध उठी आवाज़ का आरोप भी लग रहा है। इस नासमझी को कौन रोक सकता है। इस अंक की कहानियां सुंदर बन पड़ी हैं। 'चमेली के फूल' में उस मृगतृष्णा का अच्छा चित्रण हुआ है जिसे लोग सुख कहते हैं। 'मैं रमा नहीं' भावुक कहानी बन पड़ी है। अविनाश वाचस्पति तो अपने व्यंग्य और आसुकविता के लिए प्रसिद्ध हैं। तोते उड़ रहे हैं... उनका हिंदी ब्लाग जगत पर कसा व्यंग्य है, जिसके वे भी एक सदस्य हैं। दीपक मशाल की कहानी 'अनहोनी' में उस अनहोनी घटना का ज़िक्र है जिसमें एक नेता घायल हो जाता है... आखिर नेता का घायल होना भी तो एक अनहोनी है। विलोम चित्र काव्यशाला एक नया प्रयोग है।

बढ़िया अंक के लिए बधाई स्वीकारें। अंत में नववर्ष के आगमन पर डॉ. पूर्णिमा वर्मन को उद्धृत करते हुए शुभकामनाएं...

अभिनंदन नव वर्ष का
मंगलमय हो साल।
ऋद्धि सुख संपदा
सब से रहे निहाल।।

चंद्र मौलेश्वर, भारत

'हिंदी चेतना' का जनवरी-मार्च 2011 अंक आकांक्षा यादव जी के सौजन्य से देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। देखकर ख़ुशी हुई कि भारत से बाहर भी हिंदी साहित्य को पत्र-पत्रिकाएं समृद्ध कर रही हैं। हिंदी प्रचारिणी सभा, कनाडा द्वारा 'हिंदी चेतना' जैसी स्तरीय पत्रिका का प्रकाशन काबिले-तारीफ है। अंक में बलराम अग्रवाल की कहानी 'चुड़ैल' प्रभावी लगी वहीं पूर्णिमा वर्मन के दोहे भी भाए। कविताओं में आकांक्षा यादव, पंकज त्रिवेदी, भगवत शरण की कवितायें पहली ही नज़र में ध्यान आकृष्ट करती हैं। पुस्तक समीक्षा खंड भी काफी विचारोत्तेजक है। आशा की जानी चाहिए कि यूँ ही 'हिंदी चेतना' विदेशों में हिंदी की समृद्धि के प्रति तत्पर रहेगी।

कृष्ण कुमार यादव
निदेशक डाक सेवाएँ
अंडमान-निकोबार द्वीप समूह,
पोर्टब्लेयर-744101

'हिंदी चेतना' का अंक पहली बार देखा, वाकई बेहतरीन। जनवरी-मार्च 2011 अंक मेरे सामने है।

हिंदी के तमाम स्थापित और नवोदित नामों को एक साथ पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। अंतर्जाल से जुड़े तमाम लोगों की रचनाएँ भी इस अंक में हैं। आपका सम्पादकीय विचारोत्तेजक है। पाठकों के पत्रों से पत्रिका की लोकप्रियता का अहसास होता है। दुर्भाग्यवश भारत में अभी भी तमाम हिंदी रचनाकार इंटरनेट इत्यादि से नहीं जुड़े हैं, कोशिश करें कि उन तक भी पत्रिका पहुँचे तो इसका दायरा विस्तृत हो सकता है।

आकांक्षा यादव
अंडमान-निकोबार द्वीप समूह,
पोर्टब्लेयर.

हिन्दी चेतना का अंक मिला। बहुत आभार!

मदन मोहन मालवीय विशेषांक तो एक धरोहर है। 11 दिसम्बर को मैं लघुकथा सम्मेलन में भाग लेने के लिए ट्रेन से पटना जा रहा था। अचानक मेरी 1989 बैच की एक छात्रा का (वह इस समय हिन्दी प्रवक्ता है) फोन आया– 'सर मुझे मदन मोहन मालवीय से सम्बन्धित कुछ सामग्री चाहिए। छात्राओं को एक प्रतियोगिता में हिस्सा लेना है।' मैं उस समय उसकी सहायता कैसे करूँ? तुरन्त मुझे हिन्दी चेतना का ध्यान आया। सुकेश साहनी जी भी साथ थे। उनके मोबाइल से इण्टरनेट पर पत्रिका का पूरा लिंक तलाश करके मंजु सिंह को भेज दिया और उसे किसी लाइब्रेरी की खाक नहीं छाननी पड़ी।

आप विदेश में रहकर प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अच्छी पत्रिका निकाल रही हैं, यह एक महत्त्वपूर्ण सेवा है। स्वार्थी साहित्यकार (?) तो हर जगह हैं जिन्हें नाक की सीध से आगे कुछ भी दिखाई नहीं देता। अच्छा लिखनेवाला ही टिकेगा, इसमें तो दो मत नहीं हो सकते। अभी बलराम अग्रवाल की कहानी, पूर्णिमा वर्मन के दोहे और देवी नागरानी की गज़ल पढ़ी है। साफ़–सुथरे चयन के लिए साधुवाद!

रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु', भारत

हमारी गौरव–भाषा हिंदी को लेकर आप जो महान कार्य कर रहे हैं, वह अभिनंदनीय है। यहाँ भारत में विभिन्न संस्थाओं में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति की दैनिक दुर्दशा देख–देख दुखी होते हैं। आकाशवाणी हो या समाचार–पत्र सभी की हिंदी को विकृत और अपदस्थ करने की कोशिशें जारी हैं। उसके थोड़े–बहुत हितैषी हैं भी तो बेबस। ऐसे कठिन काल में हिंदी भाषा की गरिमा सहेजने और उसे व्यापकता देने के आपके प्रयास स्तुत्य हैं। आपको, आदरणीया डॉ. सुधा ओम ढींगरा जी को और आपकी हिंदी–चेतना को कोटि–कोटि प्रणाम।

अपरिमित आदर और हार्दिक शुभ कामनाओं सहित।

डॉ. देवेन्द्र शर्मा, भारत

जब से सुधा ओम ढींगरा जी ने हिन्दी चेतना के संपादन का कार्य भार सम्भाला है, चेतनता कुछ अधिक ही बढ़ गई है। पंडित मदन मोहन मालवीय विशेषांक तो अमूल्य निधि है। मैंने तो बचपन में नाम ही सुना था व बाद में भी सुनते ही आए थे कि उन्होंने बनारस में हिन्दू विश्वविद्यालय खोला था। किन्तु इस अंक से अत्याधिक जानकारी प्राप्त हुई। कहाँ–कहाँ से सब प्रसंग खोज कर लगाए गए हैं। अफ़रोज़ ताज जी का लेख तो अत्यंत ही प्रभावशाली लगा। इस बार की पत्रिका में कहानियाँ बहुत अच्छी लगीं। कविताएँ और ग़ज़लें भी मन को भाईं।

मालती सत्संगी, अमेरिका

हमेशा की तरह हिन्दी चेतना कुछ न कुछ नया लेकर आती है। इस बार कवर देख कर दिल खुश हो गया। कहानियों में 'मैं रमा नहीं', 'चमेली के फूल' और 'चुड़ैल' तीनों ही पसंद आईं. राजीव रंजन प्रसाद के अप्रकाशित उपन्यास के अंश बहुत अच्छे लगे, उपन्यास का इंतज़ार रहेगा। दीपक मशाल की अनहोनी लघुकथा संवेदनशील है। शशि पाधा की हीरक कनियाँ लघुकथा नहीं घटनाक्रम लगा। अधेड़ उम्र में थामी कलम के अंतर्गत मालती सत्संगी के अनुभव कचोट गए। बच्चों के लिए माँ–बाप को क्या–क्या करना पड़ता है। इस स्तम्भ को शुरू करने की प्रशंसा किए बिना नहीं रहूँगी। हरेक के मन में कल्पना के पखेरू उड़ते हैं, विचार कुलबुलाते हैं बस लिखने में झिझक होती है, जब हिम्मत बंधा दी जाए तो धीरे–धीरे कलम चल पड़ती है। असली लिखना तो प्रौढ़ अवस्था में ही होता है जब खूब सारे अनुभव होते हैं। पूर्णिमा वर्मन के नव वर्ष के दोहे, आस्था नवल की डायन प्रथा कविता, प्राण शर्मा और नीरज गोस्वामी की ग़ज़लें काफ़ी अच्छी लगीं। उचित सामग्री से लैस पत्रिका बहुत पसंद आई।

माणिक सोलंकी, सूरीनाम

इस बार की कहानियाँ मैं रमा नहीं, चमेली के फूल दोनों ही बेहद पसंद आईं। तेजेन्द्र शर्मा की कहानी टेलीफ़ोन लाईन के बाद तो कहानियों का स्तर दिन–ब–दिन ऊँचा ही उठता जा रहा है। लघु कथाएँ भी अच्छी लगीं। लम्बी पुस्तक समीक्षा पढ़ने में परेशानी होती है। समीक्षाएं छोटी छापें। साहित्यिक समाचार थोड़े बढ़ाएं। पत्रिका की जितनी भी तारीफ़ करूँ कम है।

सोलन रॉय, मॉरिशस

हिन्दी चेतना अब एक स्तरीय पत्रिका बन गई है। कॉफ़ी टेबल पर रख कर गर्व महसूस होता है। विदेश की पत्रिका को एक श्रेणी देने के लिए और उत्तम सामग्री के चयन के लिए सम्पादक सुधा ओम ढींगरा साधुवाद की पात्रा हैं। उत्तरी अमेरिका में हिन्दी की पत्रिका को इतने वर्षों तक चलाना एक सराहनीय कार्य है। मुख्य सम्पादक श्याम त्रिपाठी एवं हिन्दी चेतना की टीम को बधाई।

सरोजनी मेहरा, अमेरिका

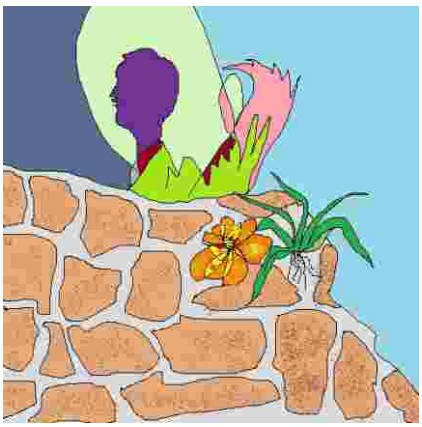

दीपक मशाल

Beacon Signs
1985 Inc.

7040 Torbram Rd. Unit # 4, Mississauga, ONT. L4T 3Z4

Specializing In:

Illuminated Signs awning & pylons

Channel & Neon letters

Banners

Architectural signs

VEHICLE GRAPHICS

Engraving

Silk screen

Silk screen

Design Services

Precision CNC cutout plastic, wood & metal letters & logos

Large format full Colour imaging System

SALES – SERVICE - RENTALS

Manjit Dubey

दुबे परिवार की ओर से हिन्दी चेतना को बहुत बहुत शुभकामनायें

Tel: (905) 678-2859 **Fax: (905) 678-1271**

E-mail: beaconsigns@bellnet.ca

विचारों की भीड़

◆ इन्द्रा (धीर) वड़ेहरा, कैनेडा

प्रश्न : याद आते हैं दादा जी के शब्द जो अक्सर दोहराया करते थे : 'ध्यान करने बैठो, साधना होने लगेगी!' ध्यान और साधना में कुछ भेद है क्या?

– ललिता थापर, भारत

उत्तर : लगता है आपके दादा जी का कहने का भाव था 'ध्यान करने बैठो, मौन–क्षण घटने लगेंगे!' ललिता जी, परिभाषा की दृष्टि से, मन से अलग हो, मन को दृश्य समझ कर निहार लेने की युक्ति को 'ध्यान' कहा जाता है और यही प्रक्रिया परिपक्व होते–होते जब मन मौन में भी विश्राम लेने लगे तो उसे 'साधना' कहते हैं! साधना करते समय हम अपने मन के प्रति जागरूक ही नहीं रहते, बल्कि मौन का अनुभव भी करते हैं और मौन समय एक विशेष–सी शान्ति की अनुभूति भी होती है!

ललिता जी, आप के दादा जी का व्यक्तित्व उच्च कोटि का रहा होगा जो अपने नाती–पोते को विरासत में 'शान्ति की अनुभूति' देना चाहते थे! वाह–वाह, मेरा नमस्कार है आप के दादा जी को!

प्रश्न : मन के संबंध में जानकारी तो हमें किताबों से भी मिल सकती है, फिर साधना करने का इतना ज़्यादा महत्व क्यों ?

– सुकेत धीर, भारत

उत्तर : सुकेत जी, मन के संबंध में जानकारी ले लेना एक बात है, लेकिन, मन के प्रति जागरूक होना अलग बात है, किताब पढ़कर हम अपने मन के प्रति जागरूक नहीं हो पाएंगे, इसके लिए अभ्यास आवश्यक है! साधना का महत्व जागरूक होकर जी लेने में है! मन के विषय में जान लेना 'ज्ञान' है, और अपने आपको जान लेना 'आत्म–ज्ञान' है! साधना हम आत्म–ज्ञान के लिए करते हैं! जागरूक होकर रहेंगे तो मन से उठ रही लहरों के जाल में नहीं फंसेंगे और कुछ स्वतंत्रता से जीएंगे!

प्रश्न : साधना में महत्व किस बात का है? कैसे विचारों का महत्व है?

– सुमन मल्होत्रा

उत्तर : सुमन जी, अपनी विवेक शक्ति को विचारों के अन्धड़ वेग से दूर ही रखना चाहिए! विचार चक्र–व्यूह सा जाल बुन, वीर अभिमन्यु सी विवेक शक्ति का हरण कर, उस पर प्रहार कर जाते हैं; इसलिए विचार जिगरी दोस्त–सा हो या दुश्मन–सा, इनसे सम्बन्ध विच्छेद ही भला है!

दीपक मशाल

सुमन जी, साधना में महत्व किसी भी प्रकार के विचारों का नहीं, महत्व केवल विचारों से हट कर एक तरफ हो जाने का है! ज़रुरत विचारों को निहार कर, उनका निरीक्षण करते हुए उन्हें जान लेने की है और विशेष कार्य अपने ही विचारों के साथ संबंध स्थापित ना हो इसी बात का है। प्रश्नोत्तर स्पष्टीकरण के लिए, मैं एक प्रश्न और ले रही हूँ, जिस के माध्यम से केवल आप के प्रश्न का उत्तर ही स्पष्ट नहीं होगा, बल्कि आपको साधना के विषय में प्रत्यक्ष रूप से जानकारी भी मिलेगी।

प्रश्न : (प्रश्न का हिंदी अनुवाद) : पीछे आपने समझाया था कि साधक के लिए जितना महत्व अपने आपको (अपने विचारों को) जान लेने का है, उतना ही महत्व आत्म-स्थित हो मौन में ठहर जाने का है। यह तो समझ आया है कि आत्म-स्थित होते हैं तो अपने विषय में जानकारी आसानी से होने लगती है और अपने विषय में जानकारी हो तो मौन में आत्मस्थित हो जाना भी आसान है; यानि यह भी जान लिया है कि यह दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं। कोई ऐसा सूत्र है जिससे यह सब आसानी से होने लगे?

– कौंसिलर व्हाईट, कैनेडा

उत्तर : आत्मज्ञान हेतु कुछ साधक ऋषि के आश्रम में रहने लगे। एक बार ऋषि अपने शिष्यों के साथ यात्रा के लिए निकले, रास्ते में वह एक गाँव से गुजर रहे थे तो उन्होंने उसी गाँव में नदी के किनारे कुछ दिन रहने का निश्चय किया। एक दिन वह अपने शिष्यों को लेकर गाँव गए तो कुछ भीड़ दिखाई दी। वहां से राजा की सवारी निकल रही थी। लोग बड़े उत्साह से उसे देखने की इच्छा से खड़े थे। जब सब कुछ गुजर गया, तो सारी टोली अपने पड़ाव पर घर वापिस लौटी।

घर लौट ऋषि ने अपने शिष्यों से पूछा : आज आप ने क्या देखा?

एक साधक ने उत्तर दिया :

'भीड़ देखी, काफिला निकला, लोग राजा की सवारी का इंतज़ार कर रहे थे, मैं किनारे पर खड़ा रहा, ना किसी राजा की सवारी का इंतज़ार था और ना ही भीड़ से निकल जाने की जल्दी! ज्यों ही भीड़ निकली, मैं अपने घर लौट आया।'

बाहरी दृश्य के माध्यम से ऋषि ने यहाँ भीतर के अचेतन की ओर संकेत किया है।

'...ज्यों ही भीड़ निकली, मैं अपने घर लौट आया।'

कौंसिलर व्हाईट, घर लौट आना, यहाँ आत्म-स्थित हो जाने का आलंकारिक चित्रण है। जैसे घर हमारे शरीर का आधारभूत स्थान है, वैसे ही आत्म-स्थित हो जाना हमारे मन का आधार स्थल है।

सार घर लौट आने में है और 'एक तरफ किनारे पर खड़ा रहना' घर लौट आने में सहायक है। आत्मा का स्वरूप रसमय है, इस रस में आनंद भी है और तृप्ति भी। इसलिए, अधीर मन घर वापिस लौट जाने को आतुर है। वह जीवन के पोषण स्त्रोत से जुड़ जाना चाहता है।

'...ज्यों ही भीड़ निकली, मैं अपने घर लौट आया।'

भावार्थ : मन से दूरी पैदा करने के लिए, मन से अलग हो 'मैं किनारे पर खड़ा रहा।'

अभिप्राय : भावना विचारधारा की लहर संग बह लेने को राजी कर रही थी और मैं सचेत रहा। यहाँ साधक इस तथ्य से जागरूक है, 'चेतना ने झपकी ली तो उलझे।'

सार : भीतर का अचेतन लहरें लेता रहता है और इस मूर्छा में हमारी कल्पना का संसार फैलता चला जाता है। यहाँ साधक को ना तो माया की चमक-दमक प्रभावित कर पाई और ना ही घर लौट आने की जल्दी उसकी स्वाभाविक-स्थिरता के संतुलन में बाधा बनी।

प्रश्न : दृश्य में हम क्यों उलझते हैं? देखते-देखते मूर्छा-सी आ जाती है और हम दृश्य के भोक्ता होने लगते हैं!

चेतावनी : आई लहर, गयी लहर, जो आए और जाए वह शाश्वत नहीं है, सतत रहने वाला शाश्वत है। जो थोड़ी देर के लिए है उस में क्या उलझना, भोक्ता नहीं दृष्टा बनो, साक्षी भाव में रहो।

निष्कर्ष : आत्मा का स्वरूप रसमय है, इस रस में आनंद भी है और तृप्ति भी। इसी रस की उपलब्धि के लिए साधक आत्म-स्थित होना चाहता है। बुद्धिमान लोगों की घर वापसी, 'आत्म-स्थित होना' उनके अपने जीवन-पोषण-स्त्रोत से रस ग्रहण करने या अपने आनंद स्त्रोत की कड़ी से जुड़े रहने के लिए होती है।

प्रश्न : हमारे मन में इतनी भीड़ किस कारण से रहती है ?

उत्तर : सोई हुई चेतना माया की गुलाम है और मानव इसकी चमक-दमक से भ्रमित है।

कहीं गहरे में आनंद की चाह बनी रहती है। अपने आप को

राजा सा सवार देखने की इच्छा और उसका इंतज़ार का कारण भीड़ है।

संत तुका राम जी के विषय में एक बात जानने योग्य है।

संत तुका राम जी से किसी ने पूछा : आपके घर वाले आपको इतना तंग करते हैं, आप तो परेशान रहते होंगे।

संत तुका राम जी बोले : हर क्षण वह याद दिला देते हैं तो अन्दर झाँक लेता हूँ, 'कहीं उथल पुथल तो नहीं हो रही।'

तुका राम जी के शब्द उद्धृत करने से अभिप्राय यह है कि जो भगवान से जुड़े रहना चाहते हैं वह अंदर की उथल पुथल के प्रति सदा सतर्क रहते हैं और ध्यान रखते हैं कि भीतर का मौन नहीं डोले।

जीवन जीने की रूपरेखा का चित्रण रहीम जी के निम्नलिखित शब्दों से दिया है जो साधना प्रक्रिया के लिए भी एक उपयुक्त आलंकारिक चित्रण है :

'रहिमन या तन सूप है, लीजै जगत पछोर!
हलुकन को उडी जान दै, गरुए राखी बटोर!!'

जिस प्रकार छाज से अन्न को फटक कर हल्के दाने निकाल कर फेंक दिए जाते हैं और उपयुक्त दाने रख लिए जाते हैं इसी प्रकार हे मनुष्य, इस मानव-योनि-रूपी छाज से सांसारिक विषयों को फटका कर देख ले और जो सारवान तत्व है उसे ग्रहण कर।

सबक : भोक्ता नहीं दृष्टा बनो, साक्षी भाव में रहो।

संक्षेप में : 'ध्यान' सांसारिक विषयों के प्रति संयम विकसित करने के लिए और 'साधना' सारवान तत्व को ग्रहण करने के लिए की जाती है। अति उत्तम प्रश्न भेजने और प्रश्नोत्तर वार्तालाप में भाग लेने के लिए आप सबका धन्यवाद करती हूँ। ◆

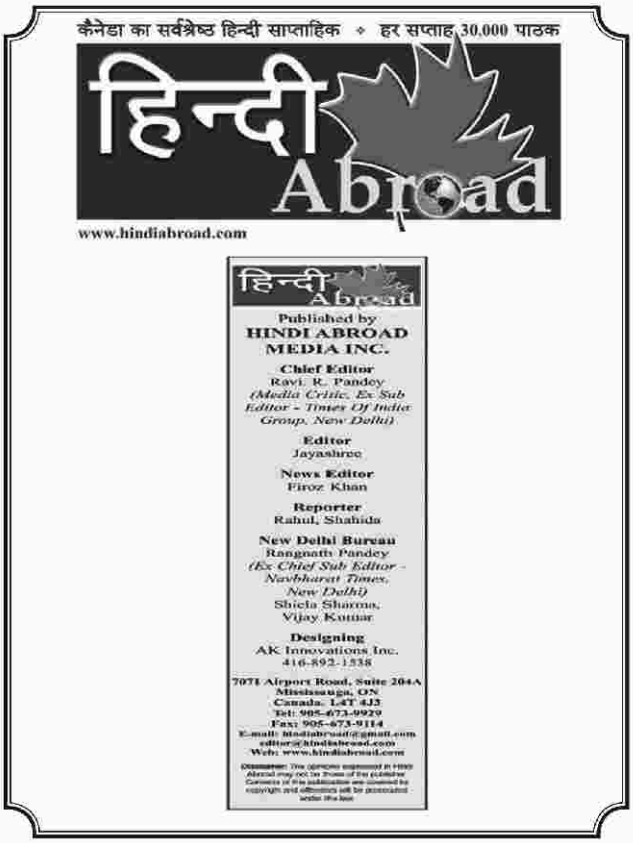

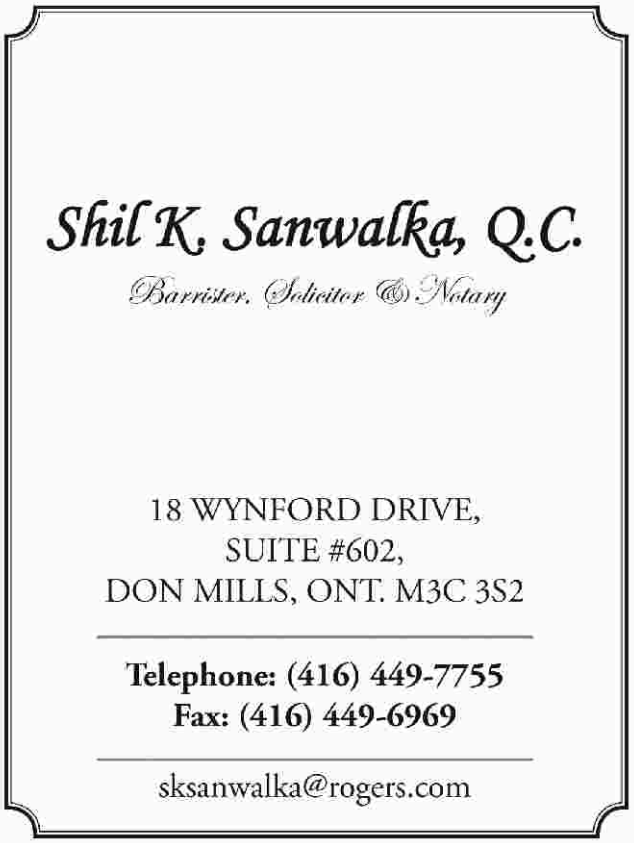

कहानी

वो एक पल

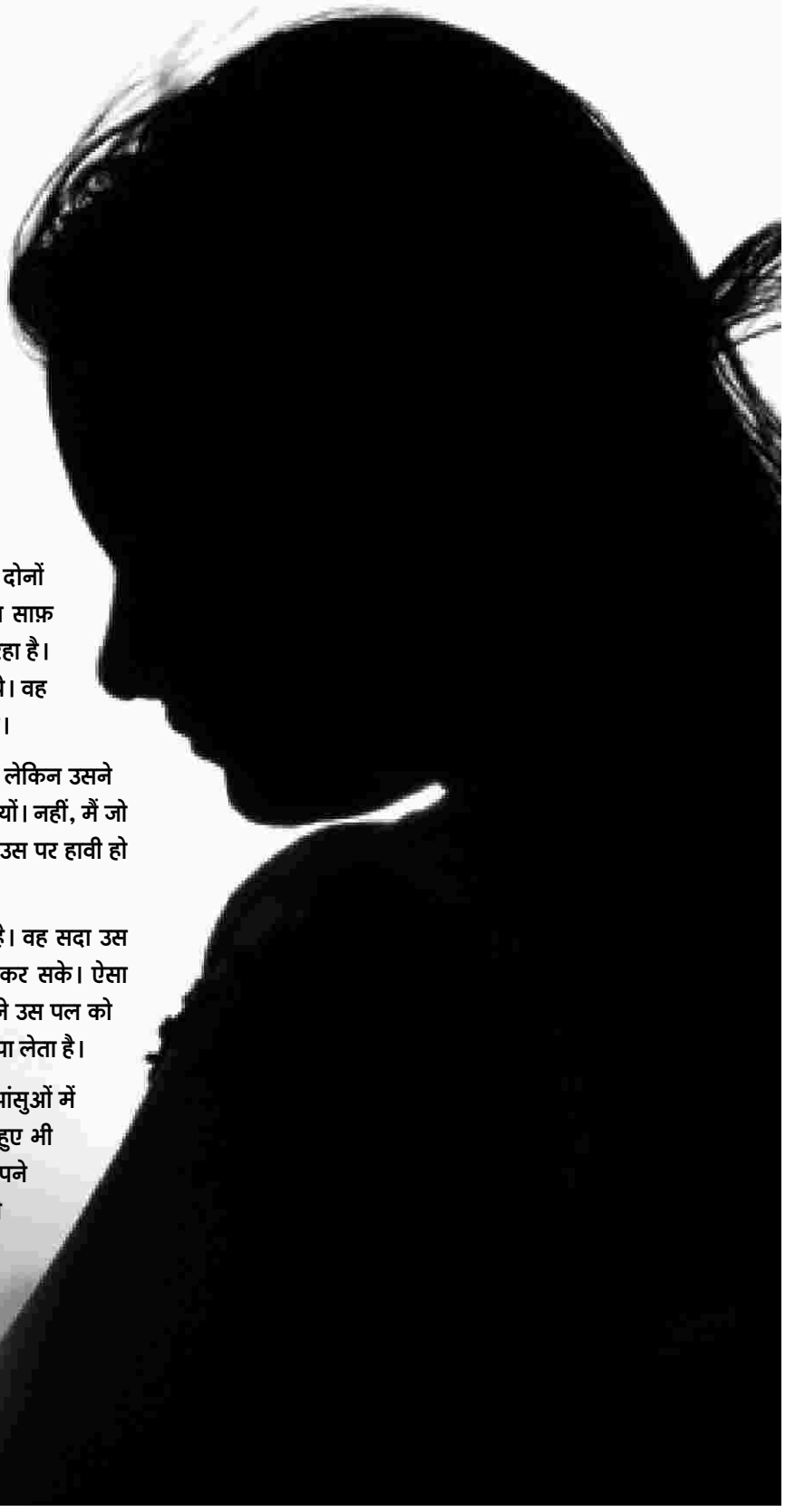

✍ *नीना पॉल, यू.के.*

वो बड़ी बेसब्री से अपने कमरे में टहल रहा है। दोनों हाथों की मुट्ठियां कसी हुई हैं। चेहरे पे तनाव साफ़ दिखाई दे रहा है। आख़िर उसके साथ आज ये सब क्या हो रहा है। ओह गोड हैल्प मी। काश! इस समय एंडरिया घर आ जाये। वह ऑफ़िस से जल्दी घर ना आ गया होता तो कितना अच्छा था।

उसके आफ़िस में इतनी जवान और सुंदर लड़कियां हैं लेकिन उसने कभी उन्हें आंख उठा कर नहीं देखा तो फिर आज ये सब क्यों। नहीं, मैं जो सोच रहा हूं ग़लत है। परन्तु अन्दर का दानव बुरी तरह से उस पर हावी हो रहा था।

दानव तो हर मनुष्य के अन्दर कहीं छुपा बैठा होता है। वह सदा उस एक कमज़ोर पल की ताक में रहता है जब वह हमला कर सके। ऐसा कमज़ोर क्षण अकसर लोगों की ज़िंदगी में आता है। जिसने उस पल को काबू में कर लिया वह सदा के लिये उस उस दानव से मुक्ति पा लेता है।

उस नाज़ुक क्षण के गुज़रते ही माइकल पश्चाताप के आंसुओं में जीवन भर गोते लगाते रहे। वर्षों औलाद के लिये तरसते हुए भी किसी परस्त्री को कभी बुरी नज़र से नहीं देखा और आज अपने ही घर पर डाका डाल दिया। सोनिया की हैरत से तकती ख़ामोश आंखें कितना कुछ बोल रही थीं।

स्कूल से आते हुए सोनिया बारिश से बुरी तरह भीग गई थी। इस इंगलैंड की बारिश का तो वैसे ही कुछ भरोसा नहीं होता कि कब बिन बुलाए मेहमान की भांति टपक पड़े। उस पर जुलाई महीने की बारिश, उसे जितनी जल्दी आने की होती है उससे अधिक

जल्दी जाने की। ऐसी बारिश में भीगने का कुछ अपना ही मज़ा होता है। जब गीले कपड़े बदन से चिपक कर शरीर में एक झुरझुरी सी उत्पन्न कर देते हैं।

घर के बाहर डैडी की कार खड़ी देख कर सोनिया ख़ुश हो गई। कल से स्कूल समर हॉलिडेस के लिये बंद हो रहा है। बस डैडी अकेले हैं अब मैं उन्हें पटा लूंगी कि मुझे मेरी बचपन की सहेली मैगी के साथ आयल ऑफ़ वाइट जाने दें।

आयल ऑफ़ वाइट एक छोटा सा बहुत ही ख़ूबसूरत साफ़ सुथरा आइलैंड है। जो पर्यटकों के लिये बहुत मशहूर है। इसकी सुंदरता ही तो है जो लोगों को आकर्षित करती है। उछलती हुइ लहरों से भरपूर नीला समुंदर। हवाओं से खेलती हुई। गर्मियों में तो यहां आने का मज़ा ही कुछ और है। घरों के सामने रंग-बिरंगे फूलों से सुसज्जित बाग़, तरह-तरह के फूल पत्तियों से भरी लटकती हुइ टोकरियां इस छोटे से आइलैंड को और भी ख़ूबसूरत बना देती हैं।

सोनिया की ख़ूबसूरती ही तो थी जो माइकल... घंटी की आवाज़ सुन कर माइकल ने जैसे ही दरवाज़ा खोला भौंचक्के से रह गये।

बारिश में भीगी हुइ सोनिया। चेहरे पर गीली पानी टपकाती हुइ घुंघराली लटें। बदन से चिपका हुआ सफ़ेद गीला ब्लाऊज़ और उसमें से झांकता हुआ एक एक गठीला अंग। गर्मी से तमतमाए गाल। माइकल ने ऐसा रूप पहले कभी नहीं देखा था। इस समय उसके सामने बेटी नहीं बादलों संग उतरती हुई कोई अप्सरा थी। माइकल के अंदर का दानव ज़ोर मारने लगा।

सोनिया प्यार से डैडी कह कर जैसे ही आगे बढ़ी माइकल एकदम घूम कर अपने कमरे में चले गये। माइकल का दिल बेकाबू हो रहा था मगर दिमाग ग़लत कदम उठाने की इजाज़त नहीं दे रहा था। दोनों हाथों की मुट्ठियां इतनी कस के भिंची हुईं थी जैसे अभी नसें फट के बाहर आ जायेंगी।

सोनिया की टांगें कांप रहीं थी। आंखों में आंसू भरे थे। आज डैडी की एक हरकत ने उससे वो छत छीन ली जिसके नीचे एक लड़की स्वयं की सबसे अधिक सुरक्षित समझती है। नहीं किसी चीज़ पर इतना हक नहीं जताना चाहिये। तकदीर का एक ही धक्का मुंह के बल कीचड़ में गिरा देता है। उसे बेरहम दुनिया में अकेले भटकने के लिये छोड़ दिया जाता है।

सोनिया अपनी ठंडी उंगलियां गीले बालों से घुमाते हुए सोचने लगी, आज डैडी को क्या हुआ? ज़रूर ऑफिस में कोई बात हुई होगी। कपड़े बदल के पूछती हूं।

बदल तो मौसम रहा था। तेज़ हवाओं के साथ मूसलाधार बारिश। माइकल की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। उन्होंने सोचा अच्छा है मैं घर से बाहर चला जाऊं। माइकल ने जैसे ही कदम उठाया कि बड़ी ज़ोर से बिजली कड़की। सोनिया के मुंह से एक चीख़ निकल गई। चीख सुनते ही माइकल जल्दी से अपने कमरे से बाहर आए।

सोनिया हमेशा कड़कती बिजली से डर जाती है। डैडी कह कर सोनिया माइकल के साथ लिपट गई। सोनिया का बदन कांप रहा था जिसने माइकल का संतुलन और भी बिगाड़ दिया। वही माइकल जो बड़ी मुश्किल से स्वयं पर काबू पा रहे थे डगमगा गये। इससे पहले कि वह सम्भलते सोनिया के कराहने की आवाज़ आई - डैडी यू आर हर्टिंग मीं। माइकल रुक ना सके और जो ना होना था हो गया।

सोनिया बड़ी-बड़ी आंखों में आंसू भरे हैरानी से डैडी को देखती रह गई। क्या यह वही डैडी हैं जो कभी उसकी आंखों में आंसू देख कर विचलित हो जाते थे। चोट सोनिया को लगती थी और दर्द उन्हें होता था? आज उन्हें सोनिया के इतने चीखने, कराहने की आवाज़ भी सुनाई नहीं दी।

माइकल एक झटके से उठे और कमरे से

बाहर चले गये।

सोनिया गुमसुम-सी बिस्तर पर लेटी रही। एक लड़की को बेटी, बहन, मां की नज़र से ना देख सिर्फ़ एक औरत की नज़र से ही क्यों देखा जाता है? आज केवल उसका ही नहीं उसके विश्वास का भी बलात्कार हुआ है।

बाहर ज़ोर से कार चलने की आवाज़ आई। ज़ोर से तो सोनिया का दिमाग भी चल रहा था। ममा डैडी से बहुत प्यार करती हैं। उन्हें यदि इस बात की भनक भी पड़ गई तो वह डैडी को छोड़ने में एक पल भी नहीं लगायेंगी। मैं उन दोनों को अलग करने का कारण नहीं बनना चाहती। मैं उस कारण को ही उन दोनों के बीच से अलग कर दूंगी।

सोनिया ने उठकर बैग में कुछ कपड़े रखे और घर से बाहर हो गई। सोनिया की टांगें कांप रहीं थी। आंखों में आंसू भरे थे। आज डैडी की एक हरकत ने उससे वो छत छीन ली जिसके नीचे एक लड़की स्वयं की सबसे अधिक सुरक्षित समझती है। नहीं किसी चीज़ पर इतना हक नहीं जताना चाहिये। तकदीर का एक ही धक्का मुंह के बल कीचड़ में गिरा देता है। उसे बेरहम दुनिया में अकेले भटकने के लिये छोड़ दिया जाता है।

अकेली तो वह पहले भी कितनी बार डैडी के साथ घर पर रही है। कितने विश्वास के साथ उनके बिस्तर में सोई है तो फिर आज क्या बदल गया।

बदल तो सबकी ज़िंदगियां गईं। चाह कर भी सब कुछ पहले जैसा नहीं हो सकता। चलते हुए सोनिया स्कूल ग्राऊंड में पहुंच गई। बैंच पर बैठ सोचने लगी अब आगे क्या करेगी, कहां जायेगी?

वह जायेगी। यहां से बहुत दूर। डैडी का सामना करके वह उनकी शर्मिंदगी से भरी आंखें नहीं देख सकती। मैं मैगी के साथ आयलोवाइट जाऊंगी। जहां मुझे कोई नहीं जानता। उसने जेब से मोबाइल निकाला।

हैलो मैगी...

सोनिया... तुम ठीक हो?

ओह मैगी, शब्द उसके होठों पर कांप के रह गये।

सोनिया तुम हो कहां, जल्दी बोलो मैं आ रही हूं।

मैगी तो आ गई मगर सोनिया ने अपनों से बहुत दूर जाने का इरादा कर लिया। जा तो वह आयल ऑफ़ वाइट ही रही है परन्तु उस जाने में और इस जाने में कितना अंतर है। तब वह डैडी की मर्ज़ी से जाती और अब वह मजबूरी में जा रही है कभी वापिस ना आने के लिये।

ओह ममा आज आपकी बेटी को आपकी गोद की बहुत ज़रूरत है। एक बार अपनी सोनिया को सीने से लगा लो। सोनिया, सोनिया बेबी, देखो ममा तुम्हारे लिये क्या लाई है। यह बच्ची भी ना ज़रूर स्कूल से आकर सो गई होगी।

अरे ये तो अपने कमरे में भी नहीं है कहां गई होगी। इसके कारण तो आज मैं जल्दी काम से घर आई हूं। ये बच्चे भी ना। मेज़ पर एक लिखा हुआ कागज़ देख कर एंडरिया उधर को बढ़ गई।

आइ एम सॉरी ममा, आइ लव यू?

पगली कहीं की। आज फिर कोई शरारत की होगी, एंडरिया हंसते हुए बेटी के कमरे से बाहर आ गई। उसे क्या मालूम कि शरारत तो सोनिया की तकदीर के साथ हुई है। जब रक्षक ही भक्षक बन जाये तो इन्साफ़ की उम्मीद का विश्वास भी मर जाता है।

विश्वास तो माइकल का भी उठ गया था स्वयं पर से। वह उस एक पल को कोसते हुए बेमकसद इधर से उधर कार भगा रहे थे। सोनिया की वो दर्द भरी हैरान आंखें। मैं कैसे उन आंखों का सामना कर पाऊंगा। आइ एम सॉरी माइ बेबी?

पांच महीने की छोटी-सी बच्ची ही तो थी सोनिया जब एंडरिया सीने से लगा कर उसे घर लाई थी। दस साल से औलाद के लिये तरसती हुई एंडरिया ने जब इस लावारिस छोटी-सी बच्ची को अकेले बेबीकॉट में खेलते देखा तो इतने सालों की दबी हुई उसकी ममता जाग उठी थी। उस बच्ची में जाने क्या था कि एंडरिया स्वयं को रोक ना पाई और उसे गोद ले लिया। इस छोटे से ख़ुशियों से भरपूर बंडल ने अपनी किलकारियों से सारे घर को रोशन कर

उसने तो हमारे घर को रोशन किया लेकिन मैंने उसकी ज़िंदगी में अंधेरे भर दिये। चाहे गोद ली हुई है मगर है तो बेटी ही ना। अरे वह तो बेचारी यह भी नहीं जानती कि वह हमारी बायलॉजिकल बेटी नहीं है। आज मैंने अपनी ही बेटी के विश्वास को कितनी बड़ी चोट दी है।

दिया था।

उसने तो हमारे घर को रोशन किया लेकिन मैंने उसकी ज़िंदगी में अंधेरे भर दिये। चाहे गोद ली हुई है मगर है तो बेटी ही ना। अरे वह तो बेचारी यह भी नहीं जानती कि वह हमारी बायलॉजिकल बेटी नहीं है। आज मैंने अपनी ही बेटी के विश्वास को कितनी बड़ी चोट दी है।

जिस बेटी को इन हाथों ने झूला झुलाया, जिसके सीने से लग कर वह बेझिझक सो जाया करती थी उसी बेटी के साथ इतनी घिनौनी हरकत... छी। मुझे घिन आ रही है स्वयं पर। माइकल अपनी ही आत्मग्लानी में जल रहे थे।

जलना तो अब उन्हें सारी उम्र है पश्चाताप की अग्नि में। अचानक मोबाइल की घंटी सुन माइकल के हाथ स्टेरिंग व्हील पर कस गये।

माइकल कहां हैं आप, क्या सोनिया आपके साथ है?

सोनिया क्या हुआ सोनिया को? मैं तो उसे वहीं छोड़ कर आया था माइकल के मुंह से एकदम से निकल गया।

आप कब मिले सोनिया से। क्या आपसे कुछ कह कर गई है?

मैं घर आ रहा हूं।

अब वो घर-घर नहीं रहा माइकल। तुमने एक ही झटके में सब कुछ बरबाद कर दिया। कहां गई होगी सोनिया। कहीं उसने... नहीं-नहीं यह मैं क्या सोचने लगा।

सोच तो सोनिया रही थी कि अब आगे क्या करेगी। अभी सोलह वर्ष पूरे करने में दो महीने बाकी हैं। ममा को मेरे सोलहवें जन्मदिन का कितना इन्तज़ार था।

बेटी के इन्तज़ार में एंडरिया की आंखों से नींद ही ग़ायब हो गई थी। करवटें बदलते हुए जैसे ही बिस्तर पर आगे हाथ गया तो वह ख़ाली था। अरे माइकल कहां गये?

माइकल सोनिया के अंधेरे कमरे में पलंग के पास नीचे कालीन पर बैठे धीरे-धीरे कुछ बोल रहे थे।

सोनिया मेरी ग़ल्ती का अपनी ममा से बदला मत लो बेटा। मैं उसे यूं तुम्हारे लिये तड़पता नहीं देख सकता। वापिस आ जाओ सोनिया। मैं वादा करता हूं तुम्हारे सामने कभी नहीं आऊंगा। एंडरिया और ना सुन सकी।

सुन रही हो ना सोनिया मैं कब से बक-बक कर रही हूं। आज शाम को क्लब चलेंगें। सुना है इस क्लब में ख़ूब देर तक डिस्को होता है। दादी को तो मैं पटा लूंगी। बस आज की शाम मस्ती के नाम मैगी झूमते हुए बोली।

मैग छुटियां समाप्त होने वाली हैं मैं स्कूल नहीं जाऊंगी तो लोग मेरी ममा से सवाल करेंगे सोनिया ने परेशान होते हुए कहा।

मैं हूं ना सोनिया। मैं ऐसा कुछ नहीं होने दूंगी, चल अब जल्दी से तैयार हो जायें।

क्लब के अंदर पैर रखते ही उन्हें लड़के-लड़कियों का शोर सुनाई दिया। तेज़ संगीत, रंग-बिरंगी बत्तियां, गिलास टकराने की आवाज़ें चारों ओर हंसी-मज़ाक। यहां किसी को किसी की परवाह नहीं कि कौन क्या कर रहा है। चारों ओर बस मस्ती ही मस्ती। कोई और समय होता तो सोनिया सबसे ज़्यादा इस माहौल का आनंद उठाती परंतु इस समय उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था।

अच्छा तो उस समय एंडरिया को भी नहीं लगा था जब माइकल तैयार हो हाथ में सूटकेस लेकर सीढ़ियों से नीचे उतर कर आये थे। उसकी प्रश्न भरी नज़रें पत्नी की ओर उठ गईं।

एंडरिया मैंने तुम्हें बताया था ना कि मुझे लंदन हैड आफ़िस में ट्रांस्फ़र कर दिया गया है। मेरे कैरियर का ये एक बहुत बड़ा ब्रेक है। वहां मकान वगैरह का इन्तज़ाम करके मैं तुम्हें भी ले जाऊंगा।

नहीं माइकल मैं लंदन नहीं जाऊंगी। अगर मेरी बेटी वापिस आ गई तो... एंडरिया आंसू ना रोक सकी।

माइकल आगे बिना एक शब्द बोले कमरे से बाहर चले गये।

सोनिया ने क्लब से बाहर आकर राहत की सांस ली। वह सोच रही थी कि ये बात मैगी को कैसे बताये। लेकिन कल मैगी वापिस घर जाने वाली है। यह बात उससे छुपा कर भी तो नहीं रख सकती।

मैगी मैं मां बनने वाली हूं।

क्या? मैगी दोनों हाथ अपने कानों पर रख कर बोली ये मैंने क्या सुना सोनिया फिर से तो कहना। तुम पागल हो गई हो। जितनी जल्दी हो सके इस मुसीबत से छुटकारा पाओ नहीं तो तुम्हारी ज़िंदगी तबाह हो जायेगी।

अरे जिसने ये ज़िंदगी दी है जब उसने इसे तबाह करने से पहले एक बार भी नहीं सोचा तो हो जाने दो।

देख सोनिया पागल मत बन। हम कल ही डॉक्टर से बात करके इसका कोई ना कोई हल ढूंढ़ लेंगे।

नहीं मैगी इस बच्चे में मेरे डैडी का अंश है। मैं इस को ज़रूर जन्म दूंगी। जो मेरे डैडी ज़िंदगी भर अपनी उस भूल को ना भूल सकें।

सोनिया क्या जाने डैडी का हाल। और ममा, उनकी तो आंखें दरवाज़े पर और कान हर ध्वनि पर टिके हुए हैं। एंडरिया इसी उम्मीद पर ज़िंदा है कि सोनिया एक दिन ज़रूर मिलेगी। ख़ामोशी उसकी मजबूरी है क्योंकि माइकल का इस शहर में बहुत नाम है इज़्ज़त है सब ख़त्म हो जायेगा।

मैगी आखिर सोनिया की ऐसी भी क्या मजबूरी थी कि किसी से मिले बिना ही लंदन चली गई स्कूल की सहेलियों ने ताना मारा।

भई बाद में उसे दाखिला मिलने में मुश्किल होती। फिर उसके डैडी भी तो वहां हैं। छुट्टियों में आ जायेगी मिलने कह कर मैगी ने

सब का मुँह बंद कर दिया।

मुश्किल का समय तो नाज़ों से पली हुई सोनिया के लिये था। पेट में पलती हुई नन्हीं–सी जान, पब की नौकरी। रात बारह बजे के बाद थक कर जब बिस्तर पर लेटती तो ममा का नर्म स्पर्श याद आ जाता। सोनिया ने तकिये को ऐसे सीने से लगा लिया मानो वह ममा के गले में बाहें डाल कर बातें कर रही हो।

ममा अगर मैं बेटी ना हो कर बेटा होती तो आप मेरा क्या नाम रखतीं एंडरिया के पास लेटे हुए छोटी–सी सोनिया ने पूछा।

हूं... लड़कों में मुझे सायमन नाम अच्छा लगता है एंडरिया ने बेटी के बाल सहलाते हुए कहा।

ममा मुझे सायमन चाहिये।

वो तो सम्भव नहीं। मुझे मेरी बच्ची सबसे प्यारी है एंडरिया ने उसे कस के गले से लगा लिया।

प्यार तो सोनिया भी कर रही थी धीरे से अपने पेट पर हाथ फिराते हुए। ममा मैं आपको सायमन दूंगी। आप सायमन को प्यार करेंगी ना ममा वैसे ही जैसे डैडी ने अपनी प्रिंसेस से किया था। ममा घर की बहुत याद आती है और सुबकते हुए सोनिया की आंख लग गई।

आंख तो शायद अब ना एंडरिया की लग पाएगी और ना ही माइकल की। एक का पश्चाताप उसे कचोट रहा था और दूसरे की इंतज़ार में खुली आंखें।

हां एक इंतज़ार ज़रूर समाप्त हुआ और वो था सोनिया का। नन्हें से जीते जागते खिलौने को जब उसने बांहों में लिया तो फूट के रो पड़ी। आज उसकी इस ख़ुशी में शामिल होने वाला कोई अपना नहीं था।

अरे मैं ब्रैनी को कैसे भूल सकती हूं जो मेरा कितना ख़्याल रखती हैं। वह मैगी की ब्रैनी हैं मगर उन्होंने कभी मुझे परायेपन का एहसास नहीं होने दिया।

ब्रैनी मैं काम पर जा रही हूं सोनिया तैयार हो कर नीचे आई।

आज जाना ज़रूरी है बेटा। बाहर बहुत सर्दी है और फिर आज सायमन की तबियत भी कुछ ठीक नहीं ब्रैनी प्यार से बोली।

'ही इज़ अ बिग बोय ब्रैनी' कल से मेरी दो हफ़्ते की छुट्टियां भी तो हैं हमारी मैगी मैम जो आ रही हैं अपने बेटे सायमन का दूसरा जन्मदिन मनाने और वह ब्रैनी और सोए हुए सायमन को एक प्यारा सा चुम्बन देकर घर से बाहर हो गई।

उफ़, आज कितनी ठंड है एंडरिया रज़ाई को चारों ओर लपेटते हुए बोली। जब ज़्यादा ठंड होती थी तो सोनिया हमेशा मेरे बिस्तर में आ जाती थी गर्म होने के लिये। कहां होगी मेरी बच्ची। किस हाल में होगी।

आज तो ठंड के मारे हाथों का बुरा हाल है जूली, लगता है ज़ोरों से बर्फ़ गिरने वाली है

तुम्हें क्या? तुम तो कल से दो वीक की छुट्टियों पर जा रही हो। कोई हमसे पूछे जिसने इतनी ठंड में भी काम पर आना है जूली उलाहना देते हुए बोली।

अच्छा सायमन के जन्मदिन नहीं भूल जाना मैगी भी आ रही है सच मज़ा आयेगा।

कैसे भूल सकती हूं जूली मुस्कुरा कर बोली। देखो ना सायमन दो साल का भी हो गया, समय कैसे भागता है।

नज़र मत लगाना मेरे बेटे को और दोनों हंसते हुए काम में लग गईं।

नज़र किसी से पूछ कर नहीं लगती। घूमते हुए ना जाने कहां ठहर जाये। जैसे एंडरिया की नज़र सामने मुस्कुराती हुई बेटी की तस्वीर पर टिकी हुई थी।

टर्र.. टर्र.. अरे इतनी रात को कौन हो सकता है। सोनिया! एंडरिया ने लपक के फ़ोन उठाया।

हैलो एंडरिया। मैं मैगी बोल रही हूं। एंडरिया सोनिया से मिलना है तो जल्दी से आयल ऑफ़ वाइट आ जाओ।

कहां है मेरी बच्ची? कैसी है? ख़ुशी से एंडरिया की आवाज़ नहीं निकल रही थी।

एंडरिया प्लीज़ जल्दी आ जाओ कहीं देर ना हो जाये और मैगी ने पता लिखवा दिया।

एंडरिया के हाथ–पैर फूल रहे थे। समझ में नहीं आ रहा था कि ये ख़ुशी है या बेचैनी। रास्ता था कि ख़त्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था। सोनिया, माई बेबी। ममा आ रही है। अब ममा तुम्हें एक पल के लिये भी अपनी नज़रों से दूर नहीं होने देगी।

आज तक एंडरिया ने अकेले इतनी दूर सफ़र नहीं किया था। अपनी बेटी को मनाने के लिये तो वह दुनियां के किसी कोने में भी जा सकती है।

ये आने–जाने का रास्ता कौन जानता है। अचानक दरवाज़ा खोल कर मैगी को अंदर आते देख ब्रैनी चौंक गईं। मैगी तुम तो कल आने वाली थी।

जी ब्रैनी। मैंने सोचा एक दिन पहले आ कर सोनिया को सरपराईज़ दूं।

सरपराईज़ तो मैगी को मिला जब सोनिया के स्थान पर आधी रात को पुलिस ने दरवाज़ा खटखटाया।

ये मिस सोनिया स्मिथ का घर है एक आफ़िसर ने नर्मी से पूछा।

जी। क्या हुआ सोनिया को? कहां है वो?

सोनिया का ऐक्सीडेंट हुआ है आप हमारे साथ चलिये।

मैगी क्या सोच कर आई थी और क्या हो गया। सोनिया इमरजैंसी वार्ड में थी। मैगी को

जूली दिखाई दी जिसके साथ एक पुलिस की महिला थी।

मैगी को देखते ही जूली उसके गले से लिपट गई। ओह मैगी आज सोनिया कितनी ख़ुश थी अपने सायमन के जन्मदिन का सोच कर। मैगी मैं क्यों उसकी बात मान कर पहले पब से बाहर आ गई कार पार्क से कार निकालने। ठंड बहुत थी सोनिया ने कहा।

जूली तुम्हे कार पर से फ़्रॉस्ट हटाने में देर लगेगी। तुम कार स्टार्ट करके सड़क के दूसरी ओर मेरा इन्तज़ार करो मैं काम समाप्त करके आती हूं।

क्या उस तेज़ी से आती हुई कार ने तो उसे ही समाप्त कर दिया। ओह मैगी सड़क पार करते हुए उस तेज़ी से आती कार ने सोनिया को इतनी ज़ोर से टक्कर मारी कि वह हवा में ऊंची उड़ कर बहुत दूर जा कर गिरी। वो कार वाला रुका भी नहीं और मेरी सोनिया... जूली आगे कुछ ना बोल पाई।

नहीं जूली कुछ नहीं होगा हमारी सोनिया को। मैं उसे कुछ नहीं होने दूंगी।

यहां मैगी कौन है एक नर्स बाहर आ कर बोली।

मैं हूं मैगी। चलो हमारे साथ।

सामने जो मैगी ने देखा वो तो वह कभी सपने में भी नहीं सोच सकती थी। सोनिया सिर से पैर तक पट्टियों सें लिपटी हुई थी। मैगी स्वयं को रोक ना सकी।

मैगी लगभग चीख़ ही पड़ी।

मैगी सोनिया की कमज़ोर आवाज़ आई। मैगी सायमन।

सायमन बिल्कुल ठीक है सोनिया तुम उसका फ़िक्र मत करो बस जल्दी से ठीक हो जाओ सोनिया।

मैगी सायमन मामा को दे देना सोनिया आगे ना बोल सकी।

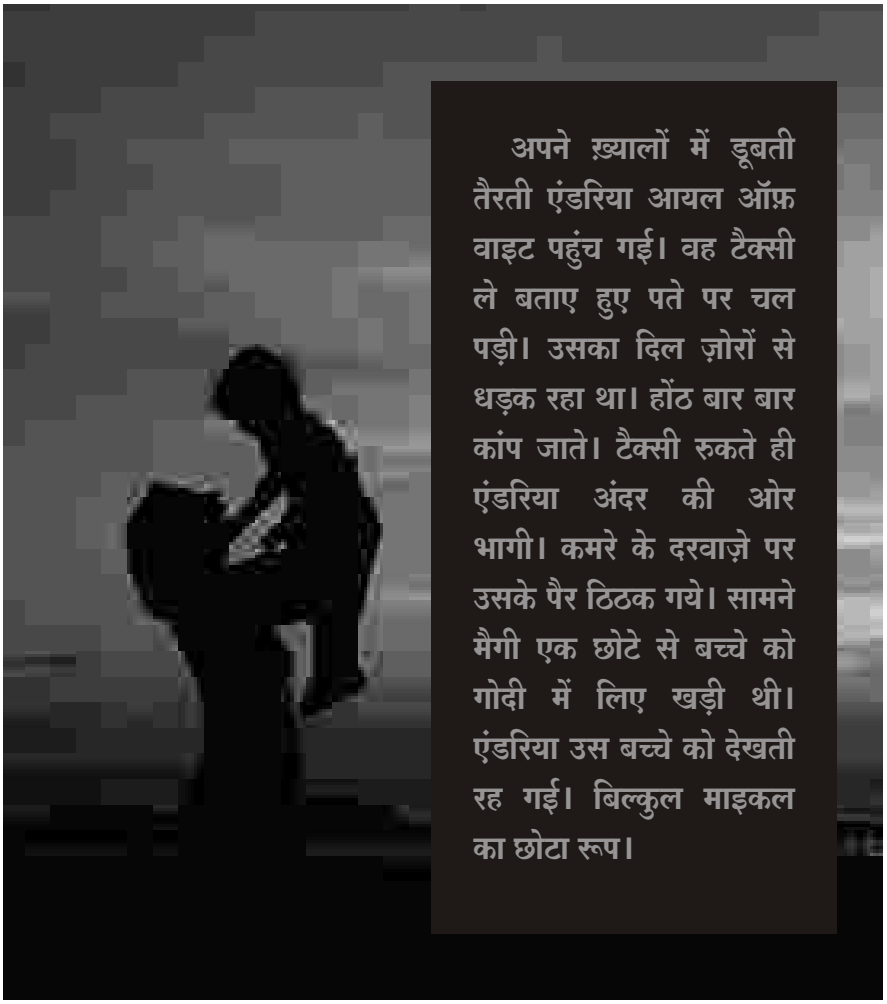

बोल तो मैगी भी ना सकी। उसकी आवाज़ हिचकियों में डूब गई।

अपने ख़्यालों में डूबती तैरती एंडरिया आयल ऑफ़ वाइट पहुंच गई। वह टैक्सी ले बताए हुए पते पर चल पड़ी। उसका दिल ज़ोरों से धड़क रहा था। होंठ बार बार कांप जाते। टैक्सी रुकते ही एंडरिया अंदर की ओर भागी। कमरे के दरवाज़े पर उसके पैर ठिठक गये। सामने मैगी एक छोटे से बच्चे को गोदी में लिए खड़ी थी। एंडरिया उस बच्चे को देखती रह गई। बिल्कुल माइकल का छोटा रूप।

एंडरिया की नज़रें तो अपनी बेटी को ढूंढ रहीं थीं। इतने में उसे एक बहुत कमज़ोर जानी पहचानी आवाज़ आई जिसे सुनने के लिये उसके कान तरस गये थे।

ममा।

सोनिया, एंडरिया की नज़र एकदम कमरे के बीचों-बीच रखे पलंग पर गई। वह तो सोच भी नहीं सकती थी कि उसकी बेटी कभी उसे इस हालत में मिलेगी।

वह जल्दी से पलंग की ओर लपकी जहां पट्टियों में लिपटी सोनिया मशीनों से घिरी हुई थी।

ममा... सायमन।

इतना लम्बा आयल ऑफ़ वाइट पहुंचने का रास्ता तो जल्दी कट गया था परंतु दरवाज़े से पलंग तक का रास्ता तय करने में एंडरिया ने बहुत देर कर दी। ◆

FAMILY DENTIST

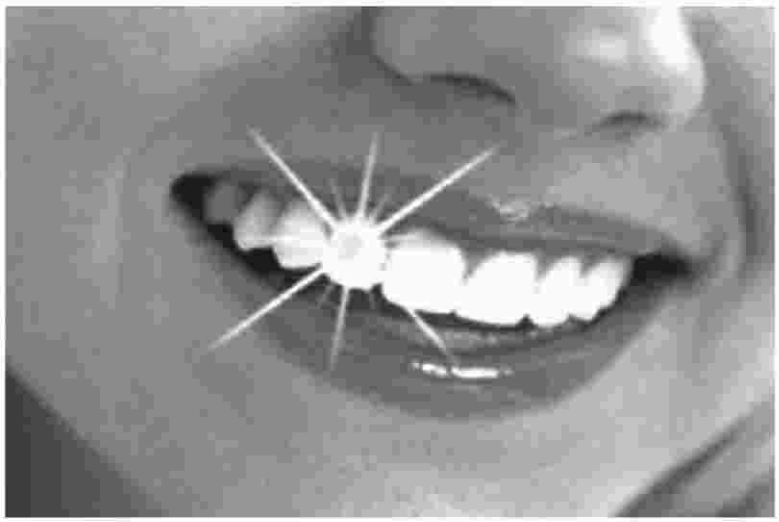

Dr. N.C. Sharma
Dental Surgeon

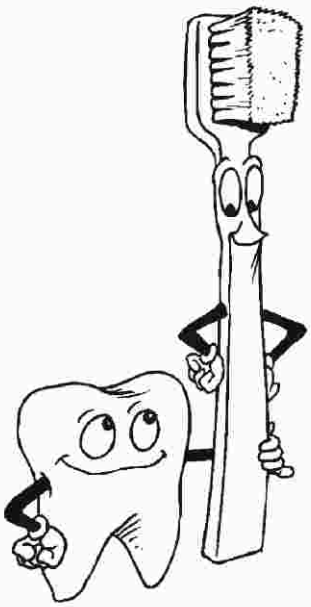

Dr. C. Ram Goyal
Family Dentist

Dr. Narula Jatinder
Family Dentist

Dr. Kiran Arora
Family Dentist

Call us at: 416-222-5718

1100 Sheppard Avenue East, Suite 211, Toronto, Ontario M2K 2W1 Fax: 416-222-9777

छोटा दर्द बड़ा दर्द

✍ शैलजा सक्सेना, कैनेडा

कई बार आदमी अपने ही हाथों कितना लाचार हो जाता है, अपने ही शरीर द्वारा सीमित कर दिया जाता है। उसका मन भी तो जाने कहाँ-कहाँ भागता फिरता है पर पैर जैसे एक भी कदम उठाने से इन्कार कर देते हैं। अब मन और शरीर की लड़ाई रोक कर वह शरीर को मन के अनुकूल बनाने की कोशिश कर रही है तो कुछ तो दर्द उठाना पड़ेगा ही।

वह उसे बहुत प्यार करता था। जहाँ मौका मिलता, सटकर बैठ जाता, गोद में बैठने की जिद करता। उस दिन भी अपना होम वर्क करते-करते उसे जाने क्या जुंग चढ़ी अपना गाल उसके गाल से सटा कर बोला 'तुम मुझे सबसे ज़्यादा प्यार करती हो न?'

वह उसे पुचकार कर अपनी गोद में समाते हुए बोली 'हाँ, सबसे ज़्यादा।'

वह फिर दुविधात्मक नज़रों से देखता हुआ बोला 'पापा से भी ज़्यादा?'

वह एक क्षण को सोच में पड़ गयी, 'क्या कहे?' उसने तो कभी तौलकर नहीं देखा कि वह किसको ज़्यादा प्यार करती है – किसको कम! ये बच्चे और उसका पति ही तो उसके दिलो-दिमाग में हर समय समाए रहते हैं।

वह उसे झकझोरता, डूबते से स्वर में कह उठा 'मैं समझ गया, तुम पापा को ज़्यादा प्यार करती हो।'

वह उसके फूले हुए गालों को चूमते हुए बोली- 'तू तो पगला है!'

वह और क्षुब्ध हो उठा, 'तू... अब तुम मुझे 'तू' कह रही हो? मैंने क्या गलती की है जो मुझे 'तू' बोला?'

वह हैरान हुई, 'गलती की क्या बात? 'तू' तो प्यार में कहते हैं। मैं तुझे बहुत प्यार करती हूँ तो 'तू' कहा।'

'नहीं, नहीं...' वह समझाने और लड़ने दोनों की समवेत मुद्रा में था।'

छोटा-सा बच्चा दर्द के मापदंड की बात कैसे जान गया, कैसे दर्द का हिस्सा कर बाँट रहा है। दर्द के बड़े तूफ़ान से माँ निकले, यह उसे स्वीकार नहीं था इसलिए वह छोटे दर्द रोज़ झेल ले। यही तो वह चाहता है। ऐसा ही तो होता है हम सब के साथ। विकल्प हो तो हम हमेशा छोटा दर्द ही तो चुनते हैं।

'तू' तब कहते हैं जब कोई गंदा हो या लड़ता हो या रिक्शा चलाता हो, मैंने क्या किया जो मुझे 'तू' कहा?'

'यह किसने बताया?' वह चकित थी।

'फिल्मों में यही होता है। जब लड़ते हैं तो 'तू' कहते हैं। मुझे 'तू' नहीं बोलो, तुम बोला करो।'

'अच्छा-अच्छा, तुम कहूँगी पर एक बात बताऊँ, फ़िल्में ग़लत कहती हैं। 'तू' तो बहुत प्यारा शब्द है। याद है वह भजन जो मैंने सुनाया था- कृष्ण जी अपनी मम्मी को भी प्यार से 'तू' कहते थे' वह लडियाने के से मीठे स्वर में बोली।

'तो मैं भी तुमको 'तू' बोलूँ?' उसने हठ से तन कर पूछा।

'नहीं, 'आप' की जगह तो 'तुम' बोलता है, अब 'तू' बोलेगा?' उसने झिड़क सा दिया।

उसे उसकी यही बात अच्छी नहीं लगती। हर बात में बराबरी करता है। भई, तुम छोटे हो तो छोटे बन कर रहो। पर नहीं, पता नहीं इस देश के टी.वी. यह सब सिखाते हैं या स्कूल की पढ़ाई या साथी बच्चे! यहाँ यह बराबरी की बातें ही बच्चों को ज़ुबान चलाना सिखा देती हैं, हम लोग बोल के तो देखते ऐसे भारत में, वो झाड़ पड़ती कस कर कि बराबरी का सब भूत उतर जाता। वो शायद थोड़ी देर और चिढ़ी-सी यही सब सोचती रहती पर उसे कहाँ चैन था।

संधि करने की मुद्रा में बोला, 'ठीक है फिर तुम भी मुझे 'तुम' ही बोलो... प्रौमिस?' वह अपनी तर्क शक्ति पर मुग्ध था।

'ठीक है, ठीक है, बात खत्म करो अब!'

'ठीक है...' वह शांत हो कर उससे और चिपट सा गया। दो मिनट भी शांति से नहीं बीते होंगे कि उसने नए सवाल के साथ अपना सिर उठा कर पूछा, 'तुम आपरेशन क्यों कराना चाहती हो?' वह गंभीर था।

'बेटा, कराना ज़रूरी है, नहीं होता ज़रूरी तो थोड़े ही न कराती।' उसने सामान्य स्वर में कहा।

'पर तुम्हारे पैर में दर्द होगा, तुम्हारे पैर में पट्टी बँधी होगी तुम चल भी नहीं पाओगी, बिस्तर पर लेटे-लेटे परेशान हो जाओगी।' वह कुछ परेशान दिखाई दे रहा था।

'हाँ, वह तो होगा पर तुम जो होगे मेरे साथ।' उसने अपनी घबराहट छुपाने की कोशिश की। पर सच तो यह था कि ऑपरेशन से वह भी घबरा रही थी पर कोई और चारा भी तो नहीं था। कई बार आदमी अपने ही हाथों कितना लाचार हो जाता है, अपने ही शरीर द्वारा सीमित कर दिया जाता है। उसका मन भी तो जाने कहाँ-कहाँ भागता फिरता है पर पैर जैसे एक भी कदम उठाने से इन्कार कर देते हैं। अब मन और शरीर की लड़ाई रोक कर वह शरीर को मन के अनुकूल बनाने की कोशिश कर रही है तो कुछ तो दर्द उठाना पड़ेगा ही। बस यही अपने मन को समझाती है और यही उसे समझाने का प्रयास कर रही है।

'मैं तो होऊँगा पर दर्द तो तुम्हें होगा, फिर तुम्हें ऐनस्थेसिया भी तो 'सूट' नहीं करता। तुम्हें उल्टियाँ होंगी, तुम्हें चक्कर आएंगे, तुम्हारे पैरों में कितना दर्द होगा? नहीं... नहीं, तुम ऑपरेशन मत कराओ...' वह रुआँसा हो कर उसकी गर्दन से लिपट गया। अपना मुँह उसके गाल और कँधे के बीच छुपा कर वह जैसे सब कुछ से बचने की कोशिश करने लगा।

वह मौन उसकी पीठ सहलाने लगी। जानती है कि भय भी शुरू के कुछ क्षण ही डराता है फिर मन उस डर के कंपन का आदी होने लगता है और डरावनी चीज़ें दूसरी बार देखने पर उतनी डरावनी नहीं लगतीं। कुछ क्षणों के बाद वह स्वयं ही कुछ ढीला पड़ा तब उसे अपने से अलग करते हुए वह बोली, 'ऑपरेशन नहीं कराया तो घुटने और पीठ सब में दर्द होने लगेगा, फिर चलने में भी तकलीफ़ होगी... कुछ सालों बाद कराने से तो और मुश्किल होएगी... समझा न?'

उसने 'ना' में सिर हिला दिया। छोटा सा

तो है, जो समझेगा वह अपनी बुद्धि के माप से ही तो समझेगा। हर आदमी का वही हाल है चाहे वह बड़ा हो या छोटा।

वह फिर उससे लिपटने लगा था, 'तुम समझती क्यों नहीं... तुम्हें इतना ढेर सा दर्द एक साथ सहने की ज़रूरत क्या है... जैसे थोड़ा-थोड़ा रोज़ सह रही हो वैसे ही सहती रहो न...' वह उसकी मनुहार सी कर रहा था, अनजाने दर्द से डरा हुआ, वह उसे उसके परिचित, थोड़े दर्द को सहने की बात करता हुआ जैसे वह अपनी उम्र से बहुत बड़ा हो गया था।

वह विस्मित थी। छोटा-सा बच्चा दर्द के मापदंड की बात कैसे जान गया, कैसे दर्द का हिस्सा कर बाँट रहा है। दर्द के बड़े तूफ़ान से माँ निकले, यह उसे स्वीकार नहीं था इसलिए वह छोटे दर्द रोज़ झेल ले। यही तो वह चाहता है। ऐसा ही तो होता है हम सब के साथ। विकल्प हो तो हम हमेशा छोटा दर्द ही तो चुनते हैं। जीवन में कितनी ही बार सही जान कर भी बड़े दर्दों से बचने की कोशिश में रहते हैं और यथास्थिति बनी रहती है। छोटे दर्द अपनी नोंक से हमें कुरेदते रहते हैं और तब तक कुरेदते रहते हैं जब तक की वे नासूर न बन जाएँ और जब वे नासूर बन जाते हैं तब हम उन बड़े दर्दों के जवाब ढूँढते हैं।

वह भी तो कितने ही छोटे दर्दों के साथ रोज़ रहती है। उसमें बड़ा दर्द झेलने की ताकत कहाँ है। सबकी तरह वह भी तो यथास्थितिवादी है। जब तक काम चले तब तक चलाओ, यानि स्थिति बदलने की बजाए उन्हें अनदेखा कर दो। यही करते-करते तो उसने कितने ही छोटे-छोटे दर्द जमा कर लिए हैं। अब उसे इन स्वीकृत छोटे दर्दों के साथ ही रहना होगा चाहे ये दर्द उसे धीरे-धीरे भीतर से खोखला ही क्यों न कर दें।

बड़े दर्द सब ठीक कर देने की संभावना के साथ आते हैं और छोटे दर्द रोज़ का रोना लेकर। स्थिति बदलने की आशा जगाते हैं बड़े दर्द जबकि छोटे दर्द जैसे जीवन का हिस्सा बन कर ही बैठ जाते हैं। इन्हें हटाने का प्रयास भी हम नहीं करते और न इन्हें भूल पाते हैं। जीवन की अनचाही किरकिराहट हैं ये छोटे दर्द। कर्र-कर्र करती, दु:खती हड्डी के रोग जैसे। पर बड़े दर्द का बड़ा महत्त्व है, इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती, इन्हें लेकर जिया नहीं जा सकता, इनका निदान करना ही पड़ता है। इस से भागा भी नहीं जा सकता, भागा जाना चाहिए भी नहीं।

बड़े दर्द सब ठीक कर देने की संभावना के साथ आते हैं और छोटे दर्द रोज़ का रोना लेकर। स्थिति बदलने की आशा जगाते हैं बड़े दर्द जबकि छोटे दर्द जैसे जीवन का हिस्सा बन कर ही बैठ जाते हैं। इन्हें हटाने का प्रयास भी हम नहीं करते और न इन्हें भूल पाते हैं। जीवन की अनचाही किरकिराहट हैं ये छोटे दर्द। कर्र-कर्र करती, दु:खती हड्डी के रोग जैसे। पर बड़े दर्द का बड़ा महत्त्व है, इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती, इन्हें लेकर जिया नहीं जा सकता, इनका निदान करना ही पड़ता है। इस से भागा भी नहीं जा सकता, भागा जाना चाहिए भी नहीं। इस बच्चे को अभी से दर्द का स्वीकार भाव किसने दे दिया। किसने उसे बड़े दर्द से भागने का पाठ पढ़ा दिया। क्या वह उसके अपने मन का ही कायर अंश ही तो नहीं था जो उसके दूध से होकर बच्चे की रगों तक पहुँच गया था? क्या ऐसे ही यथास्थितिवादियों की पीढ़ी बनती है? ये पीढ़ी ही क्या बड़े होकर दर्द की मापतौल करके आसान रास्तों के सौदे नहीं करेगी? वह कुछ घबरा सा गई। अनजाने में वह बच्चे में कौन से संस्कार डाल रही है? वह उसे कायर बनने में मदद नहीं कर सकती, उसे आवश्यक बड़े दर्दों का सामना करना सिखाना ही होगा।

वह प्यार से बोली, 'नहीं बेटा, छोटे दर्द हमेशा तो नहीं सहे जा सकते। कभी- कभी बड़े दर्द ज़रूरी होते हैं, समझे? और फिर थोड़े ही दिनों की तो बात है। मैं तुम्हारे साथ फिर से खेल पाऊँगी, फिर हम सैर को जाया करेंगे, दूर तक...'

वह उसका माथा सहलाने लगी थी। उसकी अपनी आँखों में इस दर्द के प्रति आश्वस्ति का भाव जाग रहा था। बच्चे ने माँ के चेहरे पर कुछ नया, रुपहला, जागता देखा।

वह मुग्ध सा देखता रहा। कुछ क्षण, फिर बोला, 'सच कहती हो। खेल सकोगी मेरे साथ? घूमने जाओगी दूर तक?'

'हाँ सच, एकदम सच।' वह मुस्कुरा दी।

'पर तुम्हारा दर्द?' नयी पीढ़ी का नया बच्चा, एकदम कैसे संतुष्ट हो जाए?

'अब दर्द को छोड़ो, जब होगा तब सह लेंगे। उससे घबरा कर जीना थोड़े ही ना छोड़ देंगे।' वह हँस कर बोली।

अपनी आयु से ज़्यादा बड़ी बातें करने वाला वह भी कभी-कभी उसकी बात नहीं समझ पाता। कुछ हैरानी से वह उसका मुँह ताकता सा बैठा रह गया।

वह उसे गुदगुदाते हुए बोली, 'समझे बुद्धूमल!'

'अब मुझे बुद्धू कह रही हो, देखो तो क्या-क्या कहती रहती हो मुझे जबकि मैं कितना अच्छा हूँ।' वह उससे फिर लिपटने लगा था।

'अच्छा कितना अच्छा है देखूँ तो...' कह कर उसने भी उसे कस कर चिपटा लिया और बहुत दिनों बाद वह खुल कर मुस्कुरा दी। ◆

Learn Hindi!

सु+भाषा SU+BHASHA KIDS HINDI

Magnetic board letter set

INTRODUCTORY SET / LEVEL 1

Includes:

* 8.5" x 11" metal board
* 49 Devanagari magnatic letters
* Sound chart on back of board

For ages 4 and up

KIDS HINDI.COM
SUBHASHA.COM
spanchii@yahoo.com
Ph. 1-508-872-0012

❄ ❄ ❄ ❄

BMS graphics

Choose from a variety of
Birthday - Mundan - Janoi - Anniversary
Indian & western

Wedding Invitations

Choose your own language

शादी, मुंडन,सालगिरह, जनेऊ कोई भी हो शुभ संस्कार।
हर प्रकार के निमंत्रण के लिए हमारी सेवायें हैं सदा तैय्यार।।

21 Bradstone Square, Scarborough, (Toronto) Ontario M1B 1W1
Tel: 416.803.7949 416.292.7959 Fax: 416.292.7969
E-mail: bmsgraphics@rogers.com

उत्तरायण

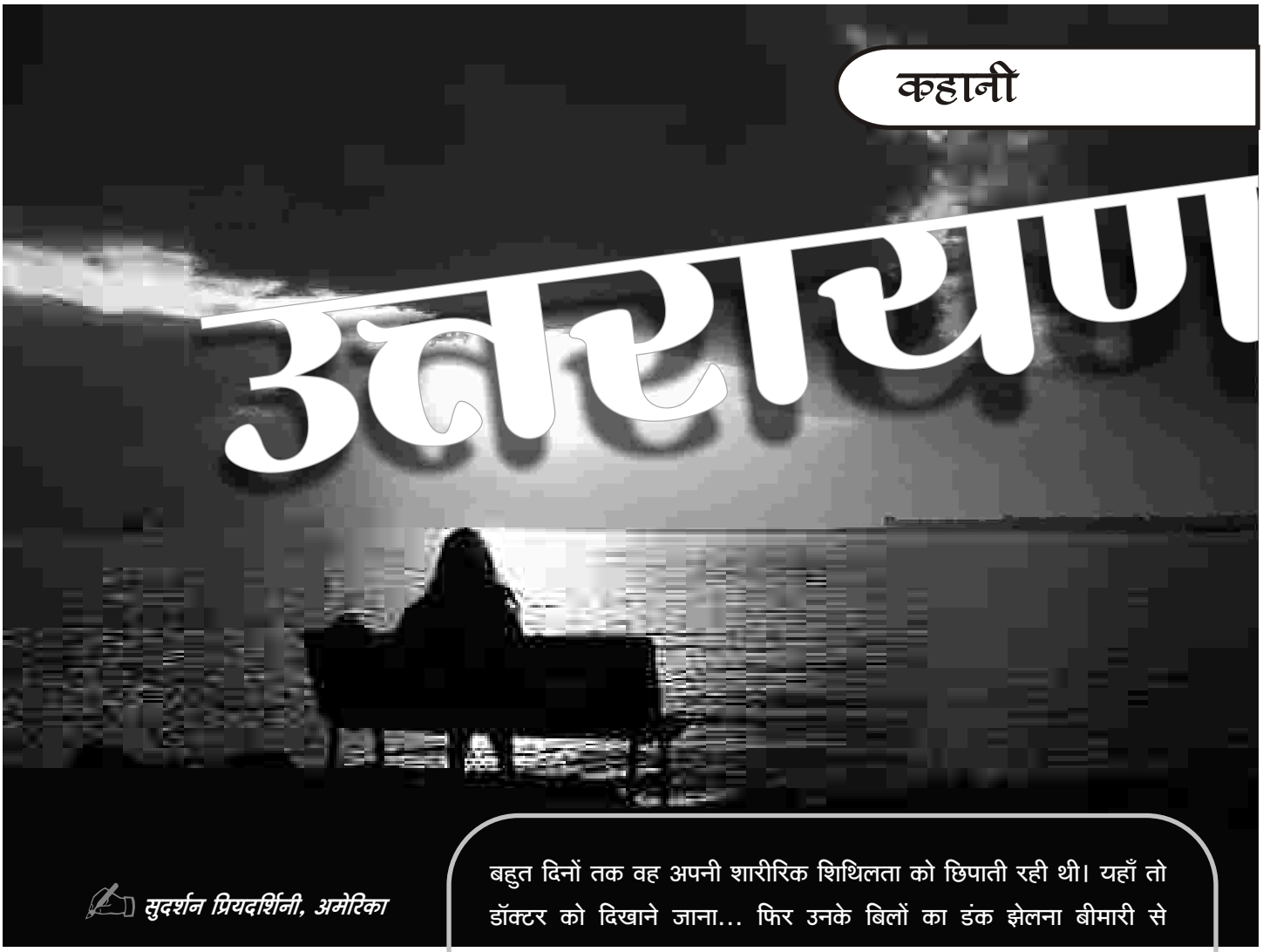

✍ सुदर्शन प्रियदर्शिनी, अमेरिका

बहुत दिनों तक वह अपनी शारीरिक शिथिलता को छिपाती रही थी। यहाँ तो डॉक्टर को दिखाने जाना... फिर उनके बिलों का डंक झेलना बीमारी से ज्यादा दुखदायी था। इसलिए, वह अंदर ही अंदर झेलती रही है। अन्दर कहीं एक डर भी बैठ गया था कि कहीं कोई बीमारी निकाल आई तो... इसलिए वह अपने आप रोज़ कभी मल्टी विटामिन के कैप्सूल, तो कभी टायनोल फाँकती रहती। इसी तरह वह हर दिन अपनी दिनचार्य पूरी कर लेती।

नीमा नहीं जानती कि धीरे-धीरे वह कैसे टूटी है या टूटती ही जा रही है। स्थितियों से लड़ने या उनसे समझौता कर लेना ले-दे के सभी के हिस्से में कमोबेश आता ही है, फिर वह क्यों हारती चली जा रही है। क्या लोग उसकी तरह टूटकर अपने आपको रोगी बना लेते है? यह तो हारना हुआ। स्थिति के समक्ष स्वयं को कुत्ते की बोटी बना कर डाल देने जैसा...

वह नहीं चाहती कि इस तरह अपने आपको निहत्थी और कमज़ोर महसूस करे, किन्तु उसकी दुर्बल काया झोटे से पकड़कर उसे बार-बार झुका देती है।

वह समझ गई है कि प्यार एक फलसफा है, जो ज़िन्दगी का क्रूर झोंका लगते ही धराशायी हो जाता है। धूप और छाँव की तरह घेर कर खड़े होने वाले प्यार को हम शाश्वत मान बैठते हैं। किन्तु जब भ्रम टूटता है, तो टूटता ही चला जाता है... तब उसकी किरचे सँभालें नहीं संभलती।

उसने अपने-आप में स्वीकार लिया है कि वह अब रेगिस्तान में झीलों के सपने नहीं देखेगी। किन्तु, यह स्वीकार तब आया है, जब उसके शरीर की एक-एक झिल्ली छलनी हुई जा रही है।

वह कुर्सी पर बैठी-बैठी दीवार पर लगे कैलेंडर को देख रही है। इस कैलेंडर का एक-एक पन्ना एक-एक महीने को ही ढो पाता है और हर महीने के बाद वह पन्ना निकाल दिया जाता है। बीता हुआ कल... औरत भी शायद कैलेंडर की एक पुरानी तारीख़ ही है... पुरानी हो गयी तो फाड़कर फ़ेंक दी। उसके अपने

सपने उसकी मुट्ठी में बंद हुए रह जाते हैं।

नीमा सोचती है कि ज़िंदगी को इतने पैने और बेरहम ढंग से नहीं आँकना चाहिए। उठे, अपने कैप्सूल ले ले, ताकि थोड़ा ठीक महसूस करे और घर के कुछ काम–काज निपट सकें।

जब से उसका शरीर अनेक शल्य–क्रियाओं से गुज़रा है, उसका शरीर अपना नहीं रहा। कहीं अनाथ शिराओं का पुष्प हो गया है। रोज़–रोज़ दवाइयाँ, हिदायतें और दूसरों की आँखों में उगी वितृष्णा उसे झेलनी पड़ती है। धीरे–धीरे अलगाव बढ़ते जा रहे हैं।

अपने देश में होती, तो शायद नौकर–चाकरों के सहारे यातना कम हो जाती। घर संभला रहता। किसी की आँखों का तिरस्कार नहीं झेलना पड़ता। नौकर को हिदायतें देती और काम हो जाता। आज उसे याद आता है कि वहाँ कैसे सुबह–सुबह सारे काम मुस्तैदी से हो जाते थे। तुलसी आती और सुबह–सुबह किचन सँभाल लेती। फटाफट बच्चों का नाश्ता तैयार होता। नीमा बोलती जाती और काम होता जाता। बिशना साड़ी प्रेस कर देता और हेमेन्द्र भी भाग–भागकर तैयार होने में उसकी और बच्चों को स्कूल बस तक पहुँचाने में मदद करते। साथ ही, दोपहर के खाने की लिस्ट और शाम की चाय के साथ क्या बनेगा, तय होता चलता। तुलसी बार–बार दुहरा कर उन चीज़ों को पक्का करती रहती उसी बीच बच्चे और हेमेन्द्र निकल जाते। थोड़ी देर में वह भी अपना सैंडविच पैक करके भाग लेती। सब कुछ तुलसी के हवाले करके।

जबसे तुलसी आई थी, उसका काम बहुत आसान हो गया था। तुलसी जिस तरह बच्चों को सँभालती, घर को सँवार कर रखती उससे पहले के आठ–आठ नौकर भी नहीं कर पाए थे। उन अलग–अलग समय के नौकरों को याद करके वह आज भी उबल पड़ती है, किन्तु उन की नाकामियों को अपनी विवशताओं के कारण झेलना पड़ता था।

आज सोचती है कि जैसे–तैसे घर चलता रहता था, नौकरी चलती रहती थी, तो ज़िंदगी आगे ठिलती रहती थी। आपसी तनाव की कहीं जगह ही नहीं थी।

शाम को घर पहुँचती तो बच्चे किलक कर लिपट जाते। तुलसी फटाफट देखते ही चाय का पानी चढ़ा देती। बहादुर तराशे हुए गुलाब सजाकर मेज पर लगा देता। सलाम करके फिर पेड़–पौधे को तराशने में लग जाता। कभी–कभी लगता था, मुट्ठी में बंद सारे सपने खुलकर पूरे हो रहे थे।

यहाँ ऊँची दुकान फीका पकवान। यहाँ विदेश में लोग सपन्नता और वैभव बटोरने आते हैं, लेकिन हिस्से में आती है तिक्तता, अकेलापन और एक बेनाम रिक्तता, जो धीरे–धीरे दीमक की तरह सब कुछ चाट जाती है। रिश्ते–नाते–प्यार–सम्बन्ध – सबका सब।

बहुत दिनों तक वह अपनी शारीरिक शिथिलता को छिपाती रही थी। यहाँ तो डॉक्टर को दिखाने जाना... फिर उनके बिलों का डंक झेलना बीमारी से ज्यादा दुखदायी था। इसलिए, वह अंदर ही अंदर झेलती रही है। अन्दर कहीं एक डर भी बैठ गया था कि कहीं कोई बीमारी निकाल आई तो... इसलिए वह अपने आप रोज़ कभी मल्टी विटामिन के कैप्सूल, तो कभी टायनोल फाँकती रहती। इसी तरह वह हर दिन अपनी दिनचार्य पूरी कर लेती। एक डॉक्टर मित्र ने बताया था कि उसका स्नायु–मंडल बहुत कमजोर हो गया है और उसे फ्लारिन के कैप्सूल भी खाने चाहिए और अब उसने उनको भी अपनी दिनचर्या में शामिल कर लिया है।

आज बैठे–बैठे उसको चक्कर आ रहा है। वह उठने की कोशिश में लड़खड़ा कर अपनी खाट तक पहुँच जाती है। क्या हो गया है उसे... यह नयी आफत कहाँ से आ टपकी। शायद इसलिए कि कल उसने सारे कैप्सूल और टायोनल इकट्टे ही फाँक लिए थे। यही नहीं, रात दूध पीना भी भूल गयी थी। उन कैप्सूल की गर्मी चढ़ गयी है शायद... और चक्कर आ रहा है। वह रसोई में जाकर ठंडा और फीका दूध गटक आती है। लगा कि हलक में तरावट आ गयी है। बाथरूम के शीशे में देखा, तो थोड़ी आश्वस्त हुई। तभी उसे भीतर ही भीतर कुछ घुमड़ता महसूस हुआ और उसके साथ ही ढेर सारा वमन... वह हल्की हो गयी। स्वयं को स्वस्थ मानने और महसूस करने का दिलासा देने लगी। वापिस कुर्सी पर आकर बैठ गयी

सामने शीशे से हटे हुए परदे के कारण बाहर की सुनसान सड़क दिखती है। कभी एकाध कार इस दोपहरी के सन्नाटे को झटक जाती है, तो लगता है कि कहीं स्पंदन अभी बाकी है।

सामने पेड़ की हरियाली में छिपी–दुबकी गिलहरियाँ आपस में अठखेलियाँ करती टहनियों के साथ लटक–लटक कर ऊपर–नीचे उछल रही है। हवा भी ठहरी– ठहरी दोपहर की गोद में ऊँघ रही है। बाहर सब कुछ वैसा ही चलता रहता है, चाहे अन्दर–हर क्षण कुछ दरकता रहे। प्रकृति नियम से अपनी चिरंतनता में जीती रहती है।

उसे अपने अंदर बहुत कमज़ोरी महसूस हो रही है। शायद वमन से ऐसा हुआ है। उठकर पैतृक–परंपरा से चले आते घर में बनाये चूर्ण को चाटती है। मन हरा–हरा लगने लगता है। वह अपने आपको समझाती है कि वह पहले से ठीक है। उठकर घर का काम सँभाल लेगी तो और अच्छा महसूस करने लगेगी, अन्यथा आते ही हेमेन्द्र की आँखों में तिरस्कार और उपेक्षा को झेलना पड़ेगा। कहने को कुछ भी नहीं कहेंगे, लेकिन कुछ बुदबुदाते हुए रसोई घर में घुसेंगे और देखेंगे कि क्या हुआ है और क्या नहीं... अगर रोटी आधी बनी पड़ी होगी, तो खुश हो जायेंगे और आत्मीयता ओढ़े कहेगें – तुम्हारी तबियत ठीक नहीं थी, तो फिर क्यों किया यह सब। मैं आता, तो कुछ न कुछ कर लेता... वह चुपचाप उनकी बात सुनती रहेगी और कोई जवाब नहीं देगी... दोनों इन बातों के पीछे छिपे हुए संकेतों को समझते एक–दूसरे से आँख चुराते रहेंगे। वह धीरे से उठेगी

अभी हाल में ही एक कहानी पढ़ी थी। पति-पत्नी से बेहद प्यार करता था। आस-पास वाले भी उनके प्यार से मन ही मन जलते थे। लेकिन, एक दिन पत्नी को पक्षाघात हो गया। पति धीरे-धीरे बदलने लगा। विरक्त रहने लगा। एक दिन पत्नी की वाणी भी मूक हो जाती है। उसकी लड़की, एक दिन देखती है कि पिता माँ की छाती को कूट-कूट कर कह रहे हैं - कमज़ात... कब मरेगी... मेरी ज़िन्दगी जोखिम बना दी है तूने...

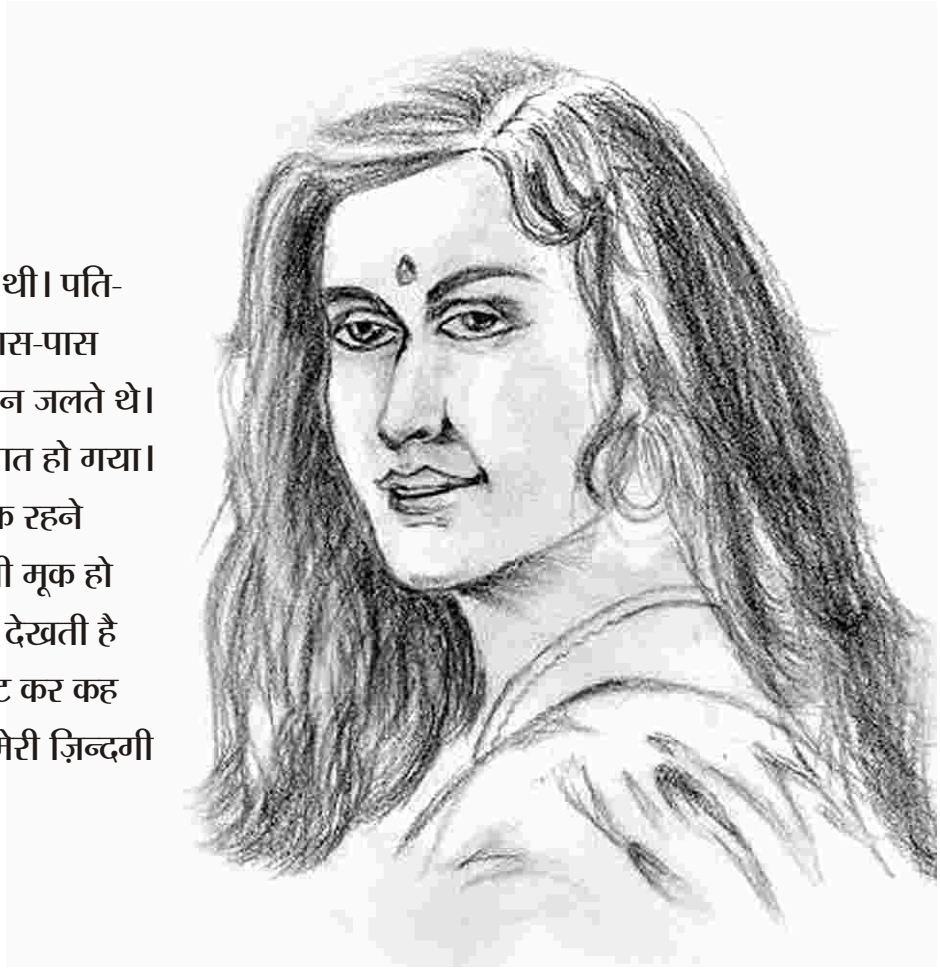

और बाथरूम में जाकर आँसू पोंछ आएगी और शीशे से बतियाएगी... अपने से ही सौ–सौ प्रश्न करेगी... क्यों वह इतनी भावुक है... क्यों इतनी संजीदा... वह क्यों हर समय व्यक्ति के दोहरेपन को ढूँढती रहती है। एक मौजूदा व्यक्ति और उसी के उस पार का दूसरा व्यक्ति।

कई बार वह सोचती है कि काश! वह स्वयं इस दोहरेपन को ओढ़ पाती। जब हेमेन्द्र घर आए, तो तिरिया–चरित्तर ओढ़े और पड़ी रहे... ब्रह्म भी इस ओढ़े हुए स्त्री–चरित्र को नहीं समझ सकते, फिर उसके मामले में तो कोई झूठ भी नहीं है। एक बार स्वयं हेमेन्द्र ने भी कहा था तुम लेटी रहो तो हमें भी मालूम रहे कि तुम बीमार हो। वह मन ही मन इस मरोड़ को दबा गयी थी और नहीं कह सकी थी कि जब कोई इस बात को समझेगा तो उसे बीमारी में उठने की जरूरत ही क्यों पड़ेगी। एक बार उसे भरपूर आराम मिल जाये तो शायद रोज़–रोज़ बिस्तर पर पड़े रहने की नौबत ही न आये।

चूर्ण से उसका मन स्वस्थ हो गया है। मुँह में पुदीने का सा जायका घुल गया है। वह महसूस कर रही है कि अब वह उठ सकती है उसने धीरे–धीरे हल्की कराहटों – जो कभी उसके पेट से, तो कभी पीठ से उठती है – के साथ रसोई का काम सँभाल लिया है। सिंक में पड़े बर्तनों की धुलाई, रसोई घर के फर्श पर जमी चिटक, यहाँ–वहाँ शैल्फ्स पर बिखरे बर्तन, दियासलाई, चायपत्ती का डब्बा, नमक–मिर्च के खुले कटोरदान – सभी को उसका स्थान दे दिया है। सब अपनी जगह पहुँचकर जैसे मुस्कुरा रहे हैं। रसोई खिल–खिल पड़ रही है।

गैस पर चावल, दाल, सब्जी भी चढ़ गयी है और अपनी–अपनी आवाज़ों में चौकड़ियाँ भर रही हैं। आज बच्चे भी खुश हो जायेंगे...

कहीं एक काल्पनिक सुख की सिरहन उस के स्यानु–मंडल में दौड़ गयी है। जब बच्चे गले में बाँहें डालते और हेमेन्द्र खाने की तारीफ करते हैं तो वह इस ख़ुशी को झेल नहीं पाती। पर उनके औपचारिक कृतज्ञ चेहरे कहीं उसकी आँखों में बरबस आँसू ला देते हैं।

जब कभी वह सबेरे उठ कर सबके लिए ठीक नाश्ता नहीं बना पाती या खाने का प्रबंध नहीं कर पाती और एक औपचारिक डबल रोटी–अंडे की भुर्जी परोसती है, तो हेमेन्द्र से पहले बड़ा बेटा बोल पड़ता – माँ, यह क्या... वही रोज़–रोज़ अंडा–डबल रोटी! माँ वह शिव है न मेरा दोस्त मैंने उसके घर एक दिन देखा – सब लोग मेज़ पर खाना खा रहे थे। क्या मेज़ सजी थी माँ! दो–तीन सब्जियां, दाल, चटनी, पापड़, अचार और फलों से भरी मेज़

के बीचों–बीच रखी टोकरी देखकर मज़ा आ गया, माँ...

ये बातें, उसे अन्दर तक चीरकर रख देतीं और कहीं गहरी कचोट और ग्लानि से वह भरभर उठती। क्यों नहीं, वह कर पाती यह सब अपने बच्चों के लिए, अपने हेमेन्द्र के लिए... उसे हर दिन नाकामियों के तराज़ू में क्यों तौला जा रहा है। उसे लगता कि हर कोई आते–जाते उसकी खिल्ली उड़ा रहा है। उसकी इस विद्रूप स्थिति पर हँस रहा है।

उसके अन्दर की उठा–पटक बढ़ती जाती। बेचैनी गले की फाँस बनकर उसका गला घोंटने लगती। वह चाहती ऐसे में हेमेन्द्र उसकी ढाल बने। बच्चे तो नादान हैं। पर वो नादान नहीं है। वह तो जानता है कि आज तलक उसने घर पर कैसे अपनी जान लुटाई है। नौकरी करके भी बच्चे की, हेमेन्द्र की जी जान से सेवा की है। जब कभी वह हेमेन्द्र से ज़रा–सा पहले पहुँचती तो शाम की चाय के साथ शौक से समौसे–कचौरियां, चिप्स–चटनियाँ और न जाने क्या–क्या बना डालती। चटकारे ले–ले कर और उसकी उँगलियाँ चूम–चूमकर खाता हेमेन्द्र। आज कैसे सब कुछ भूल गया वह। आज उसकी आंखों में एक नकार है, एक व्यंग है। जैसे यह सब वह जानबूझ कर कर रही है या स्थिति को तूल दे रही है।

वह अपने आप में हर दिन छोटी होती जा रही है उसकी सल्तनत ढह रही है। उसका जी चाहता है कि बेटे से कहे कि वह अपने बाप से कहे, दूसरी माँ ले आए तुम्हारे लिए। नयी–नकोर... जो नए व्यंजनों से आवभगत भी करे और सारी चाकरियों के साथ तुम्हारे बाप के दफ्तर जाते वक्त रुमाल तक हाथ में थमाए...

कैसी दुविधा के कगार पर खड़ी है वह। नारी घर–गृहस्थी के साथ आज बाहर का मोर्चा भी संभाले। कैसी विडम्बना है। एक ही व्यक्ति से इतनी सारी अपेक्षाएं।

वह चुपचाप मेज़ पर बैठी चम्मचों की आवाज़ को सुनती रहती और हेमेन्द्र चुपचाप खाना खाकर टी.वी. के सामने जा बैठता। उसके अन्दर पहाड़ भुरभुरा जाते न जाने कितना कुछ टूट जाता उन क्षणों में।

वह इंतज़ार करती रहती कि हेमेन्द्र पूछेगें – आज कैसी रही तुम्हारी तबियत या अब कैसी हो? वह फिर उसी तरह धीरे–धीरे मेज़ पर से बर्तन उठाती, जूठी प्लेटें सिंक में डालती, सलाद की प्लेट का रस उठाते–उठाते मेज़ पर बिखर जाता, तो भागी–भागी तौलिया लेकर उसे सोखती और हाँफ–हाँफ जाती। टी.वी. की आवाज़ तले सब कुछ दब जाता।

बड़ी–बड़ी इमारतें ढह जाती हैं, उनके नीचे दबी हुई लाशों की कराह किसे सुनाई देती है।

रात भर करवटें बदलती रहे, पीड़ा से कराहती रहे, सुबह किसी की दिनचर्या में अंतर नहीं आ सकता। उसे एक कप चाय मयस्सर नहीं हो सकता, जिसे पीकर वह उठने लायक हो सके और बच्चों को ढंग से स्कूल भेज सके। कभी–कभी उसे लगता है कि दोनों बच्चे और पति उसके लिए युद्ध के अलग–अलग मोर्चे हैं, जिन्हें जैसे–तैसे अपने लंगड़ाते शरीर से भी झेलना है। पार करना है या जीतना है। अन्यथा इन सब में वह पुराने केलेंडर की एक बीती हुई तारीख हो जाएगी।

एक बार उसने किसी कवयित्री की एक कविता पढ़ी थी, जिसमें उसने अपने बच्चों और पति को युद्ध के मोर्चे जैसा ही कुछ कहा था, जिसे हर मोर्चे को पार कर एक उपलब्धि का अहसास होता था। उस समय वह कविता और वह कवयित्री उसे कितनी बुरी लगी थी और कितनी वितृष्णा हुई थी उस कवयित्री से, लेकिन कितना सच था, कितना नंगा सच!

हेमेन्द्र और उसके बीच नर–नारी के सम्बन्धों को लेकर बखूबी बहस होती थी। आये दिन समाचार–पत्रों में आने वाली घातक आत्महत्याएँ, पति और सास–ससुर द्वारा दी हुई यातनाएँ उसे उदास कर देती थीं। हेमेन्द्र भी ऐसे परिवार वालों को जी भर कर कोसते थे और एक आश्वस्त भाव से कहते – 'चलो, तुम किस्मत वाली हो जो देवता जैसा पति मिला है और साधु–संतों सरीखे सास–ससुर, जबकि कहकर वह चुप हो जाते थे, जबकि अंदर ही अन्दर वह लहू–लुहान हो जाती थी। वह उसके पीछे छिपे अर्थों को बखूबी जानती थी। उसके प्रेम–विवाह के कारण माता–पिता की तरफ से उसे भरपूर नकारात्मक भाव झेलना पड़ा था। यों उनकी कोर्टशिप इतनी लम्बी खिंची थी कि सबकी इच्छा शामिल हो सके और हुई भी। यहाँ तक कि सालों– साल सगे सम्बन्धियों को इस रहस्य की हवा तक नहीं लगी थी। उसने माँ–बाप की इज्जत पर ज़रा भी आँच नहीं आने दी थी। फिर भी, कहीं गहरे में कोई वितृष्णा थी, कोई किरच थी जो दोनों परिवारों के बीच ऐचंक–सी तनी रहती थी।

कभी–कभी लगता कि यह नया रिश्ता उन सारे पुराने – अपने उम्र भर के –नातों को

आये दिन समाचार-पत्रों में आने वाली घातक आत्महत्याएँ, पति और सास-ससुर द्वारा दी हुई यातनाएँ उसे उदास कर देती थीं। हेमेन्द्र भी ऐसे परिवार वालों को जी भर कर कोसते थे और एक आश्वस्त भाव से कहते - 'चलो, तुम किस्मत वाली हो जो देवता जैसा पति मिला है और साधु-संतों सरीखे सास-ससुर, जबकि कहकर वह चुप हो जाते थे, जबकि अंदर ही अन्दर वह लहू-लुहान हो जाती थी।

एक ही निवाले में निगल गया है। बहुत प्रयत्नों के बावजूद कभी सामंजस्य नहीं बिठा पायी थी वह। कई बार शब्दों की पैनी तीरंदाजी का शिकार होकर अपने घर से रुआंसी होकर लौटी थी वह।

आज तक छलनी कर देने वाली भाषा की सलीबों पर चढ़ती आई है और अब तो यह सिलसिला दुधारा हो गया है। एक ओर हेमेन्द्र और बच्चे, दूसरी ओर उसका गिरता स्वास्थ और फिर अपनों से न टूटने वाला तनाव।

वह जानती है कि यह सारे तनाव ही उसकी इस दशा के उत्तरदायी हैं और यही उसके अंत के भी उत्तरदायी होंगे। फिर भी वह दोष स्वयं को ही देती आई है। आँखों में आँखें डालकर उसने स्थितियों को नहीं झेला है, हथियार डालकर, हार-हारकर मरना सीखा है।

वह सुबह उठती है, लगता है कि हर दिन उसे एक महाभारत अपने कमज़ोर कन्धों पर ढोना है और भीष्म बनकर शर-शैया की चुभन को चुपचाप झेलना है। उनकी इच्छानुसार सूर्य तो आया ही छः महीने बाद उत्तररायण में, लेकिन इस स्थितियों का सूर्य उत्तरायण में शायद कभी नहीं आएगा। उसे इस शर-शैया से कभी मुक्ति नहीं मिलेगी।

सामने की खिड़की का पर्दा हवा से लहराकर नीमा के मुँह पर फहरा गया है। प्रकृति अपने बौर से उसे बहलाना चाहती है। खुमानी और आड़ू के पेड़ों की कोपलों की खुशबू उसके नथुनों में महकने लगी है। अन्दर के फैले रेगिस्तान में भी कहीं प्रकृति स्मित बनकर होंठों पर खिलने लगी है?।

आज तक उसकी बीमारी का कोई नामकरण नहीं हुआ क्योंकि आज तक कोई ढंग का चैकअप हुआ ही नहीं, मोटे-मोटे बिलों के डर से। कभी बुखार, कभी थकावट, कभी सर में दर्द, हाथ-पाँव का सो जाना, उठने की शक्ति न रहना -- ये सब बीमारियाँ नामकरण की मोहताज नहीं है। इसे एक तरह से तिल-तिल कर मिटना कह सकते हैं। इन बेनाम लक्षणों की ओर क्यों कोई ध्यान दे।

रिश्ते-नाते शरीर से होते हैं, सुविधाओं के होते हैं। मन के रिश्ते होते ही कहाँ है, जो शरीर के अशक्त होने पर भी जुड़े रहें। घरवालों की सदाशयता तो उस के उपयोग के साथ ही चल सकती है न!

अभी हाल में ही एक कहानी पढ़ी थी। पति-पत्नी से बेहद प्यार करता था। आस-पास वाले भी उनके प्यार से मन ही मन जलते थे। लेकिन, एक दिन पत्नी को पक्षाघात हो गया। पति धीरे-धीरे बदलने लगा। विरक्त रहने लगा। एक दिन पत्नी की वाणी भी मूक हो जाती है। उसकी लड़की, एक दिन देखती है कि पिता माँ की छाती को कूट-कूट कर कह रहे हैं - कमज़ात... कब मरेगी... मेरी ज़िन्दगी जोखिम बना दी है तूने...

दूसरे ही दिन पत्नी मर जाती है। कहानी पढ़कर मन में समुद्र से भी वृहत बड़वानल धधक उठा था। वह दो दिन तक रात-रात भर अपने आप में घुटी और आँसू पीती रही थी। यही नहीं उसे अपने बच्चे वाल्मीकि के बच्चे दिखने लगे थे, जिन्होंने कह दिया था कि हम तुम्हारे पाप के भागीदार क्यों बने! तुमने हमें पैदा किया है, तुम्हारा फ़र्ज़ हैं हमे पालना।

आते-जाते परिचितों में जब भी वह अपने अस्वस्थ रहने की बात करती, तो कई लोग संजीदा होकर सलाह देते-फलाँ डॉक्टर को दिखाइए... फीस से न डरिये... जान है तो जहान है, भाभी जी... आप का तो जैसे रंग ही बेरंग हो गया है...

उसे याद है कि हेमेन्द्र के सिर में मामूली दर्द से भी वह घबरा जाती थी और छुट्टी लेकर बैठ जाती थी। हेमेन्द्र पर तन-मन न्यौछावर कर देती। कभी- कभार कोई बच्चा बीमार होता, तो उसके पावँ देहरी लाँघने से जैसे इन्कार कर देते।

वह कब से बीमार है। बीच-बीच में ऐसी भी स्थिति आई है कि खाट से हिल तक नहीं सकी। हेमेन्द्र के ऑफिस जाने में कोई व्यतिक्रम नहीं आया। यही नहीं, दफ्तर जाते समय भी वही ढंग, वही अपेक्षाएं सारी कायनात की। वह मन की सलीब पर टाँग-टाँग कर देखती है, लेकिन सभी ने अपनी-अपनी संगीनों से दागने का ही काम किया है। आज स्थिति यहाँ तक पहुँच गई है कि वह स्वयं अपनी वैसाखी बनने योग्य नहीं रही।

अब सिर-दर्द थोड़ा कम है। परसों किसी मित्र के बहुत आग्रह करने पर हेमेन्द्र एक स्पेलिस्ट के पास ले गए थे। उसने कितने ही टेस्ट किए। ब्लड, ई.जी.सी., अल्ट्रा साउंड, थाईराइड और न जाने क्या-क्या!

आज डॉक्टर के पास फिर से जाना है, क्योंकि टेस्ट की रिपोर्ट्स आने वाली है। नीमा खुश है कि अब रोज़-रोज़ उसे किसी की आँखों का नकार या उपेक्षा नहीं झेलनी पड़ेगी। बीमारी का नाम होगा और उसी के अनुरूप उसका इलाज।

वह मन ही मन प्रार्थना करती है कि हे ईश्वर, नारी को जन्म देते हुए उसे लौहे जैसी शक्ति और सुन्दरता का वरदान भी दिया कर। नहीं तो वह समिधा बनकर इस महाकुंड में धुआँ--धुआँ होती रहेगी।

आज उसकी बीमारी का नामकरण हो गया है। अब से रोज़ गाहे-बगाहे मल्टी विटामिन, कैल्शियम, फ्लोरिन, फ़ास्फोरिस आदि नहीं लेने हैं।

डॉ. ने हेमेन्द्र के कान में फुसफुसाकर कहा है - आपने बहुत देर कर दी। कैंसर पेट में अपनी जड़ें पूरी तरह फैला चुका है। अंतिम स्टेज है। केवल इन्हें खुश रखें, तनाव कम से कम...

नीमा ने सुन लिया है। उसकी गहरी सांस में कहीं एक सुकून घुल गया है। उसका सूर्य भी उत्तरायण में आ गया है। ◆

आप जलूल आना चोनू !

समीर लाल 'समीर', कैनेडा

ज़िन्दगी का सफ़र भी कितना अजीब है। रोज़ कुछ नया देखने या सुनने को मिल जाता है और रोज़ कुछ नया सीखने। पहले भी इसी पहलू पर कुछ सीखा था और आज नया सीखा।

पता चला कि दफ्तर की महिला सहकर्मी का पति गुजर गया। बहुत अफसोस हुआ। गये उसकी डेस्क तक। खाली उदास डेस्क देखकर मन खराब सा हो गया। यहीं तो वो चहकती हुई हमेशा बैठे रहती थी। यादों का भी खूब है, तुरन्त चली आती हैं जाने क्या-क्या साथ पोटली में लादे। उसकी खनखनाती हँसी ही लगी गूँजने कानों में बेवक्त। आसपास की डेस्कों पर उसकी अन्य करीबी सहकर्मिणियाँ अब भी पूरे जोश- खरोश के साथ सजी बजी बैठी थीं। न जाने क्या खुसुर-पुसुर कर रहीं थीं। लड़कियों की बात सुनना हमारे यहाँ बुरा लगाते हैं, इसलिए बिना सुने चले आये अपनी जगह पर। हालांकि मन तो बहुत था कि देखें, क्या बात कर रही हैं?

> हद है यार, क्या भिजवाये तुम्हें कि:
>
> *भेज रही हूँ नेह निमंत्रण,*
> *प्रियवर तुम्हें बुलाने को,*
> *हे मानस के राजहंस,*
> *तुम भूल न जाना आने को।*
>
> हैं? मगर बाद में पता चला कि वाकई उनका फ्यूनरल है STRICTLY ONLY BY INVITATION याने कि निमंत्रण नहीं है तो आने की ज़रूरत नहीं है।

जो भी मिले या हमारे पास से निकले, उसे मुँह उतारे भारत टाईप बताते जा रहे थे कि जेनी के साथ बड़ा हादसा हो गया। उसका पति गुज़र गया। खैर, लोगों को बहुत ज़्यादा इन्टरेस्ट न लेता देख मन और दुःखी हो गया। भारत होता तो भले ही न पहचान का हो तो भी कम से कम इतना तो आदमी पूछता ही कि क्या हो गया था? बीमार थे क्या? या कोई एक्सीडेन्ट हो गया क्या? कैसे काटेगी बेचारी के सामने पड़ी पहाड़ सी जिन्दगी? अभी उम्र ही क्या है? फिर से शादी कर लेती तो कट ही जाती जैसे-तैसे और भी तमाम अभिव्यक्तियाँ और सलाहें। मगर यहाँ तो कुछ नहीं। अजब लोग हैं। सोच कर ही आँख भर आई और गला

रौंध गया।

हमारे यहाँ तो आज मरे और गर सूर्यास्त नहीं हुआ है तो आज ही सूर्यास्त के पहले सब पहुँचाकर फूँक ताप आयें। वैसा अधिकतर होता नहीं क्यूँकि न जाने अधिकतर लोग रात में ही क्यूँ अपने अंतिम सफर पर निकलते हैं। होगी कोई वजह.. वैसे टोरंटो में भी रात का नज़ारा दिन के नज़ारे की तुलना में भव्य होता है और वैसा ही तो बम्बई में भी है। शायद यही वजह होगी। सोचते होंगे कि अब यात्रा पर निकलना ही है तो भव्यता ही निहारें। खैर, जो भी हो मगर ऐसे में भी अगले दिन तो फूँक ही जाओगे।

मगर यहाँ अगर सोमवार को मर जाओ तो शनिवार तक पड़े रहो अस्पताल में। शानिवार को सुबह आकर सजाने वाले ले जायेंगे। सजा-बजा कर सूट पहना कर रख देंगे बेहतरीन कफ़न में और तब सब आपके दर्शन करेंगे और फिर आप चले दो गज़ ज़मीन के नीचे या आग के हवाले। आग भी फरनेस वाली ऐसी कि 10 मिनट बाद दूसरी तरफ से हीरा का टुकड़ा बन कर निकलते हो जो आपकी बीबी लाकेट बनवाकर टांगे घूमेगी कुछ दिन। गज़ब तापमान... हड्डी से कोयला, कोयले से हीरा जैसा परिवर्तन जो सैकड़ों सालों साल लगा देता है, वो भी बस 10 मिनट में।

खैर, पता लगा कि जेनी के पति का फ्यूनरल शनिवार को है। अभी तीन दिन हैं। घर आकर दुःखी मन से भाषण भी तैयार कर लिया शेर-शायरी के साथ जैसा भारत में मरघट पर देते थे। शायद कोई कुछ कहने को कह दे तो खाली बात न जाये इतने दुःखी परिवार की। बस, यही मन में था और क्या...

शुक्रवार को दफ्तर में औरों से पूछा भी कि भई, कितने बजे पहुँचोगे? कोई जाने वाला मिला ही नहीं। बड़ी अजीब बात है? इतने समय से साथ काम कर रहे हैं और इतने बड़े दुःखद समय में कोई जा नहीं रहा है। हद हो गई। सही सुना था एक शायर को, शायद यही देखकर कह गया होगा :

सुख के सब साथी, दुख का न कोई रे!!

आखिर मन नहीं माना तो अपने एक साथी से पूछ ही लिया कि भई, आप क्यूँ नहीं जा रहे हो?

वो बड़े नार्मल अंदाज में बताने लगा कि वो इन्वाईटेड नहीं है।

लो, अब उन्हें फ्यूनरल के इन्विटेशन का इंतजार है। हद है यार, क्या भिजवाये तुम्हें कि:

भेज रही हूँ नेह निमंत्रण,
प्रियवर तुम्हें बुलाने को,
हे मानस के राजहंस,
तुम भूल न जाना आने को।

हैं? मगर बाद में पता चला कि वाकई उनका फ्यूनरल है STRICTLY ONLY BY INVITATION याने कि निमंत्रण नहीं है तो आने की ज़रूरत नहीं है।

गजब हो गया भई। तो निमंत्रण तो हमें भी नहीं आया है। फिर कैसे जायेंगे। कैसे बाँटूं उसका दर्द... हाय!

सोचा कि शायद इतने दुःख में भूल गई होगी। इसलिये अगले दिन सुबह फोन लगा ही लिया। शायद फोन पर ही इन्वाईट कर ले। चले जायेंगे। भाषण पढ़ देंगे। दो बूँद आँसू बहा कर कँधा आगे कर देंगे कि वो भी सर रख कर इस दर्द भरी घड़ी में हल्की हो ले। इन्सानयित का तकाज़ा तो यही कहता है और इसमें अपना जाता भी क्या है। कँधा कोई शक्कर का तो है नहीं कि उस दुखिया के आँसुओं से गल जायेगा।

पता चला कि ब्यूटी पार्लर के लिए निकल गई है फ्यूनरल मेकअप के लिए। भारतीय हैं तो थोड़ा गहराई नापने की इच्छा हो आई और ज़रा कुरेदा तो पता चला कि ब्लैक ड्रेस तो तीन दिन पहले ही पसंद कर आई थी आज के लिए और मेकअप करवा कर सीधे ही फ्यूनरल होम चली जायेगी। कफ़न का बक्सा प्यूर टीक का डिज़ायनर रेन्ज का है फलाँ कम्पनी ने बनाया है और गड़ाने की ज़मीन भी प्राईम लोकेशन है मरघटाई की। अगर इन्विटेशन नहीं है तो आप फ्यूनरल अटेंड नहीं कर सकते हैं मगर अगर चैरिटी के लिए डोनेशन देना है तो ट्रस्ट फण्ड फलाने बैंक में सेट अप कर दिया गया है, वहाँ सीधे डोनेट कर दें एण्ड एक स्पेशल हिदायत, स्वाईन फ्लू के चलते, कृप्या फ्लावर्स न भिजवायें। स्वीकार्य नहीं होंगे।

हम भी अपना मुँह लिए सफेद कुर्ता पजामा वापस बक्से में रख दिए और सोचने लगे कि अगर हमारे भारत में भी ऐसा होता तो भांजे का स्टेटमेन्ट भी लेटेस्ट फैशन के हिसाब से निमंत्रण पत्र में ज़रूर रहता :

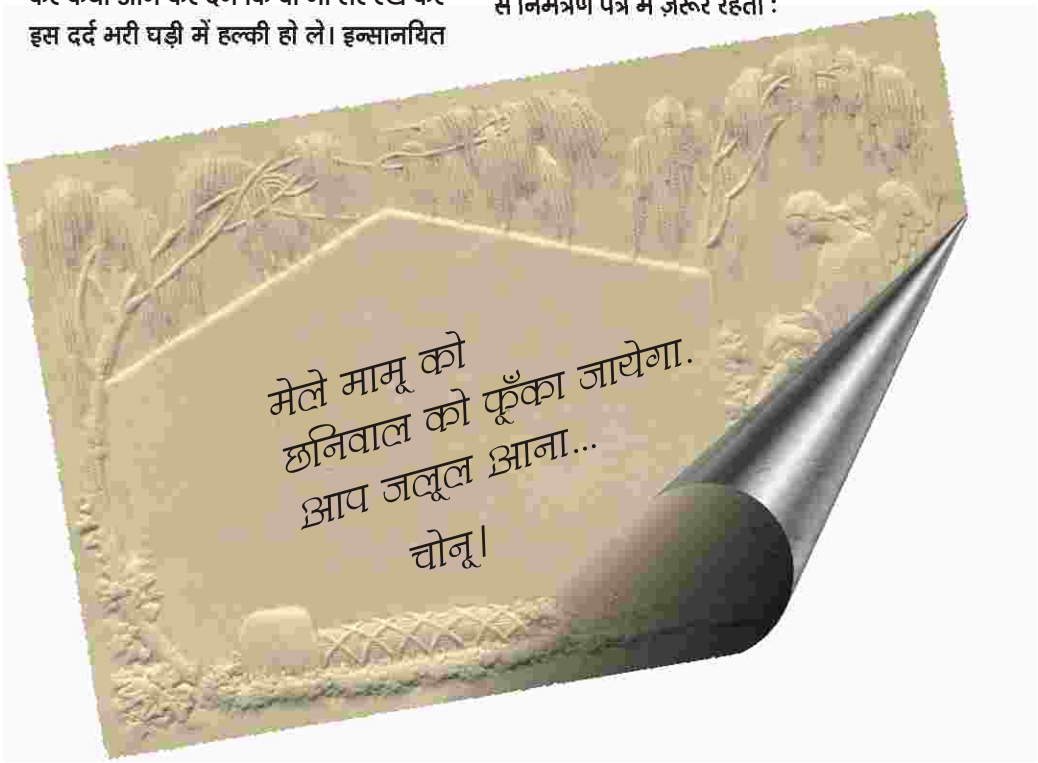

आलेख

सरकार, समाज और सीनियर सिटीजन

देवेन्द्र पाल गुप्ता 'सुहृद', भारत

नाम नयन सुख पर जन्म से अंधे, इसी प्रकार नाम करोड़पति किन्तु पेशे से भिखारी। ऐसा ही कलयुग में एक शब्द गढ़ा गया है 'सीनियर सिटीजन', सरकारी अवहेलना का शिकार, परिवार में प्रमुखता से विहीन, समाज में सबसे ज़्यादा शोषित, पीड़ित, प्रताड़ित, गरीबों में सबसे अधिक गरीब, रोटी, कपड़ा, मकान यहाँ तक कि इलाज तक के लिए मोहताज, शरीर से अपाहिज, घर के सबसे अनुपयोगी कमरे में पड़े रहने वाले प्राणी का नाम रख दिया 'सीनियर सिटीजन' जो वास्तव में है 'जूनियर मोस्ट परसन'।

सरकार दिखावे के लिए उन्हें कुछ सुविधाएँ देती हैं ताकि उनका वोट बैंक बना रहे। कभी उन्हें रेलवे किराये में छूट देती है जो महिलाओं को 50 प्रतिशत और पुरुषों को 30 प्रतिशत है। यहाँ भी फूट डालते हुए भारतीय विधान की धज्जियाँ उड़ा दीं जिसमें स्त्रीलिंग और पुरुषलिंग में कोई भेदभाव करना वर्जित है। इसी प्रकार इनकम कम और बूढ़े पर टैक्स ज़्यादा है फिर भी वह बेचारा बेबस कराहते हुए मरता है जबकि नेता और व्यापारी चोरी में चूकते नहीं और साठ-गाँठ से बचे रहते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी धांसू अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से भयभीत होकर भारत सरकार ने बड़ी मज़बूरी से, अनचाहे मन से, कुछ कानून तो बनाये मगर दिखावे के लिए। इनमें से प्रमुख निम्न हैं :

1. National Policy on older persons (NPOP) जिसे 11 साल बीतने के बाद भी कुल 7 राज्यों में आंशिक रूप से चालू किया जा सका है।
2. The Maintenance and welfare of Parents and senior citizens Act-2007 जिसका केवल 3 राज्य सरकार आंशिक रूप से अनुपालन कर

> **घर के सबसे अनुपयोगी कमरे में पड़े रहने वाले प्राणी का नाम रख दिया 'सीनियर सिटीजन' जो वास्तव में है 'जूनियर मोस्ट परसन'।**

रही हैं शेष ने ठेंगा दिखा रखा है। यह कानून भी क्या है जिसमें माता–पिता अपने खाने खर्च के लिए बेटा–बेटियों के विरुद्ध मुकदमा दायर कर गुज़ारे भत्ते की मांग करेंगे। अभी तक दो जून की रूखी–सूखी रोटी मिल जाती थी, वह भी बन्द कर दी जायेगी कि जाओ केस का फैसला होने के बाद देखेंगे।

3. Old Age Homes for 150 persons in each district as mandated in MWPS Act इसे अभी तक किसी राज्य ने चालू नहीं किया है।

4. The Indira Gandhi National Old Age pension Scheme भी आंशिक रूप से 11 राज्यों में प्रचलित है शेष ने ठेंगा दिखा रखा है।

ऐसा कानून बनाने से क्या लाभ जिन्हें राज्य सरकारें और यूनियन टेरिटोरी भी स्वयं अनुपालन न करे और बूढ़े अपने बुढ़ापे को और सरकार को कोसते रहें। यहाँ यह बताना असंगत नहीं होगा कि अनेक ऐसे कानून हैं जो संसद और सरकार ने बनाये थे, वर्षों से सरकारी रद्दी की टोकरी में पड़े धूल चाट रहे हैं। क्या हमारे बूढ़े सांसद जो सदैव अपनी तनख्वाह और भत्तों की बढ़ोत्तरी की तिकड़म लगाते रहते हैं, कभी इधर भी सोचेंगे कि स्वर्गवासी होने से पहले अपने ग़रीब बूढ़े साथियों की सुख–सुविधा के लिए कुछ संसाधन सृजित करते जावें।

इसी प्रकार सरकार ने ऐसे भी अनेक शासकीय आदेश पारित किये हैं, जिसमें सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारियों के अनुभव से लाभान्वित होने के लिए उन्हें शासकीय/अर्धशासकीय समितियों में सम्मिलित किया जाए किन्तु ऐसे आदेश सिर्फ दिखावे मात्र हैं, जिनकी अवहेलना सदा से होती रही है तथा होती रहेगी। सरकार चन्द्रमा पर खोज में करोड़ों रुपये खर्च करने में सक्षम है किन्तु उन वरिष्ठ नागरिकों, जिन्होंने अपनी जवानी गवाँ कर स्वाधीनता प्राप्त की और देश की उन्नति में अपना सब कुछ लुटा दिया। अब उनकी भूख–प्यास मिटाने तथा इलाज के लिए महान कोताही बरती जा रही है। फंड नहीं है, कैसी विडम्बना है।

सरकार चन्द्रमा पर खोज में करोड़ों रुपये खर्च करने में सक्षम है किन्तु उन वरिष्ठ नागरिकों, जिन्होंने अपनी जवानी गवाँ कर स्वाधीनता प्राप्त की और देश की उन्नति में अपना सब कुछ लुटा दिया। अब उनकी भूख-प्यास मिटाने तथा इलाज के लिए महान कोताही बरती जा रही है। फंड नहीं है, कैसी विडम्बना है।

बूढ़े का परिवार बिखर गया है, बेटी शादी होकर पराये घर चली गई, मगर माँ–बाप की चिंता उसे सदैव सताती रहती है। बेटा भी शादी के बाद पराया हो गया। वह भी 'हम दो हमारे दो' के सरकारी परिवार से बंध गया। अपने व्यापार और नौकरी के चक्कर में वह कोल्हू के बैल की तरह चक्करघिन्नी सा घूमता रहता है। चिड़चिड़ाते हुए उसे माँ–बाप से बात करने की फुरसत कहाँ? अगर कुछ समय बचता है तो उस पर उसकी बीबी और बच्चों की बपौती है। सरकारी परिवार नियोजन वालों ने वर्षों से नारा बुलंद कर रखा है कि 'हम दो हमारे दो' अब माँ–बाप की ज़िम्मेदारी कौन उठावे? बेटा–बेटी पराये हो गए। समाज और सरकार को सरोकार नहीं तो वह कहाँ जाए?

जब तक माँ–बाप दोनों रहते हैं तब तक आपस में ही बतियाते रहते हैं। अपने जवानी के दिन, अपने बच्चों की बातें करते हैं, किन्तु जब उनमें से एक बिछुड़ जाता है तो पीड़ा असहनीय हो जाती है और इस भारी–भरकम दुनिया की भीड़ में अपनों को खोजने में ही उनकी आँखें पथरा जाती हैं। 'हम दो हमारे दो' की सीमा में माँ–बाप समाते नहीं तो अब वे कहाँ जाएँ? जीवित रहते हुए स्वर्ग और नर्क के दरवाज़े भी बन्द हैं। ईश्वर भी उन्हें भुलाये बैठा है क्योंकि सबसे बूढ़ा तो भगवान् ही है और उसमें भी संभवतः बुढ़ापे की व्यथाएँ व्याप्त हो चुकी हैं। अब बूढ़ों की बागडोर स्वयं बूढ़ों को ही थामनी पड़ेगी और एक बार पुनः जवानी का जोश दिखाना पड़ेगा। भगवान् भी उन्हीं की मदद करता है, जो अपनी मदद अपने आप करते हैं अतः...

खुदी को कर बुलंद इतना,
कि हर तक़दीर से पहले,

खुदा बन्दे से यह पूछे,
बता तेरी रज़ा क्या है। ◆

आलेख

हम सैल्फमेड नहीं

✍ सीताराम गुप्ता, भारत

कुछ लोगों को माँ-बाप से ही नहीं पूरे समाज से शिकायत होती है। उनका पूछना है कि दुनिया ने उनके लिए आख़िर किया ही क्या है? ऐसे लोग प्रायः स्वयं में, स्वयं के द्वारा और स्वयं के लिए निर्मित होते हैं। उनके लिए सबकी ज़िम्मेदारी होती है लेकिन वे खुद किसी के लिए ज़िम्मेदार नहीं होते। वो कभी ये सोचने की ज़हमत नहीं उठाते कि उन्होंने समाज के लिए क्या किया है अथवा करना चाहिए।

पिछले दिनों एक रिश्तेदार घर आए। साथ में उनकी पत्नी भी थीं। दो-तीन दिन रुके। कई सालों बाद आए थे। खूब आत्मीयतापूर्ण बातें हुईं। अच्छा लगा। पहले आर्थिक स्थिति पतली थी क्योंकि न तो कभी स्वयं ही कोई काम किया और न ही कभी उनके पिताश्री ने कोई काम किया था। जब से उनके बच्चों ने सत्ता संभाली आर्थिक स्थिति में बदलाव आया। बातों से झलकता था कि अब आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है लेकिन जब तक रुके पति-पत्नी दोनों की एक ही शिकायत बार-बार प्रतिध्वनित होती रही, हमें तो माँ-बाप और दादा-दादी से कुछ नहीं मिला। हमारी जो संपत्ति है वह सब हमने स्वयं अर्जित की है। हमारी समृद्धि हमारी अपनी मेहनत का ही फल है। इसी प्रकार की शिकायत करने वाले अनेक लोगों से मुलाकात होती ही रहती है। कुछ का कहना होता है कि दे आर कंप्लीटली सैल्फमेड। यह मात्र अहंकार है। यह आंशिक सत्य हो सकता है पूर्ण सत्य कदापि नहीं हो सकता। जहाँ तक माँ-बाप और दादा-दादी से विरासत में संपत्ति के मिलने की बात है उसके कई पहलू हो सकते हैं। यदि माँ-बाप और दादा-दादी के पास संपत्ति होती तो वह अवश्य ही तुम्हें मिलती लेकिन यदि उनके पास कुछ था ही नहीं तो वे कहाँ से तुम्हें कुछ देते।

एक और प्रश्न उठता है कि क्या मात्र धन-दौलत अथवा पैसा ही वास्तविक विरासत है। धन-दौलत अथवा पैसा न मिलने पर भी माँ-बाप से बहुत कुछ मिलता है हम ये भूल जाते हैं। हम ये भूल जाते हैं कि हमारे अस्तित्व में आने के मूल में हमारे माता-पिता ही तो होते हैं। हम जो भाषा बोलते हैं वह हमने किसी स्कूल या मदरसे में नहीं अपितु माता-पिता के सान्निध्य में ही सीखी होगी। उन्होंने ही उँगली पकड़कर चलना भी सिखाया होगा। उन्होंने अपनी हैसियत के अनुसार न केवल अच्छी परवरिश की होगी अपितु शिक्षा-दीक्षा दिलाने का प्रयास भी अवश्य किया होगा। घोर ग़रीबी की हालत में भी माँ स्वयं भूखी रहकर अपने बच्चों का पेट भरने की जी तोड़ कोशिश करती है इसमें संदेह नहीं। ऐसे माँ-बाप से संपत्ति नहीं मिली तो क्या विषम परिस्थितियों में जीने का साहस और प्रेरणा तो अवश्य मिली होगी। फिर कैसे कहा जा सकता है कि हमें माँ-बाप से कुछ नहीं मिला?

कुछ लोगों को माँ-बाप से ही नहीं पूरे समाज से शिकायत होती है। उनका पूछना है कि दुनिया ने उनके के लिए आख़िर किया ही क्या है? ऐसे लोग प्रायः स्वयं में, स्वयं के द्वारा और स्वयं के लिए निर्मित होते हैं। उनके लिए सबकी जिम्मेदारी होती है लेकिन वे खुद किसी के लिए जिम्मेदार नहीं होते। वो कभी ये सोचने की ज़हमत नहीं उठाते कि उन्होंने समाज के लिए क्या किया है अथवा करना चाहिए। यह सही है कि आपने स्वयं अपना विकास किया। आपने अपने समय का सदुपयोग किया, खूब मेहनत करके पढ़ाई की और एक अच्छी सी नौकरी अथवा व्यवसाय में आ गए। यह ठीक है कि आपने पुरुषार्थ किया। वैसे भी आप पुरुषार्थ नहीं करते तो आपका ही अहित होता। पुरुषार्थ करके आपने अपने लिए अच्छा किया लेकिन क्या इसके

पीछे किसी उत्प्रेरक तत्त्व ने काम नहीं किया? क्या आपको इसके लिए कहीं से प्रेरणा और प्रोत्साहन नहीं मिला? क्या अनेक व्यक्तियों और समाज ने आपको आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध नहीं कराए? जहाँ पर आपने शिक्षा प्राप्त की वे स्कूल, कॉलेज, संस्थान और विश्वविद्यालय क्या आपने स्वयं निर्मित किये थे? जिस कार्यालय अथवा प्रतिष्ठान में आप कार्यरत हैं क्या वह आपके ही परिश्रम का फल है? आप जो व्यवसाय कर रहे हैं क्या वह अन्य लोगों के सहयोग के बिना संभव है? आप जो उद्योग चलाते हैं क्या उसके उत्पाद स्वयं उपभोग में लाकर पैसा कमा रहे हैं? माना आपके पास अथाह संपत्ति है पर क्या मात्र पैसे के बल पर बिना एक डॉक्टर की मदद के रोगी होने पर स्वस्थ हो पाए हैं? आप एक डॉक्टर हैं तो क्या बिना मज़दूरों की मदद के ये आलीशान घर और क्लीनिक स्वयं बना सकते है? एक मज़दूर ही क्या बिना किसान की मेहनत के अन्न का एक दाना भी मुँह में डाल सकेगा? एक किसान को भी अच्छी खेती के लिए न जाने कितने लोगों पर निर्भर होना पड़ता है। एक विद्यार्थी को भी पढ़ने-लिखने और आगे बढ़ने के लिए कापी-किताब और क़लम-दवात आदि न जाने कितनी चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है जिसके लिए वह दूसरों पर निर्भर होता है।

बड़ी-बड़ी चीज़ों की बात छोड़िये छोटी-छोटी चीज़ों और ज़रूरतों के लिए भी हम दूसरों पर निर्भर होते हैं। एक मामूली सी लगने वाली क़मीज़ जो हमने पहन रखी है उसे हमारे तन पर सुशोभित करने में सैकड़ों लोगों का योगदान है। खेत में बीज बोने से लेकर पौधे उगने और उनसे कपास मिलने तथा कपास से कपड़ा और क़मीज़ बनने के बीच असंख्य हाथों का परिश्रम है। कपड़े से क़मीज़ बनाने के लिए एक सिलाई मशीन की ज़रूरत पड़ती है। वह लोहे तथा अन्य कई पदार्थों से बनती है।

खनिकों द्वारा लोहा और अन्य खनिज पदार्थ खानों से निकाले जाते हैं। बड़े-बड़े कारखानों में मजदूरों द्वारा लोहा साफ़ किया जाता है। फिर दूसरे बड़े-बड़े कारखानों में लोहे से बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारा छोटी मशीनें बनती हैं। उन्हीं में से एक मशीन पर कारीगर कपड़े से एक अच्छी सी क़मीज़ सिलकर आपको पहनाता है। अब ज़रा सोचिये कि यदि क़मीज़ में बटन न लगे हों तो कैसा लगे। एक बटन जैसी अल्प मूल्य की वस्तु भी ऐसे ही नहीं बन जाती। उसके लिए भी न जाने कितने हाथों के सहारे की ज़रूरत पड़ती है। एक बटन टाँकने के लिए जो सबसे ज़रूरी यंत्र है वह है सुई। कहते हैं सुई से लेकर जहाज़ तक यानी सुई को सबसे तुच्छ वस्तु समझा जाता है लेकिन उसी सुई के बिना हमारा काम नहीं चल सकता। हाँ इस छोटी सी तुच्छ चीज़ को तो आप अवश्य ही स्वयं बना लेते होंगे? इसके लिए तो आपको न कच्चे माल की ज़रूरत है और न कल कारखानों की और न कुशल कारीगरों की। नहीं मित्र ऐसा नहीं है।

चलिए मान लेते हैं कि समाज ने आपको कुछ नहीं दिया। यहाँ सब स्वार्थी हैं। बिना कारण कोई किसी को कुछ नहीं देता। लेकिन एक जगह है जहाँ से आपको बहुत कुछ मिलता है और वो भी उपयोगी और बिलकुल मुफ्त। प्रकृति तो हमें बहुत कुछ देती है पर हम उसे क्या देते हैं सिवाय उसे प्रदूषित और नष्ट करने के। फिर समाज को भी प्रदूषित और नष्ट करें, उसकी उपेक्षा करें तो कौन सी बड़ी बात है? लेकिन वास्तविकता ये है कि हम सब एक-दूसरे के सहयोग के बिना अपूर्ण हैं। हमारे विकास में हमारा पुरुषार्थ ही नहीं अन्य सभी का सहयोग अपेक्षित है। क्या माता-पिता, क्या भाई-बंधु, क्या समाज और क्या प्रकृति इन सबके सम्मिलित प्रयासों से ही हमारा जीवन गति पाता है। इन सबके सहयोग के बिना एक सांस लेना भी मुमकिन नहीं। आओ इस भ्रम को तोड़ें कि हम सैल्फमेड हैं। हम सबको महत्त्व देंगे और सबकी रक्षा करेंगे तभी हमारी सुरक्षा संभव है।

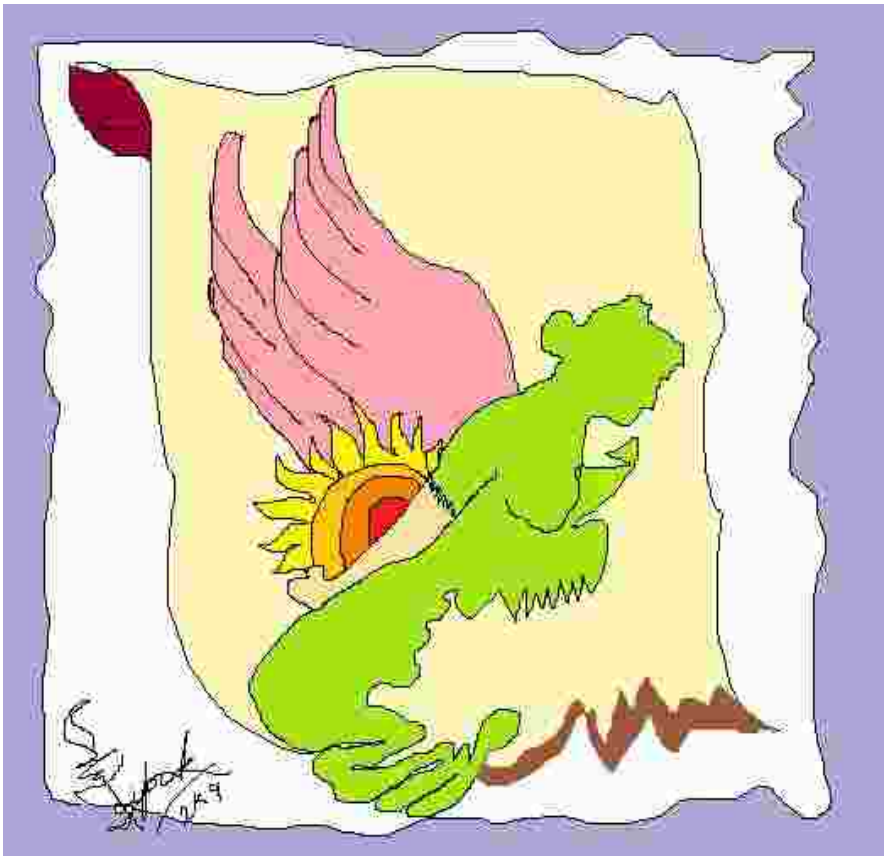

दीपक मशाल

BEST WAY CARPET & RUGS INC.

$50.00 Off All wall to wall Carpet with purchase up to 300 sq. ft.
10% Off all Area Rugs

Free delivery under pad Installation

• Residential • Commercial • Industrial • Motels & Restaurants

Free Shop at Home Service Call: (416) 748-6248

• Broadloom • Area Rugs • Runners • Vinyl & Hardwood • Blinds & Venetian
Custom Rugs • All kind of Vacuums

Interest Free 6 months No Payment OAC

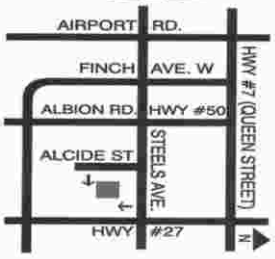

7003, Steeles Ave. Unit 8
Etobicoke
ON M9W OA2
Ph: 416-748-6248
Fax: 416-748-6249

1 Select Ave, Unit 1
Scarborough
ON M1V 5J3
Ph: 416-321-6248
Fax: 416-321-0929

पाश्चात्य पृष्ठभूमि पर नारी विमर्श की अवधारणा

प्रीत अरोड़ा
शोध-छात्रा, हिंदी विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय

पुरुष वर्चस्ववादी व्यवस्था में नारी के अधिकारों और उसकी अस्मिता की बात करना और उन्हें पाने हेतु नारी विषयक चिंतन 'नारी विमर्श' है जिसमें नारी के अधिकार, उसकी अस्मिता और संघर्षों के विषय में, उसके जीवन के अनेक पहलुओं पर विचार-विमर्श किया जाता है, वह नारी चेतना कहलाता है। आज का नारी-विमर्श स्त्री-पुरुष की समानता, स्त्री-स्वतंत्रता और स्त्री अस्मिता को लेकर चल रहा है। स्त्री-विमर्श में उठने वाले सवाल महज स्त्रियों से जुड़े हुए ही नहीं, अपितु उनसे हमें पितृसत्तात्मक समाज के दोहरे मापदंडों, पितृक मूल्यों, लिंग भेद की राजनीति और स्त्री-उत्पीड़न के अन्तर्निहित कारणों को समझने की भी गहरी दृष्टि प्राप्त होती है। सम्पूर्ण विश्व में नारी-विमर्श एवं नारी चेतना का उद्देश्य समग्रतः परम्परागत मान्यताओं, रूढ़िग्रस्त वर्जनाओं तथा अत्याचारों के प्रति विद्रोह की चेतना के साथ ही पुरुष द्वारा निर्मित शोषक संस्थापनाओं आदि से मुक्त होने की चेतना जाग्रत करना है।

पश्चिम में नारी चिन्तन की सुदीर्घ परम्परा रही है। अमरीका जैसे देशों में भी स्त्रियों की दशा आरम्भ से ही बिलकुल पिछड़ी हुई थी। वह न पुरुषों के समान गिनी जाती थी, न उसे किसी प्रकार का अधिकार ही प्राप्त

था। जैवीय शास्त्र उसे कमज़ोर सिद्ध कर चुका था और बड़े-बड़े ज्ञानी भी स्त्रियों को पुरुषों से नीचे स्तर के मानव के रूप में देखते थे। यहाँ तक की पोप ने भी स्त्री को नीचा स्थान दे रखा था। स्त्रियाँ लिंगवादी धारणा के अंतर्गत कमज़ोर व पिछड़ी हुई मानी जाती थी। 'नारी का अस्तित्व पुरुष मात्र के लिए है'-- इस आदिम भावना को बार-बार दोहराया जा रहा था। सत्रहवीं शताब्दी में सर्वप्रथम नारी ने स्वतंत्रता की माँग उठाई, किन्तु यह माँग शिक्षा व समानता के सन्दर्भ में ही थी जिसे धार्मिक बन्धनों व मान्यताओं के कारण दबा दिया गया। यूरोपीय देशों में नारी अधिकारों की माँग नवजागरण के समय से ही उठ रही थी। लेखिका 'सरला माहेश्वरी' अपनी पुस्तक 'नारी प्रश्न' में लिखती है, 'आधुनिक सभ्यता के केंद्र यूरोप के देशों में अठारवीं शताब्दी में हुए नवजागरण के प्रारंभ से ही नारी अधिकारों का प्रश्न उठ खड़ा हुआ था। यूरोप में १५वीं सदी के इटालियन रैनेसा की चरम परिणिति १८वीं सदी के ज्ञान-प्रसार आन्दोलन के रूप में हुई, जिस दौर में बुद्धिवाद चिंतन के केंद्र में आ गया तथा सभी परंपरागत संस्थाओं को जबरदस्त चुनौतियाँ दी गईं।'

इस प्रकार ज्ञान-प्रसार के उदारतावादी विचारों ने नारियों की अधिकार-चेतना को विकसित किया और यही स्त्री-जागरण यूरोप में फ्रांसीसी क्रांति तथा अमरीकन आन्दोलन के साथ उभरा और १८वीं सदी के अंत तक इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों के बुद्धिजीवियों ने नारीवादी विचारों को अभिव्यक्ति दी। इस प्रकार पाश्चात्य नारी विमर्श का आरम्भ हुआ जिसने एक व्यापक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। इसी नारी आन्दोलन को प्रभावित करने वाले कुछ कारक रहे हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

1. इंग्लिश क्रांति.
2. अमरीकन क्रांति.
3. फ्रांसीसी क्रांति.
4. द्वितीय विश्व युद्ध
5. प्रमुख चर्चित पुस्तकें एवं विचारक जो आन्दोलन के प्रेरणा स्रोत बने।

1. इंग्लिश क्रांति : यह सन् 1648 में घटित क्रांति है जिसका उद्देश्य जीवन-स्तर को उठाना था। इसमें जीवन-बसर के अंतर्गत स्त्रियों की स्थिति में सुधार लाना एक उद्देश्य था।

2. अमरीकन क्रांति : सन् 1770 में अमरीका को स्वाधीनता प्राप्ति भी इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण घटना थी। इस क्रांति के अंतर्गत मुख्य मांगें थीं - अधिकार प्राप्ति, शिक्षा, धर्म का दबाब, अमानुषिक व्यवहार आदि पर आवाज़ उठाना जिसमें विशेषकर नारी अधिकारों की मांग उठाई गई।

3. फ्रांसीसी क्रांति : सन् 1789 में घटित यह क्रांति अमरीकन क्रांति और अंग्रेजी (इंग्लिश) क्रांति के मिले-जुले रूप का ही आन्दोलन था, किन्तु सामंतवाद के खात्मे, पूंजीवाद को प्रोत्साहन और आधुनिक लोकत्रंत्र के सिद्धांतों को स्थापित करने के मामले में उसका व्यापक और गंभीर प्रभाव पड़ा। इस क्रांति से नारीवादी आन्दोलन को प्रोत्साहन मिला।

4. द्वितीय विश्वयुद्ध : द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका में एक नया आत्मविश्वास और भविष्योन्मुखी आशावाद उभर रहा था। इस आत्मविश्वास के पीछे थी उन्नत-तकनीकी, आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक क्षेत्रों में इस कदर तेज़ प्रगति जो मानव इतिहास में अभूतपूर्व थी। इस विकास के कारण श्रम की मांग बड़ी, इससे स्त्रियाँ रोज़गार तथा कार्यक्षेत्र में प्रविष्ट हुई, उनकी स्थिति और आत्मबोध में बदलाव आए। किन्तु युद्ध की समाप्ति होने पर स्त्रियों को काम से हटाकर घर की चारदीवारी में रहने को प्ररित किया गया। उनसे गृहणी की भूमिका में वापस लौट जाने को कहा गया। किन्तु अब नारी अपनी क्षमता को पहचान चुकी थी और आर्थिक स्वतंत्रता ने उसकी अधिकार चेतना को बढ़ाया, इसी कारण नारी को अपनी अधिकार रक्षा और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आन्दोलन को तीव्र करना पड़।

प्रमुख विचारक और उनकी पुस्तकें :

नारी विमर्श की आधार भूमि तैयार करने के कुछ प्रमुख विचारक और उनकी पुस्तकों का भी महत्त्पूर्ण योगदान रहा है। इन विचारकों ने नारी की परतंत्रता और उसकी हीन स्थिति के कारणों को समाज में खुलकर बताया जिसके कारण नारी चिंतन की एक नयी परंपरा का विकास हुआ।

सराह हेल

जन्म 24 अक्टूबर 1788 को न्यू हेम्पशायर में। नारी-मुक्ति आन्दोलन की पहली नेत्री सराह हेल ने 'लेडीज़ मैगज़ीन' नामक पत्रिका प्रकाशित की। इस पत्रिका के माध्यम से सराह हेल ने नारी चेतना के स्वर सारे विश्व में गुंजायमान कर दिए। सराह हेल ने स्त्रियों के अधिकारों के लिए आन्दोलन चलाया और लड़के-लड़कियों के लिए समान शिक्षा का अधिकार माँगा।

मेरी वाल्सटोनक्राफ्ट

जन्म 27 अप्रैल 1759 को लन्दन में। मेरी ने अपनी पुस्तक 'द विंडीकेशन ऑफ़ द राइट ऑफ़ विमेन' (1792 ई.) में नारी सम्बन्धी पुरातन मान्यताओं व अवधारणाओं को खंडित किया। इस पुस्तक को नारी-अधिकार का बाइबल कहा जाता है। मेरी ने स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्ति की माँग की।

जान स्टुअर्टमिल

सन् 1873 में आई जान स्टुअर्टमिल की

पुस्तक 'सब्जेक्शन ऑफ़ विमेन' (स्त्री की पराधीनता) को नारी अधिकारों के लिए गए संघर्ष के इतिहास में मील का पत्थर माना जाता है। यह पुस्तक स्त्री की पराधीनता और स्वाधीनता से जुड़े गूढ़ रहस्यों पर से बड़ी बेबाकी से पर्दा हटाती है।

19वीं सदी में नारी विमर्श स्वरूप : 19वीं सदी तक आते-आते पश्चिम में स्त्रियों के लिए समान अधिकार की माँग एक प्रमुख राजनीतिक प्रश्न का रूप लेने लगी। शिक्षा, कानून, राजनीति आदि सभी क्षेत्रों में एक आन्दोलन-सा आरम्भ हो गया तथा स्त्रियों के लिए मतदान के अधिकार की माँग ने एक जन-अभियान का रूप ले लिया। इस दौर के प्रमुख नारीवादी विचारकों में जान स्टुअर्ट मिल, उनकी पत्नी हेरियट टेलर तथा अमरीका की एलिज़ाबेथ केडी स्टेंटन, श्रीमती बेट्टी, सिमोन द बुआर, कुमारी वर्ना देवलीन आदि विचारक प्रमुख रहे हैं।

सिमोन द बुआर

यह आधुनिक नारीवादी विमर्श एवं आन्दोलन का एक सबसे अधिक परिचित नाम है। उनकी पुस्तक 'द सेकंड सेक्स' (हिंदी में अनुवाद 'स्त्री उपेक्षिता' शीर्षक से 1949 में) ने नारीवाद विमर्श के लिए एक नया नारीवादी परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया। 'द सेकंड सेक्स' ने दर्शन-शास्त्र, इतिहास, मनोविज्ञान और मानवशास्त्र का सहारा लेते हुए यह स्थापित किया कि स्त्रियों का दमन इतिहास और संस्कृति की उपज है और इसे एक प्राकृतिक प्रक्रिया नहीं समझा जा सकता। उनका कहना था 'औरत पैदा नहीं होती, बल्कि बना दी जाती हैं।' अर्थात् स्त्री-सुलभ गुण-दोष या व्यक्तित्व लिंग-भेद के प्राकृतिक आधार पर नहीं बल्कि संसार और सीख के सामाजिक आधार पर बनती है।

इस प्रकार इन सभी विचारकों ने नारी की परतंत्रता और उसकी हीन स्थिति के कारणों पर गहराई से विचार-विमर्श करते हुए विश्व चिंतन में एक नयी बहस को जन्म देकर नारी विमर्श को सामने रखा। निश्चित रूप से पाश्चात्य पृष्ठभूमि पर नारी-विमर्श की अवधारणा सराहनीय है। ◆

श्रद्धांजलि

बिहार के विशिष्ट व्यक्तित्व 'बिहार गौरव' की सम्मानोपाधि से विभूषित राधाकृष्ण प्रसाद अपनी दीर्घ आयु में इस संसार से चले गये। वे एक उच्च स्तरीय लेखक, कहानीकार, उपन्यासकार, तथा बाल साहित्य के प्रवर्तक थे। गत 5-6 वर्षों से आप हर वर्ष कैनेडा आते थे और 'हिंदी चेतना' के विषय में अपने सुझाव देते थे। बिहार के अनेकों साहित्यकारों व वहाँ की साहित्य एकेडमी तक 'हिंदी चेतना' की पहचान करवाने का श्रेय उन्हें जाता है। 2011 जनवरी में उनका निधन हो गया। राधा कृष्ण प्रसाद जी रेडियो प्रसारण व केन्द्रीय आकाशवाणी विभाग दिल्ली में अनेकों वर्षों तक सहायक निदेशक बने रहे। हिन्दी चेतना परिवार उन्हें श्रृद्धा के फूल अर्पित करता है।

श्याम त्रिपाठी
मुख्य सम्पादक

Anil Bhasin
अनिल भसीन

१९९० से आपकी सेवा में

घर होता है जीवन का आधार।
घर वोह है, जहाँ मिले सुख – शान्ति और प्यार॥
जो भी "अनिल" के पास आया
उसने अपने सपनों का घर पाया॥

FREE HOME EVALUATION

Anil Bhasin

Sales Representative
Remax Realtron Realty Brokerage Inc.
183 Willowdale Avenue,
Toronto, M2N 4Y9
Cell: 416-410-GHAR(4427)
fax: 416-981-3400
anil@ghar.ca
www.ghar.ca

RE/MAX

ANIL BHASIN'S GHAR.CA
GHAR MEANS HOME

RE/MAX® Remax Realtron
Realty Brokerage Inc

Tel: 416-222-8600 Fax: 416-221-0199
183 Willowdale Avenue, Toronto, M2N 4Y9
Independently owned

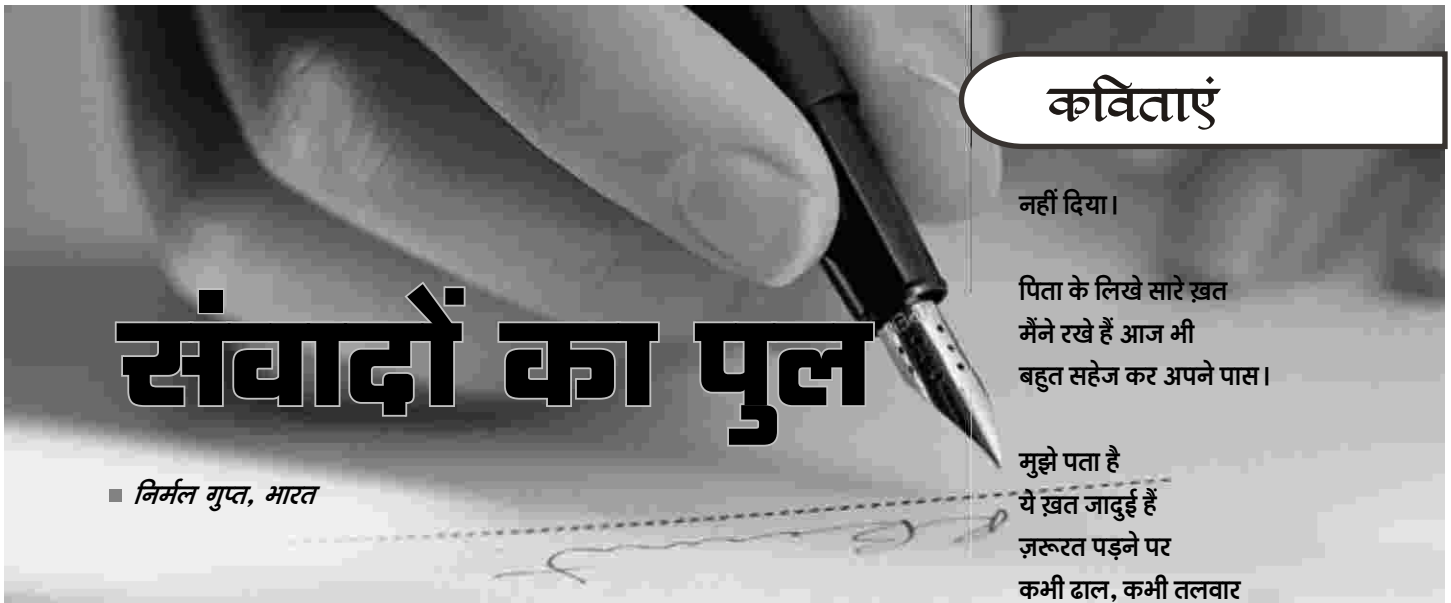

संवादों का पुल

■ *निर्मल गुप्त, भारत*

मैं लिखा करता था
अपने पिता को ख़त
जब मैं होता था
उद्विग्न, व्यथित या फिर
बहुत उदास
जब मुझे दिखाई देती थीं
अपनी राह में बिछी
नागफनी ही नागफनी
यहाँ से वहाँ तक।

मेरा बेटा मुझे कभी ख़त नहीं लिखता
फ़ोन ही करता है केवल
उसकी आवाज़
महानगर के कंक्रीट के जंगल से
निकल कर
गाँव–कस्बों, खेत–खलिहानों
बाज़ारों को लांघती
ध्वनी तरंगों में ढल कर
पहुँचती है जब मेरे कानों तक
तब उसमें नहीं होती
कैशोर्य की कोई उमंग
उसमें से झरती है
निराशा की राख ही राख।

इसी राख में ज़रूर होंगे
आस के अंगारे भी
मेरे कान महसूस करना चाहते हैं
उस तपिश को
पर अक्सर रहते हैं
नाकामयाब ही।

मेरे पिता मेरे लिखे ख़त का
तुंरत भेजते थे जवाब
उसमे होती थीं ढेर सारी आशीषें,
शुभकामनाएँ,
अस्फुट सूचनाएँ,
बदलते मौसम का विवरण
और उससे खुद को
बचाय रखने की कुछ ताकीदें।

मैं पिता का ख़त पढ़ता
और मुतमईन हो जाता
कुछ पल के लिए
यह सोच कर कि
यदि कभी आपदा के मेघ बरसे
तो मेरे पिता उपस्थित हो जाएंगे
छाता लेकर
बचपन से मैंने जाना
जब कभी मेघ बरसे
मेरे पिता आ गए
छाता लेकर
उन्होंने मुझे कभी भींगने
नहीं दिया।

पिता के लिखे सारे ख़त
मैंने रखे हैं आज भी
बहुत सहेज कर अपने पास।

मुझे पता है
ये ख़त जादुई हैं
ज़रूरत पड़ने पर
कभी ढाल, कभी तलवार
तो कभी छाता बन सकते हैं।

लेकिन मैं अपने
हताश, निराश, बैचैन
महानगरीय अन्तरिक्ष में
भविष्यहीनता को झेलते
एकाकी संघर्षरत बेटे को
फ़ोन के जरिये
अपने स्नेह का स्पर्श,
ध्वनि–तरंगों में लिपटा
पिता सरीखा विश्वस्त आश्वासन
आपदा से बचाने वाला छाता
देना भी चाहूँ तो कैसे दूं?

कागज़ पर अंकित शब्द
बन जाते हैं इतिहास
उसमें प्रवाहित होता है
ऊर्जा का अजस्र स्रोत
लेकिन ध्वनित तरंगें
तो खो जाती हैं पलक झपकते
और रह जाता है
पिता–पुत्र के बीच संवादों का
एक कमजोर पुल।

जिसका दरकना तय है
मौसम की पहली बारिश में।

सरकारी अफसर

अनिल श्रीवास्तव
'मुसाफिर', अमेरिका

कुर्सी तोड़ रहा हूँ,
पन्ने मोड़ रहा हूँ,
करने को कुछ नहीं है,
बोर हो रहा हूँ।

आता कुछ नहीं है,
जाता कुछ नहीं है,
गधे की ज़िन्दगी है,
कोई पूछ नहीं है।

कभी कुछ जोड़ता हूँ,
कभी कुछ तोड़ता हूँ,
लिए हाथ में कॉफी,
इत उत दौड़ता हूँ।

शोर कर चुका हूँ,
बोर कर चुका हूँ,
करके फोन सबों को,
ईमेल खोल चुका हूँ।

बीए का कोर्स किया है,
शादी ऑफ़कोर्स किया है,
बच्चे हैं शायद अपने,
बाकी आउटसोर्स किया है।

एडमिन को छेड़ता हूँ,
दाने फेकता हूँ,
बनकर शेखचिल्ली
खुद पर झेंपता हूँ।

कंप्यूटर चकोर बना हूँ,
की-बोर्ड पर तना हूँ,
समझते हैं बॉस मेरे,
कि काम में सना हूँ।

पार्टी में अकड़ता हूँ,
लोगों पे बरसता हूँ,
सरकारी अफसर हूँ,
अक्ल को तरसता हूँ।

प्रतिशोध की ज्वाला

■ *पंकज त्रिवेदी, भारत*

प्रतिशोध की ज्वाला
भड़क रही है मेरे अंदर
घुटन-सी महसूस होती है
निराशा भी हैं,
धोखा भी हैं,
आशा-अपेक्षा की नींव पर
खड़ी थी सपने की ईमारत
वो भी अब गिर चुकी हैं
किस तरह से जीना होगा मुझे
यह भी नहीं पता था मगर
हर पल सबको साथ लेकर
किसी के एक बोल पर दौड़ता रहता
और

न जाने क्यूँ? कुछ नहीं कहना हैं मुझे...
जाने दो उस बात को...
अब मैं –
जो भी हो...
खत्म होना हैं मुझे
लोग चाहें जिस तरह भी खत्म करें
मैं उन्हें सहयोग देता रहूँगा
मगर –
अपनी इंसानियत को,
अपनी आत्मा को,
कभी भी खत्म नहीं होने दूँगा...!

बादल

■ *मधु वार्ष्णेय, कैनेडा*

बादलों तुम क्यों गरजते हो
शोर मचाते हो
ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला कर
सबको बताते हो
सबको जताते हो
कि तुम पृथ्वी को पानी देते हो।

पर उस क्षण यह क्यों भूल जाते हो
कि यह पानी पहले पृथ्वी ने
अपने विशाल हृदय से तुम्हें दिया है।
फिर क्यूँ उमड़-उमड़ कर
इतराते हो।
अपने देने का डंका बजाते हो।
पृथ्वी दिन रात देती रहती है,
तुम्हारे शोर गुल को चुपचाप सुनती है।
किसी से जिक्र तक नहीं करती।
इतनी विनम्र है, सहनशील है,
धीरज धरे रहती है, इसी लिए
कहलाती है माता धरती
माता धरती...

वो बातें

दीपक 'मशाल', यू.के.

खुद को चुभतीं दो दिन की उगी शेव की तरह
खुद को ही तकलीफ देतीं
लेकिन कई बार हकीकत की तरह होतीं
कड़वी मगर मज़ेदार...

उसके भावों की आक्रामकता कभी तो सिखाती प्रतिरक्षा
कभी उकसातीं प्रतिघात
कभी आत्मघात के लिए
प्रकट और विलुप्त होने के बीच उसके भावों का परिलक्षण
मंगल की मिट्टी का सा होता
जिसे कल्पना में साकार करना हमारे वश में था
पर कल्पना को साकार करना
प्रत्यक्ष उसका साक्षात्कार...
लगभग समंदर में गोता लगा कर
शार्क को धागे में बाँध लाने सरीखा

उसके और मेरे बीच का बारीक सा रिश्ता
जो काफी था हमें जोड़ने के लिए
मगर उतना ही अलग भी रहता
जितनी आती-जाती साँस
मेरे और उसकी सोच के संगीत के सुरों में
तारतम्य ना दुनिया को दिखता ना मेरी
बाहर की आँखों को

पहाड़ी संगीत की शहदिया गूँज सी
झांझर की मद्धिम सी
दूर से आती झीनी स्वर लहरी
कानों में रस भर-भर देती है कभी
तो कभी मैथी के बीजों का सा
अहसास स्वाद ग्रंथियों को कराती उसकी
खुद को कोसती कर्कश ध्वनि

उफ्फ ये अंतरात्मा कभी पीछा क्यों नहीं छोड़ती?

अरबी भ्राताओं के लिए विनय

भारतेन्दु श्रीवास्तव, कनाडा

अरबी भ्राताओं! मेरा शत-शत वन्दन
ताना शाही विरुद्ध छेड़ा अद्‌भुत रण।

टुनीशिया, मिस्र, लीबिया और अन्य देश,
करके विप्लब दे रहे जग को संदेश,
न चाहिए हमको तानाशाही शासन।

उपनिवेशी देशों से मिला था संबल,
शासकों ने जोड़ा द्रव्य अरु पाया बल,
राष्ट्रीय सम्पदा न पाया सामान्य जन।

मज़हबियों ने विदेशी किये आरोपित,
पर स्वदेशी लुटेरों पर न बहुत क्रोधित,
हिंसक बन कर रहे निर्दोषों का हनन।

यदि कहीं मिला राज्य तो भूले सच धर्म,
मानवाधिकार अवहेलना कृत अधर्म,
महापुरुषों की शिक्षा का कर विस्मरण।

'इस्लाम तानाशाही है' कहा करते,
'मुस्लिम राष्ट प्रजातांत्रिक न हो सकते',
उनकी भ्रान्ति का होगा क्या अब निवारण?

पैगम्बर साहब ने किए तुम बलवान,
शासक हुए हिंसक अरु आया अभिमान,
निज प्रजा पर न करो क्रूरता दिग्दर्शन।

अल्ला! तुमसे 'भारतेन्दु' कर रहा विनय,
हों अरबी व अफ्रीकी सफल पायें विजय,
हों उल्लासित, स्वाधीन सब सामान्य जन।

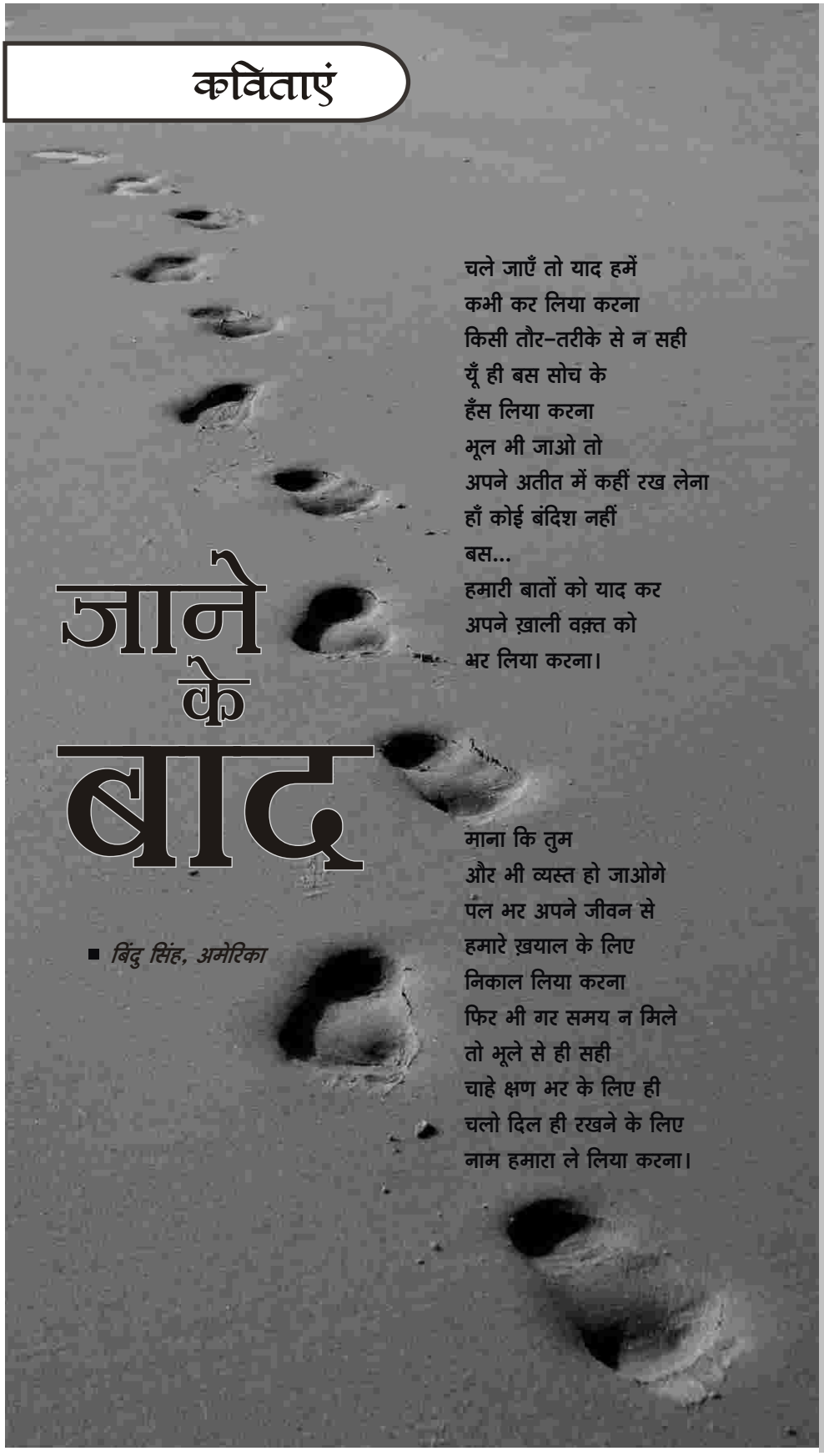

जाने के बाद

■ *बिंदु सिंह, अमेरिका*

चले जाएँ तो याद हमें
कभी कर लिया करना
किसी तौर-तरीके से न सही
यूँ ही बस सोच के
हँस लिया करना
भूल भी जाओ तो
अपने अतीत में कहीं रख लेना
हाँ कोई बंदिश नहीं
बस...
हमारी बातों को याद कर
अपने ख़ाली वक़्त को
भर लिया करना।

माना कि तुम
और भी व्यस्त हो जाओगे
पल भर अपने जीवन से
हमारे ख़याल के लिए
निकाल लिया करना
फिर भी गर समय न मिले
तो भूले से ही सही
चाहे क्षण भर के लिए ही
चलो दिल ही रखने के लिए
नाम हमारा ले लिया करना।

ग़ज़ल

■ *डॉ. अफ़रोज़ ताज, यू.एस.ए.*

सुना है कि उनकी कहानी नहीं है
क्या उन पे अभी तक जवानी नहीं है

न गुज़रे जनाज़ा मेरा उस गली से
बुझी आग फिर से लगानी नहीं है

उठाना है पर्दा तो ख़ुद ही उठाएँ
हमें दिल की क़ीमत गिरानी नहीं है

बुझा पाएगा क्या मेरी तिशनगी को
समंदर में इतना तो पानी नहीं है

उन्होंने गंवाई सभी बादशाही
जिन्होंने फ़क़ीरों की मानी नहीं है

यहाँ ला के कहता है लहरों पे ज़ालिम
कि अब मुझको कश्ती बचानी नहीं है

वह लिखती है मुझको मेरे मन के राजा
कहो क्या वह लड़की दीवानी नहीं है

सबा बे फ़िज़ा है मज़ा इक सज़ा है
क्या यह इश्क़ की तर्जुमानी नहीं है

है ई-मेल उनका मेरी खिड़कियों पर
यह रस्म-ए-कबूतर पुरानी नहीं है

वह सचमुच चली है मेरी जान लेने
गुज़ारिश के मानी तो जानी नहीं है

वहाँ झूठ पर हैं हज़ारों दलीलें
यहाँ सच की कोई निशानी नहीं है

रहा 'ताज' को आज मुहताज जिसने
शहर दर शहर ख़ाक छानी नहीं है।

विनय श्रद्धांजलि

■ *भगवतशरण श्रीवास्तव 'शरण', कैनेडा*

ओ! धरती माँ तुम पुनः क्यूँकर अक्रोश दिखाती हो
अपने ही लाडलों को क्यूँ तू मृत्यु की गोद सुलाती हो।
तुम्हें पूजते सदा सभी हैं माँ तुम तो जननी कहलाती हो
बोलो माता बोलो माता अरे क्यूँ इतना विनाश करवाती हो।

सागर तो तेरी गोदी में सदा शाँत भाव ले बहता था
उसको भी क्यूँ अशान्त करके तुम प्रलय नाश करवाती हो।
कितने अबोध कितने अजान निरुपाय सोये जल की समाधि
तेरा हिया क्या काँपा होगा कैसे तुम शांती पाती हो।

होता चीत्कार हर दिशा में ही प्रलय बन गयी है घालक
माँ क्रोध छोड़ हो शांत भाव तुम दया मयी कहलाती हो
अब जीवन का न अंत करो कह दो सागर से धीर धरो
अब बहुत हो चुका ध्वंस, ध्वस्त निर्माता तुम कहलाती हो।

श्रद्धांजलि उन सब को मेरी उनका धीरज मन शांत करे
आओ हम माँ से विनय करें तुम सबको शरण लगाती हो
निर्माण पुनः तो होगा ही आयेगा वह नव वसंत बनकर
पुरुषार्थ नहीं है झुका कभी माँ तू धैर्यवान बन जाती हो।

इक रात की दुल्हन

■ *अलका सैनी, भारत*

इक रात की दुल्हन, राहें हैं मेरी ठहरी-ठहरी
हृदय समुन्द्र सा विशाल, आँखें 'झील' सी गहरी,
ना ही मेरा कोई रास्ता, ना ही कोई किनारा
चाहकर बह ना पाऊं बनकर नदी की धारा
ना ही मेरी कोई मंजिल, ना मुझ तक कोई आए
पुरवई हवाएँ समुन्द्र का पैगाम देकर जाएँ
मैं इक रैन बसेरा, हृदय में किसी के ना डेरे
हुस्न मेरा हर रात को नव छटा बिखेरे
हर कोई मेरे रूप सलोने के गुण गाए
चाहत मेरी की गहराई का कोई पार ना पाए
अनेकों सैलानी हर दिन आके मन अपना बहलाए
जल मेरा फिर भी किसी की प्यास बुझा ना पाए

काली खुश्क रातों में जिस्म वीरानों में भटकता
पलकों से मेरी जलते घावों का लहू टपकता

मेरे दिल का हर टुकड़ा दर्द की इक दास्ताँ
तूफानों में घिरा है मेरे भू-स्थल का गुलिस्ताँ
रूह मेरी क़यामत की उस रात को तरस जाए
जब मन मंदिर के देवता मेरा हर आंस अपनाए
सदियों से बैठी हूँ बनकर श्वास- हीन धारा
इक रात की दुल्हन, मन आस्मां सा ठहरा..

माँ की रसोई

■ *जयप्रकाश मानस, भारत*

सारे पड़ोस को पता चल जाता है
कौन-सी सब्जी पक रही
यहाँ आकर
हम भाईयों की भूख
एकाएक जाग उठती
गोल घेरे में बैठ जाते पिता
और दादा भी
बिना मुँह फुलाये कि उन्हें
अपने बेटों से कुछ शिकायत है
खाना परोसती हुई
बहनों से दादा कहते —
ससुराल में
सभी को बरोबर खिलाना
वरना लक्ष्मी नाराज़ हो जायेंगी
माँ की रसोई ही
अन्नपूर्णा का ठीहा है बेटी
इसे संभाल कर रखना
मुझे नहीं पता
बहनें कैसे संभालती होंगी रसोई
पर माँ से संभलती है हमारी रसोई
और रसोई से हमारा घर।

चेतावनी !

भाला-बरछी रखना भूल गये
अब यहाँ
पत्थर भी मयस्सर नहीं
कोई बात नहीं
कंकड़ ही संकेल कर
पोटली में बाँध लो
इससे पहले कि और नज़दीक आये
ज़ोर-ज़ोर से गोल-गोल घुमाते रहो
देखना-
जानवर भाग खड़ा होगा

DON'T PAY THAT TICKET!

Al (Doodie) Ross
(416) 877-7382 cell

ROSS
LEGAL SERVICES

Former Toronto Police Officer,
28 Years Experience

Arvin Ross
(416) 560-9366 cell

We Can Help with all Legal Matters:

सच्ची सेवा करते हैं । ईश्वर से हम डरते हैं ॥

Traffic Offences
Summary Criminal Charges
Impaired Driving / Over 80
Accidents
Commissioner for Taking Affidavits
Criminal Pardon and / or a United States Border Waiver

95%
Success Rate!

16 FIELDWOOD DR.
TORONTO ONTARIO, M1V 3G4
OFFICE: (416) 412-0306
FAX: (416) 412-2113

Licensed by the Law Society of Upper Canada

Ross@RossParalegal.com www.RossParalegal.com ROSS LEGAL SERVICES

❄ ❄ ❄ ❄

UNITED OPTICAL

WE SPECIALIZE IN CONTACT LENSES

- Eye exams
- Designer's frames
- Contact lenses
- Sunglasses
- Most Insurance plans accepted

Call: RAJ
416-222-6002

Hours of Operation

Monday – Friday: 10:00 a.m. to 7:00 p.m.
Saturday: 10:00 a.m. to 5:00 p.m.

6351 Yonge Street, Toronto, M2M 3X7
(2 Blocks South of Steeles)

पिरामिड की ममी

■ *अनिल प्रभा कुमार, अमेरिका*

पिता को, पूर्वजों से मिला था
औरत को क़ाबू में
रखने का अधिकार।

फिर भी बेटी को दिया
भरपूर दुलार,
खेलने को खुला आंगन।

तब भी खींच दी सीमा
अग्नि-रेखा की
आदतन।

पति नम्र, उदार
सीमाओं की रेखाएं मिटाकर
चारों ओर बांध दी
प्यार की बाड़।

ऊंची दीवारों पर भी
निषेधों के टूटे शीशे
दिए डाल।
हितैषी हैं वह मेरे
ख़ुद डयोढ़ी पर हैं खड़े
कैसे सकती हूं लांघ?

बेटा जवान
पुरुषों की हिरासत का,
होनहार हक़दार।

मां का सम्मान
दे सकता है जान।

मां कहीं चोट न खाए
गिर न जाए
थाम कर खड़ा है
एक ही जगह पर
सीमाओं का पहरेदार
वह चौकन्ना, तैनात।

मेरे तीन-तीन शुभचिंतक
मेरे तीन-तीन प्रतिरक्षक
उनकी तीन-तीन पीढ़ियां गुज़र गईं।

फिर भी मैं क्यूं खड़ी
वहीं की वहीं रह गई
सुरक्षित
प्रतिरक्षित
पिरामिड की ममी सी।

पिचकारियाँ

■ रेखा मैत्र, अमेरिका

तुम्हारी ढेरों पिचकारियाँ
अब भी वैसी ही पड़ीं हैं
मैं उनसे तुम्हारी
भोजन नली में
तरल भोजन दिया करती
और तुम कहा करते
कि इन्हें संभाल कर रखना
होली पर इनसे रंग खेलेंगे

अब जब तुम यहाँ से
दूर चले गए हो
तो आकाश को देखती हूँ
और सोचती हूँ
कि इस बार क्या
समूचे असमान को रंगना होगा
ताकि रंग तुम तक पहुँचें
या कि खुद को रंग डालूँ
क्योंकि तुम तो मुझ में ही घुले मिले हो!

कभी नहीं...

■ *डॉ. पद्मजा बिजय दास, अमेरिका*

ओ शब्द
मेरे मीत
मेरी उर्मी को मेरे गीतों में मत जकड़ना
मेरी प्रीति को रिश्तों में कैद न करना
मेरी भक्ति को तराज़ू में न तोलना
क्योंकि --

वटवृक्ष को 'बोनसाय' कर भी लोगे
वो सुन्दर तो दिखेगा
लेकिन उसके अनाथ आँसुओं को 'बोनसाय'
कभी नहीं कर पाओगे ...
कभी नहीं ...

कलाई पर बंधा वक्त

■ *रेखा मैत्र, अमेरिका*

इतना सारा वक्त
क्यों बाँध गए हो
मेरी कलाई पर
अब इतने सारे वक्त का
क्या करूंगी मैं!
इतना तो बता जाते!
पथराई आँखें देख रहीं हैं
फैले हुए वक्त को...

Personalized Investment Advice

For individual Investors

Member CIPF

Edward Jones®

Serving Individual Investors

Harvinder Anand
Investment Representative

- GICS
- Bonds
- Stocks
- Mutual Funds
- RRSPS RRIFS RESPS
- Life insurance
- Disability Insurance
- Critical Illness Insurance

INSURANCES AND ANNUITIES ARE OFFERED BY
EDWARD JONES INSURANCE AGENCY

Phone No: 905-472-8300 www. edwardjones.com

30 New Delhi Drive, Suite 66, Markham ONT. L3S 0B5

पापा-माँ मुझे माफ़ कर दें

◆ रचना श्रीवास्तव, अमेरिका

रोमा एक बहुत प्यारी सी लड़की है। वह आर्डमोर ओक्लाहोमा में रहती है। शाँत और कम ट्रेफिक वाली यह एक छोटी सी पर बहुत ही सुंदर जगह है। रोमा क्लास तीन में पढ़ती है। वह अक्सर ही अपने माँ-पापा के साथ वॉलमार्ट जाती है। वहाँ से सामान खरीदने और ट्राली में रखने में उसे बहुत मज़ा आता है। पर उसकी एक गन्दी आदत है जहाँ वह कुछ भी अपने मतलब का देखती है तो लेने की ज़िद्द करने लगती है। चाहे उस चीज़ की ज़रूरत ना भी हो, उसको भी लेना चाहती है। पापा बहुत समझाते- बेटा जो ज़रूरी है वही लेना चाहिए। पैसे बेकार में खर्च नहीं करने चाहिए। पर रोमा समझने की बजाए और भी परेशान करती। पापा का कहना ना मानती। अब तो पापा ने उसे कहीं भी शॉपिंग पर ले जाना बंद कर दिया था। माँ-पापा बहुत परेशान थे। जब कहीं बाहर घूमने जाते तो किसी भी मार्केट में जाने से वे घबराने लगे थे क्योंकि रोमा पुनः शुरू हो जाती यह ले लो वह ले लो। ये चाहिए, वो चाहिए।

एक दिन रोमा स्कूल से घर आई। माँ ने कहा 'रोमा अपना होमवर्क करने के बाद मैथ का ये एडिशन करना है।'

'पर माँ ये तो मैं क्लास ... में कर चुकी हूँ, अब ये सिंपल वाले मैथ नहीं होते मेरी क्लास में। फिर इनको करने का क्या फायदा?'

'अरे तो क्या हुआ फिर कर लो।'

'माँ प्लीज़ इस का कोई यूज़ नहीं है फिर क्यों करूँ?'

'अच्छा बेटा चलो कोई बात नहीं, यह जो एनीमल वाली बुक है न इस को पढ़ लेना।'

'माँ यह तो मैं पढ़ चुकी हूँ।'

'बेटा तो दोबारा पढ़ लो।'

'पर माँ...'

'पर वर कुछ नहीं, बेटा आप इस को पढ़ें।'

'पापा देखिये न माँ वह मैथ करने को कह रही है, जिसका इस क्लास में कोई उपयोग नहीं है और वह बुक पढ़ने को कह रही है, जिसको मैं पहले पढ़ चुकी हूँ।'

'बेटा आप इतना परेशान क्यों हो रहीं हैं? माँ ने कुछ गलत तो नहीं कहा है। आप भी तो बाज़ार में हर सामान खरीदने को कहती हैं, जो आप के पास है, पर थोड़ा सा अंतर है तो उस को लेने को कहती हैं या फिर जिस की आप को कोई जरूरत नहीं है, उस को भी लेने के लिए कहती हैं।'

ये सुन कर रोमा को एहसास हो गया कि वो कितना ग़लत करती है, आज वो समझ गई थी, जिस चीज़ की ज़रूरत न हो वह नहीं लेनी चाहिए।

"पापा-माँ मुझे माफ़ कर दें.. अब मैं ऐसा नहीं करूँगी।' ◆

एक विशिष्ट व्यक्तित्व

डॉ. रवि कक्कड़

1984 से कैनेडा निवासी डॉ. रवि कक्कड़ ने अपने डॉक्टरी के पेशे में जो प्रगतिशील पड़ाव पार किये हैं उन पर हर प्रवासी को गर्व होना चाहिए। आप पेशे से एक मनोवैज्ञानिक डॉक्टर हैं। आपने न्यू न्युफौंड लैंड मेमोरियल विश्वविद्यालय में साईकैट्रिक शिक्षण व शोध कार्य में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आपके मेडिकल पुस्तकों एवं मेडिकल जर्नल्स में अनेकों लेख प्रकाशित हुए हैं। जिनके आधार पर अनेकों औषधियों का उत्पादन हुआ है। इतना ही नहीं, आपने सामाजिक सेवाओं के माध्यम से अनेकों डॉक्टरों, वकीलों, फार्मेसियों की सेवा की है। आप टी.वी., रेडियो तथा मीडिया के द्वारा मानसिक स्वास्थ पर अपने विचार प्रस्तुत करते रहे हैं।

2010 में आप ब्रिटिश पार्लियामेंट के द्वारा अपनी विशिष्ट सेवाओं के लिए पुरस्कारित किये गए। 2011 में आप भारतीय गणतन्त्र दिवस के अवसर पर भारत के प्रधानमंत्री आदरणीय मनमोहन सिंह द्वारा पुरस्कृत किये गये। इस प्रकार के सम्मान बहुत ही कम लोगों को उपलब्ध हो सके हैं।

कक्कड़ जी एक सरल, योग्य, नम्र, भावुक, संवेदनशील, अल्पभाषी व्यक्ति हैं। आप एक आदर्श पति, 3 बच्चों के परम स्नेही पिता और समाज के एक उत्तरदायी पथप्रदर्शक हैं। आप जिस काम को हाथ में लेते हैं उसे बहुत सावधानी से पूरा करते हैं। आप अपने मानसिक रोगियों की बात बहुत ध्यानपूर्वक सुनते हैं और उनके उपचार में कोई कसर नहीं छोड़ते। डॉ. कक्कड़ एक कुशल अनुभवी डॉक्टर हैं जिनका नाम श्रृद्धा और सम्मान से लिया जाता है। आप टोरंटो नगर के गिने-चुने प्रमुख व्यक्तियों में अपना स्थान रखते हैं। निःसंदेह आप एक सच्चे देशभक्त और समाज का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखते हैं। आपको जीवन में अनेकों बार राजनैतिक पदों पर निर्वाचित होने के लिए अवसर प्राप्त हो चुके हैं। उनका विश्वास है कि वे एक दिन इस देश की संसद के सदस्य बनेंगे।

विशेष कार्य-पुरस्कार एवं सम्मान : 26 जनवरी 2011 गणतन्त्र दिवस के अवसर पर 'हिन्द रत्न' से सम्मानित किया गया।

सितम्बर 2010 ब्रिटिश हाउस ऑफ लार्ड, लन्दन में प्रवासी स्वर्ण मेडल से सम्मानित किया गया।

2010 में कैनेडा की ओर से स्वर्ण मेडल।

कैनेडा के प्रधानमंत्री आदरणीय श्री स्टीफन हार्पर द्वारा विशेष प्रमाण पत्र।

कैनेडा की कन्जर्वेटिव पार्टी के फंड रेजिंग समिति के प्रमुख संचालक। इसके अतिरिक्त आपने अनेकों सामाजिक, मेडिकल, व मानसिक पीड़ित लोगों के लिए धन एकत्रित करने के कार्यों में सक्रिय भाग लिया।

लघुकथा

मंत्रीजी का विश्वास

◆ *महेश द्विवेदी, भारत*

एक मंत्री एक महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर छात्रों को सम्बोधित करते हुए कह रहे थे, 'इस वर्ष भारत की आर्थिक विकास दर आठ प्रतिशत से अधिक रहेगी, जो अमेरिका, ब्रिटेन, जापान जैसे विकसित देशों की दर से कई गुनी अधिक है। हमारा विश्वास है कि इस दर से हम कुछ वर्षों में ही जापान को पछाड़कर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जायेंगे...'

एक छात्र, जो जाटों द्वारा आरक्षण हेतु किये जाने वाले विध्वंस के कारण अपने मृत्युशैय्या पर पड़े पिता को देखने घर नहीं जा पाया था, अपने को न रोक पाया और बीच में बोल पड़ा,

'सर! जापान में प्राकृतिक आपदा के रूप में भूकंप आया और सुनामी लाया, भवन ढह गये, आवागमन के मार्ग ध्वस्त हो गये एवं न्यूक्लियर प्लांट अग्नि उगलने लगे। शासन ने सबसे शांत रहकर त्रासदी को सहने एवं एक-दूसरे की सहायता कर देश को पुनर्निर्मित करने की अपील की। सब अपने-अपने काम में जुट गये - न कहीं आपाधापी, न कहीं लूटपाट और न रेडिएशनग्रस्त न्यूक्लियर प्लांट से अपने को स्थानांतरित कराने का अभियान। परिणामतः देश में कम्पित आत्मविश्वास पुनर्स्थापित होने और जनजीवन सामान्य होने लगा।

इन्हीं दिनों उत्तरप्रदेश में सबसे अधिक भूमि-समृद्ध, धन-समृद्ध एवं बाहुबल-समृद्ध जाटों द्वारा सरकारी नौकरियों में योग्य अभ्यर्थियों का हक मारकर आरक्षण प्राप्त करने हेतु रेल-लाइनें ढहाई गईं, आवागमन ध्वस्त किया गया एवं रेल-सम्पदा में आग लगाई गई। उत्तरप्रदेश का शासन, जिसका संवैधानिक दायित्व कानून-व्यवस्था बनाये रखने का है, पहले निष्क्रिय रहकर विध्वंस को देखता रहा और फिर उसने विध्वंसकों का उत्प्रेरक बनकर केंद्र शासन से संस्तुति कर दी कि उनका दल जाटों को आरक्षण दिये जाने के पक्ष में है। परिणामतः जाटों ने हरियाणा, राजस्थान आदि में भी रेल व रोड मार्ग रोककर विध्वंस प्रारम्भ कर दिया। ...क्या आपको विश्वास है कि कुछ वर्षों में हमारे नेता भारत को एक देश रहने देंगे अथवा शूद्र-देश, पिछड़ा-देश एवं अगड़ा देश में बांट देंगे?'

मंत्री जी निरुत्तर एवं विचारमग्न होकर अपनी कुर्सी पर बैठ गये थे।

◆

बेटियाँ

लघुकथा

◆ आकांक्षा यादव, अंडमान-निकोबार

अपनी जवानी के दिनों में कुलवंत सिंह ने बेटों को कोई तकलीफ़ नहीं होने दी। उनकी हर फरमाइश पूरी की। उनके दो बेटे थे। पड़ोसियों और रिश्तेदारों से बहुत गर्व के साथ कहते कि ज़रूर पिछले जन्म में कुछ अच्छे काम किए थे कि ईश्वर ने उन्हें दो-दो बेटे दिए। वह बार-बार अपने पड़ोसी राधेश्याम को सुनाते रहते, जिनके पास तीन लड़कियाँ थीं। वक्त बीतने के साथ कुलवंत सिंह के दोनों बेटे अच्छी नौकरी पाकर विदेश में सेटल हो गए, वहीं राधेश्याम तीनों बेटियों की शादी कर मानो गंगा नहा लिये हों।

अचानक कुलवंत सिंह की तबियत बिगड़ी तो अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। बेटों को संदेश भेजा तो छुट्टी न मिलने की समस्या बताकर उन्होंने हाथ खड़े कर दिए। उनकी पत्नी अकेले अस्पताल में पड़ी रहीं, पर बुढ़ापे में कितना दौड़तीं। अगले दिन राधेश्याम, कुलवंत सिंह का हाल-चाल लेने अस्पताल पहुँचे तो साथ में बेटी भी थी। राधेश्याम ने जब कुलवंत सिंह की स्थिति देखी, वह तो बेहोश पड़े थे। कुलवंत की पत्नी ने बताया कि बेटों का आना मुश्किल लगता है, अकेले कितनी भाग-दौड़ करूँ।

इतना सुनते ही राधेश्याम की बेटी ने तपाक से कहा- 'हम हैं न आंटीजी, आप चिंता मत कीजिए।'

दवाओं के लाने से लेकर फल व खाना लाने तक का कार्य राधेश्याम व उनकी बेटी ने कर दिया। जब कुलवंत सिंह को होश आया तो सामने राधेश्याम व उनकी बेटी को देखकर फफक-फफक कर रो पड़े। बस उनके मुँह से इतना ही निकला कि तुम्हारी बेटियाँ तो बेटों से भी बढ़कर हैं।

पुस्तक समीक्षा

रेखा मैत्र के 'बेनाम रिश्ते'

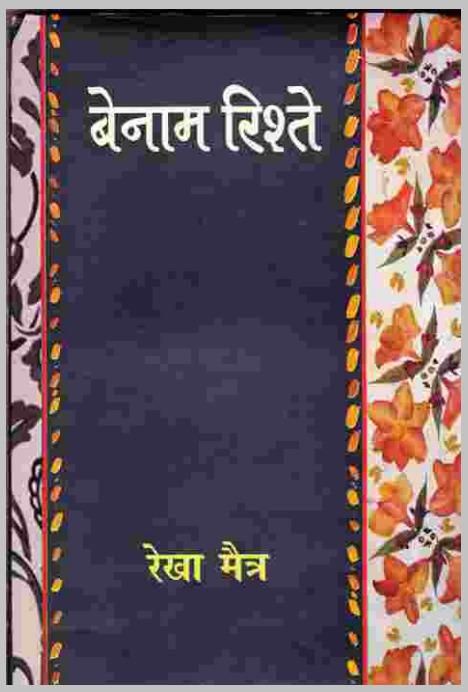

✍ *गुलशन मधुर, अमेरिका*

बेनाम रिश्ते के मुख आवरण के पार्श्व पर रेखा मैत्र की कविताओं को 'आधुनिक ज़िंदगी से मोहभंग की कविताएं' कहा गया है। यह बात कुछ उलझन में डाल गई, क्योंकि मुझे रेखा के इस नवीनतम संग्रह की कृतियां दरअसल जीवन के विविध पक्षों के प्रति गहरे आकर्षण की, जीने के प्रति अनुराग की कविताएं जान पड़ीं, जिनमें कवयित्री अपने आस-पास को लेकर और परिचितों-अपरिचितों के संबंध में अदम्य लगाव से, साथ ही गहरे कौतूहल से, सराबोर दिखाई देती है। एक सामान्य पाठक के रूप में संग्रह की हर रचना एक मुखर सकारात्मक संदेश के रूप में प्रस्तुत होती लगती है। यह बात और है कि आशा की परिणति तक पहुंचने में रेखा कई कठिन मरहले तय करती हैं, जो सचमुच इतने छोटे कलेवर की रचनाओं के रास्ते शायद रेखा ही कर सकती हैं। जैसे कि एक नन्ही सी क्षणिका के सहज संक्षेप में संबंधों की मलिनता के बीच भी जीवन के पुष्पित होने का यह संदेश :

आत्मा का कमल
जो रिश्तों के कीचड़ में जन्मा है
उन्हें छोड़कर कहां जाएगा?
वही तो उसकी नियति है
उन्हीं के बीच उसे खिलना होगा।

जैसा कि इन पंक्तियों से स्पष्ट है, कवयित्री पंकज को जन्म देने वाले पंक से बेख़बर नहीं है। लेकिन उसका ध्यान कीचड़ पर नहीं टिकता, बल्कि उसमें से एक आश्चर्य की तरह अंकुरित हो उठने वाले फूल पर जा केंद्रित होता है। जीवन की विकृतियों और निराशाओं के तमस में से उमगने वाली उजली उम्मीद पर। संबंधों से मिलने वाली निराशा भी इस रचनाकार के काव्य की जन्मभूमि बन जाती है, जैसे 'टीस' शीर्षक रचना की ये सतरें :

तुमसे मिला तिरस्कार
मेरे सर माथे पर
वो और वक़्त था
कि वजूद सारा ढहने लगता था
अब तो गुलमोहरी रूह को
ज़रा सी ठेस लगी
कि काग़ज़ी ज़मीन पर
कविता की पांखुरी बिखरी।

रेखा मैत्र का यह आशावादी जीवनबोध संग्रह की लगभग हर रचना से झांकता दिखाई देता है। यह अग्रदर्शी सोच कभी एक उजली आशावादिता के रूप में व्यक्त होती है और कभी समूह को पीछे छोड़ कर अपना एक अलग रास्ता बनाने के संकल्प के रूप में :

देर तक भीड़ के समंदर में
डूबती-उतराती रही
कोलाहल का आनन्द लेती रही
क़ीमती होने के अहसास को जीती रही
धीरे-धीरे वह ख़याल बेमानी लगने लगा
तब निकल आई भीड़ से
अकेले अक्षर सी
मैं शब्द होना चाहती हूं
स्वयं को अर्थ देना चाहती हूं।

हार मानना इस कवयित्री की जीवन दृष्टि का सत्य नहीं है। उसके अहसास में फूल जैसी

कोमलता ज़रूर है, पर जहां स्नेह–संबंधों से जुड़ी उसकी अनुभूति एक गहरे संवेदन के रूप में प्रतिभासित होती है, वहीं अस्तित्व के संकटों से जूझ जाने का उसका आग्रह कैक्टस की तरह कठोर है :

यह जो कंटीली ज़ात वाली
विरल सी लाल कली
तोहफ़े की सूरत में भेजी
वह इतना तो बता गई
कि मैं ज़रूर कैक्टस सी
मज़बूत काठी से बनी हूं
वर्ना ज़िंदगी के रास्ते में
बिखरे ढेरों कांटे
कब का मुझे ज़ख़्मी कर डालते
शायद वजूद ही मिटा डालते।

रेखा मैत्र की कविताएं, विशेष रूप से 'बेनाम रिश्ते' की रचनाएं, जैसा कि संग्रह के नाम से ही स्पष्ट है, बुनियादी तौर पर मानव–संबंधों की कविताएं हैं। ये संबंध ही वह उपजाऊ ज़मीन है, जिससे रेखा की कविताओं के अंकुर फूटते हैं। रिश्तों को परिभाषाओं में समेटना उन्हें सीमित करना है। इस संग्रह को नाम देने वाली कविता 'बेनाम रिश्ते' रेखा की इस सोच की तर्जुमानी करती है।

कोई–कोई रिश्ता
नामों का मोहताज नहीं होता
उस एक रिश्ते में
ढेरों रिश्ते घुले होते हैं
दूध में चीनी की तरह
सिर्फ़ ज़ायके से
उसका होना मालूम होता है।

सचमुच कुछ रिश्तों को नामों की क़ैद में बांधना सहज भी कहां होता है? उन्मुक्त विचरते पंछियों को पिंजरों में बंद रखने जैसा। संकलन की पहली ही रचना कवयित्री के इस उल्लसित उद्घोष से शुरू होती है :

लो कर दिए अब रिश्ते
नामों की क़ैद से आज़ाद मैंने
उड़ने लगे वे खुले आसमान में
अपने ख़ूबसूरत पंख फड़फड़ाते।

ये संबंध कई अलग–अलग आयामों में उजागर होते हैं, जो रचनाकार के नितांत निजी संग–साथ की सीमित परिधि से कहीं आगे निकलकर, कहीं अधिक व्यापक परिवेश को अपने में समेटते हैं। वर्षों के प्रवास के बाद १५ अगस्त का दिन उसके लिए अब भी गृहविरह की कचोट से भरा है। यही नहीं, संबंधों का यह भावनात्मक दायरा पूरे ग्रह को अपनी परिधि में बांधता है, 'वसुधैव कुटुम्बकम' की उक्ति को चरितार्थ करते हुए। कवयित्री 'रिश्तों की ज्यामिति' से निकलकर अफ़्रीका की अलगनी पर टंगे कपड़े देख पाती है और स्वयं को, हैज़े के शिकार होते लाखों बच्चों की त्रासद कहानी का हिस्सा बना देखती है।

रेखा की कविताओं की एक निरपवाद विशेषता इस संकलन में भी बरकरार है। वह यह कि ये कविताएं भावनाओं का बेचैन उत्सर्जन नहीं हैं, बल्कि उनमें एक वयस्क ठहराव है। यथार्थ की एक ऐसी स्वीकृति, जो हार मानने का संकेत नहीं है, बल्कि संबंधों की पेचीदगियों के सत्य का सहज स्वीकार है। जीवन जैसा है, उसे वैसा मान लेना। कभी संगीत की एक सुहानी धुन जैसा, कभी सच्चे सुर की किसी भटकती तलाश सा :

ज़िंदगी एक सितार सी है
कभी तो सारे तार कसे रहें
गीत–संगीत झरता रहे
और कभी सारे तंतु ढीले
कोई सुर ही न बजे
एक ख़ामोशी पसरी रहे
उदास सी, मायूस सी।

ठहराव का यह तत्व शैली की एक अनूठी सहजता के रास्ते अभिव्यक्त होता है। संप्रेषण में यह निरायासता रचनाकार के व्यक्तित्व का ही अंग हो सकती है। लगता है जब रेखा काग़ज़ पर कलम उतारती हैं, तब तक पूरी शिद्दत के साथ महसूस की गई अनुभूति एक मंथन से, अवचेतन में जारी आसवन की एक प्रक्रिया से गुज़र चुकी होती है। तब तक दुविधा और डूबने–उतराने के अस्थिर क्षण जा चुके होते हैं और पंक्तियां बिना किसी वागाडंबर का आधार पकड़े अहसास की सतह पर उभर आती हैं – शैली के छल से रहित। रेखा की सतरें कुछ ग़ज़ब कर गुज़रने के दंभ के बिना पाठक से सीधे–सहज तादात्म्य की मांग करती हैं, पाठक के प्रति पूरे सम्मान के साथ। एक उदाहरण है नन्ही सी कविता 'प्यार के छींटे' :

अकेले ही पार किया था उसने
ज़िंदगी का तपता–जलता रेगिस्तान
प्यार तो कुछ ऐसे ही आया
कि जैसे तपती कड़ाही में
पानी के कुछ छींटे पड़ें
छन्न से नाचते–नाचते
खट्ट से अदृश्य हो जाएं।

आकार की ऐसी लघुता के साथ–साथ कथ्य की सूक्ष्म मार्मिकता रेखा मैत्र की कविताओं को अपनी एक पहचान, एक अलगपन देती है। दो छोटे–छोटे उदाहरण :

मुझे छोटा दिखाने में
जितने लफ़्ज़ बरबाद करते हो
उससे आधे लफ़्ज़
ख़ुद को बड़ा करने में
ख़र्च करते तो अब तक
तुम्हारा क़द कितना लंबा
निकल आया होता
और
मिलने को मन था
तो यूं ही चले आना था
बीच में बेचारे
बहाने को क्यों लाना था।

एक बात और अक्सर किसी कविता–संग्रह की कुछ कृतियां शेष रचनाओं के मुक़ाबले अधिक ध्यान खींचती हैं। कहें, अधिक बेहतर बन पड़ी होती हैं। 'बेनाम रिश्ते' संकलन इस रूढ़िगत धारणा को चुनौती देता जान पड़ता है। चुनना मुश्किल है कि संकलन की कौन सी कविता किस अन्य कविता की तुलना में बेहतर है या कमतर। ◆

विचार योग्य संग्रह है

कौन-सी ज़मीन अपनी

अखिलेश शुक्ल
ख्यात ई-समीक्षक,
लेखक व साहित्यकार

यह विश्व जितना पुराना है उतनी ही पुरानी कहानियाँ भी हैं। मानव ने जन्म लेने के पश्चात अपने आपको जीवन संघर्षों के मध्य पाया है। उसके संघर्ष संवेदनाओं के साथ मिलकर कहानी का आकार ग्रहण करते रहे हैं। पाश्चात्य के साथ-साथ भारतीय समाज ने एक समान स्थितियों का सामना किया है। यह अलग बात है कि उसके संघर्ष का रूप समयसापेक्ष रहा है।

पाश्चात्य कथाकारों ने जिस रूप में जीवन को समझा था ठीक उसी रूप को थोड़े फेरबदल के साथ भारतीय कहानियों में भी महसूस किया जा सकता है। प्रत्येक कथाकार अपने आसपास के वातावरण तथा परिवेश से कथानक प्राप्त करता है। यही तत्व उसके मस्तिष्क को आंदोलित करते रहते हैं। मानव मस्तिष्क के अंदर दैनिक जीवन के अनुभव नई रचना का निर्माण करते हैं। वह रचना तब कहानी कहलाती है जब वह मनुष्य के जीवन से श्रृंखलाबद्ध रूप में जुड़ी होती है।

ख्यात कथाकार प्रेमचंद ने भारतीय कृषकों, दलितों तथा गरीबों की पीड़ा को जिस रूप में अपने कथानक का माध्यम बनाया था लगभग वही परिस्थितियां कुछ परिवर्तन के साथ आज भी विद्यमान हैं। डॉ. सुधा ओम ढींगरा की कहानियाँ प्रेमचंद की कहानियों की अगली कड़ी कही जा सकती हैं।

यद्यपि प्रेमचंद के समान उनकी कहानियों में भारतीय ग्राम्य जीवन का गहन गंभीर चित्रण नहीं है किंतु फिर भी जनमानस की पीड़ा से उनका जुड़ाव साफ़ दिखाई देता है। सामान्यतः विदेशी हिन्दी साहित्यकारों पर यह आक्षेप लगाया जाता रहा है कि वे केवल आधुनिक विश्व पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। उनका सृजन आधुनिकता तथा पाश्चात्य चकाचौंध तक सीमित है। यह हो सकता है कि कुछ अन्य विदेशी लेखक रचनाकार जो अपने देश की मिट्टी और उसकी सौंधी खुशबू से अलग हो गए हों, उनकी रचनाओं में अत्याधुनिकता मिले? लेकिन डॉ. सुधा ओम ढींगरा के संबंध में यह

कहा जा सकता है कि इतने लम्बे अंतराल के बाद भी उनकी कहानियों में भारतीय समाज के दर्शन होते हैं।

भारतीय रचनाकारों के साथ सबसे बड़ी सुविधा यह है कि वह प्रतिदिन यहाँ की परिस्थितियों से वाकिफ़ होता रहता है। वह समाज की विद्रूपताओं तथा विसंगतियों के संपर्क में भी लगातार रहता है। लेकिन किसी आप्रवासी के लिए इन परिस्थितियों से परिचित होना संभव नहीं है। उसे तो केवल दूसरों के अनुभवों को आधार बनाकर ही यहाँ की स्थितियों का आकलन करना पड़ता है। सुधा ओम ढींगरा ऐसी कथाकार हैं जिनके सृजन में भारतीय परिवेश तथा सामाजिक परिस्थितियों का विवरण देखकर आश्चर्य होता है। आखिर किस तरह से वे यहाँ के जनमानस से जुड़ती होगीं? विदेशी हिन्दी रचनाकारों, लेखकों में वे अकेली ऐसी हस्ती हैं जो रिश्तों के बिखरने के पश्चात भी अपनी ज़मीन तलाश करती रही हैं। उनका सृजन 'टारनेडो' से 'एग्ज़िट' होते हुए भी 'क्षितिज से परे' चला जाता है। आश्चर्य का विषय है कि आखिर क्यों हिंदी के आलोचकों, समीक्षकों का ध्यान उनके सृजन पर नहीं गया है। जबकि उनके अब तक अनेक काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, अनुदित उपन्यास, काव्य सी.डी. तथा अन्य रचनाएँ प्रकाश में आ चुकी हैं।

डॉ. सुधा ओम ढींगरा आधुनिक होते हुए भी भारतीय परंपराओं से जुड़ी हैं। उनकी कहानियों में जहाँ एक ओर पंजाब का परिवेश, मक्के की रोटी, महावर के चटख लाल रंग तथा मेंहदी की कत्थई झलक है। वहीं दूसरी ओर अमरीका का अत्याधुनिक संसार भी है। वे न तो प्रगतिवाद का प्रतिकार करती हैं और न ही आधुनिकता की अनंत सीमा तक पक्षधर हैं। उनकी कहानियों को किसी वाद, परंपरा अथवा शैली में बांधकर उसका आनंद नहीं प्राप्त किया जा सकता है। उनकी कहानियों का रसास्वादन तभी हो सकता है जब पाठक अपने ज़ेहन में उस वातावरण तथा परिवेश को

डॉ. सुधा ओम ढींगरा आधुनिक होते हुए भी भारतीय परंपराओं से जुड़ी हैं। उनकी कहानियों में जहाँ एक ओर पंजाब का परिवेश, मक्के की रोटी, महावर के चटख लाल रंग तथा मेंहदी की कत्थई झलक है। वहीं दूसरी ओर अमरीका का अत्याधुनिक संसार भी है।

साकार कर ले। संग्रह की प्रथम कहानी है 'कौन सी ज़मीन अपनी' यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर वर्षों से अपना घर-बार छोड़कर विदेश में रह रहे भारतीय के दिमाग में कौंधता रहा है। स्वदेश में रह रहे अपने परिवार का ख्याल रखते हुए व्यक्ति परदेश में यह आशा लिए रहता है कि जब वह स्वदेश लौटेगा तो उसे अपनापन मिलेगा। मनजीत जैसे न जाने कितने लोग हैं जिन्होंने स्वदेश में इस आशा में अपना घर बनाया था कि लौटकर अपनों के बीच रहेंगे। लेकिन एक रात जब वह पानी-पीने उठा तो दोनों भाई और दारजी की बातें सुनकर उसका शरीर पसीने से भीग गया। चलने की हिम्मत नहीं रह गई, शरीर की ऊर्जा जैसे लुप्त हो गई थी। जिस ज़मीन को अपना समझा था उसी में दफ़न किए जाने की तैयारी हो तो कौन वहाँ रुकेगा? उसके द्वारा भेजे गए डालर पर तैयार किया गया उसका सपना उसके सामने ही टूटकर बिखर गया था। सुधा जी ने बहुत ही मार्मिक ढंग से कहानी का तानाबाना तैयार किया है। अंत तक लगता है कि मनजीत तथा मनविंदर को वह ज़मीन मिल जाएगी जिसकी उन्हें तलाश है। लेकिन अनेक लोग हैं जो अब भी यह पूछते हुए भटक रहे हैं कि आखिर 'कौन सी ज़मीन' उनकी है?

संग्रह की एक अन्य कहानी है 'एग्ज़िट'। यह कहानी अमरीका की मंदी के दौर की भयावहता को उजागर करती है। मेहता परिवार के पास सब कुछ है। सम्पन्नता, घर, बैंक बेलेन्स आदि। लेकिन न तो संतोष है और न ही उनके जीवन में वह मधुर संगीत है जिसकी चाहत हर किसी को होती है। उनका परिवार सम्पन्न होते हुए भी कर्ज़ में डूबा हुआ था। आडंबर तथा झूठी शान-शौकत जब एक झटके में चली जाती है तो फिर व्यक्ति के पास जीवन में एग्ज़िट के सिवाय कुछ नहीं बचता है। कहानी का परिवेश तथा कथ्य भले ही अमरीकी हो पर भारत में भी सम्पन्न परिवारों में अमूमन इसी तरह की परिस्थितियां दिखाई पड़ती हैं। कहानी यह भी स्पष्ट करती है कि कल्पना लोक का विचरण भविष्य के लिए दुःखदायी होता है। अमेरिका में लिखी हुई यह कहानी अच्छे शिल्प में गुथी किसी भारतीय महानगर की कहानी लगती है। यही इस कहानी की सबसे बड़ी सफलता है।

कहानी 'टारनेडो' पाश्चात्य की अपेक्षा भारतीय जीवन मूल्यों की श्रेष्ठता प्रतिपादित करती है। कभी-कभी वंदना सोचती, शायद श्याम भी मीरा में ऐसे ही समाए होंगे? आंतरिक समन्वय प्रेम की ज्योति प्रज्ज्वलित कर देता है, उसकी लौ पूरा बदन प्रेममय कर देती है। फिर बाहरी सुख की इच्छा नहीं रहती। यहाँ तक भारतीय विचार तथा मर्यादा दिखाई पड़ती है। लेकिन इसके पश्चात का कथन अमरीकी आधुनिकता से पाठक का परिचय कराता है। उसने जेनिफर को ये पुस्तकें पढ़ानी चाही, उसने उन्हें देखकर दूर रख दिया। सच है भारतीय दर्शन तथा विचार मीमांसा उतना सरल भी नहीं कि उसे हल्के-फुलके ढंग से देखकर रख दिया जाए। दो पीढ़ियों के मानसिक अंतर्द्वंदों से जूझती, दो संस्कृतियों की पड़ताल करती यह कहानी है। कहानी में केलब का चरित्र किसी भारतीय अधेड़ से बहुत अलग नहीं है।

कहानी 'सूरज क्यों निकलता है?' का परिवेश विदेशी होते हुए भी अंतरात्मा स्वदेशी है। यहाँ मैं कथाकार, उपन्यासकार पंकज सुबीर से सहमत हूँ जिन्होंने इस कहानी के बारे में लिखा है– 'ये कहानी कथा सम्राट प्रेमचंद की याद दिलाती है। इसलिए नहीं कि इसकी कथावस्तु या शिल्प में वैसा कुछ है, बल्कि इसलिए कि इस कहानी के पुरुष पात्र जेम्ज़ और पीटर को लेखिका ने उसी मिट्टी से गढ़ा है जिस मिट्टी से धीसू और माधव को गढ़ा गया था। ये पात्र कोई भारतीय रचनाकार ही गढ़ सकता है।'

'लड़की थी वह' में पंजाब की कड़ाकेदार सर्दी में कपड़ों में लिपटे नवजात शिशु के आसपास कहानी घूमती है। गठरी की तरह से लिपटा हुआ वह बच्चा एक लड़की थी। जिसे किसी अभागिन स्त्री ने फेंक दिया था। कहानी का सुखांत प्रभावित करता है।

'ऐसी भी होली' कहानी में लेखिका ने बहुत ही सुंदर ढंग से नारी मन की निश्छलता को उजागर किया है। कहानी की पात्र वेनेसा का भारतीय परंपरा, संस्कृति तथा मर्यादा के प्रति सम्मान का भाव स्वागत योग्य है।

पंजाब के किसानों की आत्महत्या के इर्दगिर्द घूमती कहानी 'फंदा क्यों' एक ऐसी कहानी है जो बड़ी शिद्दत के साथ इस मुद्दे को उठाती है कि जन्मभूमि से आए समाचारों से भारतवंशियों को जो पीड़ा होती है, लेखिका ने वर्षों से विदेश में रह रहे किसान के माध्यम से उसे व्यक्त किया है। इस कहानी में मुखर रूप से यही भावना उभर कर सामने आई है कि देशवासियों की चोट विदेश में भी महसूस की जाती है। इस संग्रह की बहुत सी कहानियों में लेखिका सामाजिक सरोकारों के प्रति बहुत सजग है और कई मुद्दों की पड़ताल करती है। टूटते परिवार, बुज़ुर्गों की उपेक्षा, स्त्रियों के प्रति अन्याय जैसी बातों की बेचैनी, छटपटाहट, बिखरते रिश्ते, उसका आकाश धुंधला है तथा परिचय की खोज में महसूसी जा सकती है। इन कहानियों में इनका विस्तृत कैनवास पाठक को बांधे रखने में पूर्णतः सफल रहा है।

पुस्तक के फ्लैप पर पंकज सुबीर ने लिखा है – 'क्षितिज से परे' वो कहानी है जिसका ज़िक्र बार–बार किया जाना आवश्यक है। ये कहानी बिल्कुल चौंका देने वाले तरीके से सामने आती है। स्त्री को दोयम दर्जे का समझने वाले पुरुष समाज के प्रति यह एक मौन क्रांति का दस्तावेज़ है। इसमें विद्रोह के लिये कहीं कोई शोर शराबा या नारेबाज़ी नहीं है। बिल्कुल सीधे और सहज तरीके से अपनी बात रखी गई है। आत्ममुग्ध पुरुष के नारसिसिज्म का दंश झेलती एकाकी स्त्री का प्रतिकार इतना सधा हुआ है कि उसकी गूंज हर सन्नाटे को भरती हुई ग़ज़रती है।

'संदली दरवाजा' पहली नज़र में पुरुष के एकतरफा प्रेम की कहानी नज़र आती है। लेकिन इसे विश्लेषित करने पर स्पष्ट होता है कि नायिका के मन में भी कहीं न कहीं नायक के प्रति लगाव रहा है। फिर भले ही वह उसे व्यक्त न कर पा रही हो। सुकेश के दर्पण को पत्र लिखने के पश्चात कहानी सुखांत की ओर मुड़ती दिखाई पड़ती है। सुकेश का अपना सब कुछ दर्पण के नाम करना अधिक स्पष्ट नहीं हो सका है। इस बिंदु पर और विस्तार में जाने की आवश्यकता थी।

कहानी संग्रह 'कौन सी ज़मीन अपनी' के 128 पृष्ठों में समाहित इन 12 कहानियों में पाठकों के लिए बहुत कुछ है। इन्हें पढ़ते हुए उठाए गए मुद्दों पर गंभीरता पूर्वक विचार किए जाने की आवश्यकता है। आशा है कि भविष्य में डॉ. सुधा ओम ढींगरा की अन्य अच्छी कहानियाँ पढ़ने में आयेंगी।

कहानी संग्रह : कौन–सी ज़मीन अपनी
मूल्य : 200 रूपये
प्रकाशक : भावना प्रकाशन, 109–ए, पटपड़गंज, दिल्ली –110091

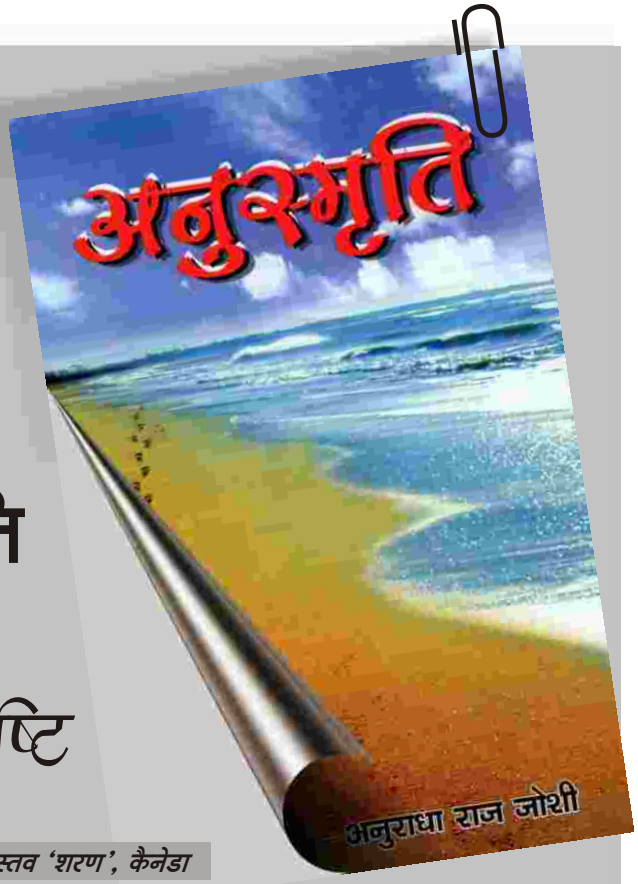

अनुस्मृति पर एक सूक्ष्म दृष्टि

भगवतशरण श्रीवास्तव 'शरण', कैनेडा

"औ अंतर पीड़े खोलो, क्यूँ अधीर तुम इतनी आज'

'मेरे अंतर तल में रहता सदा तुम्हारा ही तो राज'

'मृग तृष्णा' काव्य से साभार

'अनुस्मृति' अनुराधा राज जोशी का प्रथम काव्य संग्रह है। मैंने अनुस्मृति को अनेक बार पढ़ा और पढ़कर लगा कि इतना महान व्यक्तित्व रखनेवाली के हृदय में अथाह पीड़ा और प्रतीक्षा के क्षणों का इतना महान संगम है कि उसको पृथक कर पाना सरल नहीं है।

बाह्य और अंतर जगत में कोई इतना समन्वय कैसे रख सकता है। अपनी प्रतिभा को कोई इतना अन्तर्मुखी कैसे रख सकता है... सराहनीय है। अनुराधा राज जोशी जो कि एक महान कवि स्व. अयोध्या सिंह उपाध्याय की प्रपौत्री थीं। लगता है उनको कवि हृदय विरासत में ही मिला है नहीं तो इतनी गहरी सोच कहाँ से आती।

इनके लेखन के विषय में कह सकता हूँ कि उनके भाव उनका ज्ञान उनकी लेखन शैली अति प्रभावशाली है, जो कि सरल होने के साथ-साथ पाठक पर सीधा प्रभाव डालती है। 'मन करता है' शीर्षक कविता में यह भाव स्पष्ट हो जाते हैं...

मन करता है कोई होता मेरे पास /अंतर्मन की होती बात।

कुछ भरमाती, कुछ कुम्हलाती / कुछ लजाती, बीत जाती रात।

और आगे कहती हैं...

उदास होता है जब मन, कोई कँधा भीग जाता / कोई हाथ उठाता और आँसू समेट जाता।

इतनी गहराई में बैठकर लिखे गये हैं ये भाव जो सत्य ही अनमोल हैं, हृदयस्पर्शी हैं। इनकी भाषा इतनी सरल हिन्दुस्तानी है। जिससे हिंदी और उर्दू का प्रभावशाली मिश्रण है। जिसे सरलता से पाठक समझ सकता है। कुछ एक कृतियाँ अत्यंत गूढ़ भाव लिए हैं, जिससे कवयित्री की गहरी सोच सिद्ध होती है। इनकी रचनाओं में कोई भी बनावटीपन नहीं है।

कुछ रचनाएँ अति लघु और अपूर्ण रह गईं हैं, परन्तु यथार्थ मय हैं। ऐसी बात नहीं कि कवयित्री ने दर्द के अतिरिक्त कुछ और लिखा न हो। उन्होंने अपने आस-पास के जीवन से जुड़ीं घटनाओं और जीवन पर प्रकाश डाला है।

सुनने की मोहलत मिले, तो आवाज़ है पत्थरों में / उजड़ी हुई बस्तियां और आबादी बोलती हैं / मगर कोई नहीं बोलता जब तन्हाइयां बोलती हैं।

इससे यह सिद्ध होता है कि कवयित्री के मन में यह भाव भी उठा कि जो निःशब्द कठोर है पर उनके मन को समझने के लिए उनके मन में झाँकना पड़ेगा। कितने गूढ़ विचार हैं।

मैं यहाँ संक्षेप में कहना चाहता हूँ कि स्वर्गीय अनुराधा राज जोशी एक सफल कवयित्री के रूप में हमारे समक्ष आती हैं। ईश्वर ने उन्हें असमय ही अपने पास बुला लिया नहीं तो कुछ और सुंदर रचनाएँ हमारे समक्ष आतीं। जो भी इस पुस्तक को देखेगा वह कवयित्री के इन कोमल विचारों से अछूता नहीं रह सकता। इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए मैं श्री श्याम त्रिपाठी, सम्पादक, हिंदी चेतना को बधाई देता हूँ कि इन्होंने यह बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। इन्होंने वास्तव में स्व. अनुराधा राज जोशी को साहित्य जगत में सजीव कर दिया। आशा करता हूँ कि पाठक इस पुस्तक का स्वागत करेंगे। ◆

विलोम चित्र काव्य शाला

चित्रकार : अरविन्द नराले
कवि : सुरेन्द्र पाठक

देखिये इस युवक को, कितना बैठा है उदास
बिखरे-बिखरे हैं सर के बाल, जैसे खो बैठा अहसास
थक गया जैसे चलता-चलता, और रस्ते पे आ के बैठा
गले का कपड़ा बाएं से पकड़, दायाँ हाथ अंदर लपेटे
दायाँ गोड़ा टेक ज़मीं पर, बाएं से कोहनी को देके सहारा
दूर-दूर तक कुछ नज़र न आये, सोच रहा है बैठा बिचारा
एकांत में घर था इसका, न दूर-दूर तक पास पड़ोस
अपना हम उम्र ना कोई, हर समय रहता था खामोश
उसके अकेलेपन को समझ, सोचते रहते थे मां-बाप
कैसे इसका दिल बहलाए, किससे कर दें इसका मिलाप?

यही सोचकर एक दिन वो, ले आये कुत्ते का बच्चा
पूरा सफेद रंग था उसका, देखने में भी था वह बहुत अच्छा
फिर लड़के को पास बुलाकर, उन्होंने उसको समझाया
आज से हमने इस कुत्ते को, तेरा साथी है बनाया
इसे संभालना और पालना, यह है तेरी ज़िम्मेदारी
इसको अच्छी बात सिखा दे, दिखा दे अपनी तू हुशियारी
लड़के ने कुत्ते को उसे, फिर बड़े शौक से पाला
देखभाल करके उसकी, बन बैठा उसका रखवाला
कभी वो कुत्ते के पीछे भागे, कभी कुत्ता उसके पीछे
भागे दौड़े खेले कूदे, लौटे एक दूजे के ऊपर-नीचे
कुत्ते ने लड़के के जीवन में, एक नई स्फूर्ति भर दी
कड़वापन जीवन से भागा, जागी दिल में हमदर्दी।

पलटके अब चित्र को देखो, करो लड़के की पहचान
बगल में शील्ड दबाकर भागा, कहीं से जीता है ईनाम
दायें टाँग से उसका कुत्ता, इस तरह से लिपटा जाए
बाएँ हाथ से खेंच के रस्सी, वो कुत्ते को पीछे हटाए
कुत्तों की प्रतियोगिता में, उसका कुत्ता गया है जीत
इतनी ख़ुशी हुई उसको, कुत्ता देख हुआ भयभीत
कुत्ते को पहला ईनाम मिला तो, झट लड़का ऊपर उछला
गर कुत्ता ना टाँग पे चढ़ता, इसके पाँव में जाता कुचला
जो था कुत्ते को सिखलाया, वही कुत्ते ने कर दिखलाया
पर न जाने कुत्ता बेचारा, उसने क्या स्थान है पाया
अपने मालिक का हुक्म मानना, कुत्ता तो बस इतना जाने
रोटी देने वाला दोस्त, बाकी है सब बेगाने

तात्पर्य : बिन साथी के जीवन सूना, साथी हो तो आये बहार
दिल पत्थर में प्यार की अग्नि, जलेगी जब होगा इकरार
मानव का ना साथ मिले, किसी पशु को ही अपना लो
बन जाओ हमदर्दी उसके, उसे अपना हमदर्द बनालो
मानव से न मिलता मानव, कैसे बन पाता यह समाज
वहाँ मुनष्य पहुँच न पाता, जहाँ पहुँचा है वो आज...

चित्रकाव्य-कार्यशाला

ओ नाग देवता!
तुमसे सब डरते हैं
जिसको डस लो तुम
वह साँस नहीं ले पाता
हम तुम्हें देवता कहते हैं
लेकिन तुम कब किसकी सुनते हो
मैं बीन बजाकर तुम्हें यही बतलाता हूँ
तुमको खूब नचाता हूँ
और यही तुम्हें सिखलाता हूँ
मत कभी किसी को काटो!
हो सके तो प्यार सभी में बांटो।

■ प्रीती त्रिपाठी, कनाडा

राधा बावरी हुई
तान मुरली की सुन
भक्त ने सर झुकाया
मन्दिर की घंटी को सुन
नदी ने ली अँगड़ाई
सागर की तरँग को सुन
मानव गया हर उस राह पर
जो वक्त ने ली चुन
सर्प ने बांधे घूंघरू
सुन बीन की धुन।

■ बिंदु सिंह, अमेरिका

सपेरा बीन बजाए
साँप को समझ में न आए
क्यों ये बीन बजे
क्यों वह नाचे...
बीन की मधुर धुन
सपनों के जहाँ में ले जाएँ
साँप भी मद मस्त हो
धुन पर नाच दिखाए...

सपेरा बीन बजा कर रोटी कमाए
साँप नाच कर कला दिखाए
बीन में भी क्या जादू है
पेट की भूख मिटाने को
शहद और ज़हर इकट्ठे रास रचाएं...

■ अदिति मजूमदार, अमेरिका

लगता है तेरा-मेरा परिश्रम
शनैः-शनैः हो रहा सफल
अंततः तुझे आ गया झूमना
जब होता बीन की ध्वनि का सामना
लाया जब तुझे था निर्बल और मरा सा था
खिला-पिला कर तुझे स्वस्थ किया
बनेगा अब मेरा जीवन सहारा तू।

मैं और तू कल शहर जायेंगे
साथ मिल ऐसा खेल दिखायेंगे
गलियों-कूंचों में बच्चे-बड़े
तालियों की गड़गड़ाहट से आकाश गुंजायमान
डलिया में हमारे पैसे बरसेंगे
लौटते घर तुझे केशर दूध
अपने जूते कमीज़ और
पत्नी की साड़ी खरीदूंगा
तुझे अपने बच्चे की तरह मैं रखूंगा
अब तू ही मेरा भाग्य है तू ही जीवन।

■ राज महेश्वरी, कैनेडा

अरे सपेरे तेरी बीन में नहीं कोई है सुंदर राग
तुम्हें सुनाऊं नाग राग मैं जिसमें भरी बहुत ही आग
तेरी बीन न मोह सकेगी मुझको सुनले ओ नादान
मैं मतवाला अति बिषवाला जिसे डसूं दे जीवन त्याग।

■ भगवतशरण श्रीवास्तव 'शरण', कनाडा

इस चित्र को देखकर आपके मन में कोई रचनात्मक पंक्तियाँ उमड़-घुमड़ रही हैं. तो देर किस बात की तुरन्त ही काग़ज कलम उठाइये और लिखिये. फिर हमें भेज दीजिये. हमारा पता है :

HINDI CHETNA
6 Larksmere Court, Markham,
Ontario, L3R 3R1
e-mail : hindicehetna@yahoo.ca

20 मार्च को वाइतवेत सांस्कृतिक केंद्र, ओस्लो में हिंदी स्कूल की ओर से होली का बहुत सुन्दर पर्व विद्यार्थियों और शिक्षकों ने मिलकर मनाया।

इस कार्यक्रम में रंगों से सभी के चेहरे दमक रहे थे। जब सभी होली पर आपस में शुभकामनाएं देने पहुंचे तो अपने चिकने-चेहरों को रंगों से बचा नहीं सके।

नार्वे में होली और हेनरिक इबसेन का जन्मदिन मनाया गया

इतने प्रेम से, बच्चे, शिक्षकों को भरपूर रंग लगा रहे थे कि सारा वातावरण रंगों से सराबोर हो गया। संगीता शुक्ल सीमोनसेन और तरु वानगेन ने इसे होली के पकवानों गुझिया, पापड़ों, मिठाइयों सहित भारत कि याद ताजा कर दी। नार्वे में 31 वर्षों में ऐसी सुन्दर और रंगभरी होली का दिन हमेशा याद रहेगा।

हिंदी स्कूल के ऐसे आयोजनों से नार्वेजीय समाज तथा बच्चों को भारतीय पर्व त्योहारों के बारे में पता चलता है जो सराहनीय है।

वाइतवेत ब्योल्गेन (वाइतवेत लहर) नामक एक सप्ताह चलने वाले कार्यक्रम के अंतर्गत 20 मार्च को ही वाइतवेत सेंटर में लेखक कैफे में नार्वे के विश्व प्रसिद्ध नाटककार का जन्मदिन व्याख्यान, कवितापाठ और कहानीपाठ से संपन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन नार्वे की सांस्कृतिक मंत्री आनिक्केन हयुतवेत ने किया जिन्हें भारतीय-नार्वेजीय सूचना और सांस्कृतिक फोरम की ओर से हेनरिक इबसेन के नाटकों के हिंदी अनुवादों 'गुड़िया का घर', और 'मुर्गाबी' तथा 'गंगा से ग्लोमा तक' की प्रतियाँ स्वयं अनुवादक और कवि सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने भेंट की।

हेनरिक इबसेन का जन्मदिन

कार्यक्रम की अध्यक्षता स्थानीय मेयर थूरस्ताइन विन्गेर थे। जीनोने इबसेन पर व्याख्यान दिया और स्वागत किया माया भारती ने। इस अवसर पर अपनी रचनाएं पढ़ने वालों में मुख्य थे इंगेर मारिये लिल्लेएन्गेन, थूरस्ताइन विन्गेर, फैसल नवाज चौधरी, राजकुमार भट्टी तथा राय भट्टी। आगामी कार्यक्रम विश्व पुस्तक दिवस के रूप में 23 अप्रैल को वाइत वेत कल्चर सेंटर (वाइत वेत स्कूल के पीछे स्थित) में 15.00 बजे मनाया जाएगा। जिसमें सभी अपनी पसंद की पुस्तक से एक कविता या गद्य (टेक्स्ट) का एक हिस्सा पढ़ेंगे।

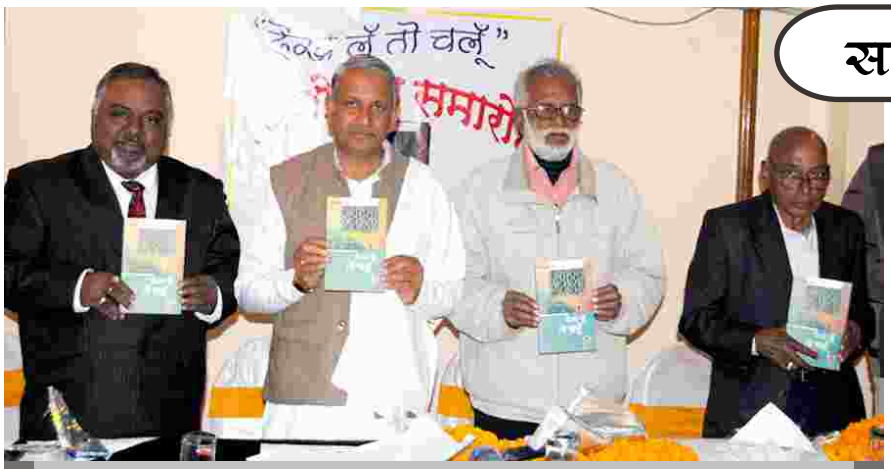

शिवना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित श्री समीर लाल की उपन्यासिका 'देख लूँ तो चलूँ' का विमोचन समारोह

इंटरनेट तथा ब्लाग जगत के चर्चित नाम श्री समीर लाल समीर की लघु उपन्यासिका 'देख लूँ तो चलूँ' का विमोचन गत 18 जनवरी को जबलुपर में देश के शीर्ष कहानीकार श्री ज्ञानरंजन ने किया। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार श्री हरिशंकर दुबे भी उपस्थित थे। ब्लाग जगत में उड़नतश्तरी के नाम से अपना बहुचर्चित ब्लाग चलाने वाले श्री समीर लाल की ये पुस्तक शिवना प्रकाशन से प्रकाशित होकर आई है। यात्रा वृत्तांत की शैली में लिखी गई इस उपन्यासिका में कई रोचक संस्मरण श्री समीर ने जोड़े हैं। जबलपुर के सत्य अशोका होटल के सभागार में आयोजित विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पहल के संपादक तथा देश के शीर्ष कथाकार श्री ज्ञानरंजन उपस्थित थे जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार श्री हरिशंकर दुबे ने की।

दीपक मशाल

संयुक्त राज्य अमेरिका स्थित TheThinkClub (http://www.thethinkclub.com/) हिंदी भाषा की उन्नति के लिए प्रतिबद्ध है। इस ध्येय को साकार करने के हेतु 'थिंक क्लब' एक वार्षिक पुरस्कार की घोषणा करता है। यह वार्षिक पुरस्कार अज्ञात तथा संघर्षरत लेखकों को दिया जाएगा। आप या आपकी संस्था ऐसे किसी भी लेखक या कवि को इस पुरस्कार के लिए मनोनीत कर सकती हैं। मनोनीत लेखक या कवि की रचना उत्तम स्तर की होनी चाहिए। आप किसी की कीर्ति या लेखन को मनोनीत करना चाहें तो उनकी सिफारिश हमें 15 अक्टूबर, 2011 तक अवश्य भेजें। आप निम्नलिखित पते पर हमसे संपर्क कर सकते हैं : The Think Club Publication, PO Box 451, Bloomfield Hills, MI 48303-0451 हमारा ईमेल है:

hindi@thethinkclub.com पुरस्कार की अधिकतम रकम 15,000 (भारतीय रुपया) तक होगी। यह रकम विजेताओं के बीच वितरित किया जाएगा। विजेताओं की संख्या एक से तीन तक हो सकती है। यह निर्णय लेखनी के स्तर पर निर्भर होगा। पुरस्कार का निर्णय केवल 'थिंक क्लब' के द्वारा ही किया जाएगा। पुरस्कार की घोषणा हर वर्ष 28 दिसम्बर को की जाएगी। आपका समर्थन हमारे लिए बहुत मूल्य रखता है। इस योजना के संरक्षक माननीय बाला प्रसाद, डॉ. अजित शाह एवं 'थिंक क्लब' के प्रबंधक/संपादक हैं।

अनिल श्रीवास्तव, अमेरिका

CENTENARY OPTICAL

For A Better View of The World

We Offer Affordable Prices in a Wide Variety of Fashionable Frames & Lenses

Designer Frames,
Contact Lenses: Colored, Toric, Bifocal
Eye Exams on Premises,
Brand Name Sun Glasses
Most Insurance Plans Accepted

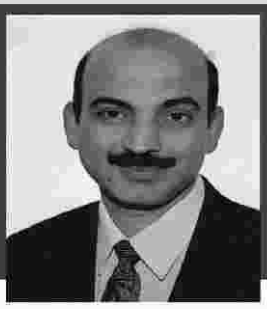

416-282-2030

2864 Ellesmere Rd, @ Neilson Scarborough, Ontario M1E 4B8

RAVI JOSHI
Licensed Optician &
Contact Lens Fitter

❄ ❄ ❄ ❄

SAI SEWA CANADA

(A Registered Canadian Charity)

Address: 2750, 14th Avenue, Suite 201, Markham, ON, L3R 0B6
Phone: (905) 944-0370 Fax: (905) 944-0372
Charity number: 81980 4857 RR0001

Helping to Uplift Economically and Socially Deprived Illiterate Masses of India

Thank you for your kind donation to SAI SEWA CANADA. Your generous contribution will help the needy and the oppressed to win the battle against lack of education and shelter, disease, ignorance and despair.

Your official receipt for Income Tax purposes is enclosed.

Thank you, once again, for supporting this noble cause and for your anticipated continuous support.

Sincerely yours,

Narinder Lal • 416-391-4545

Service to humanity

17वां अंतर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान घोषित।

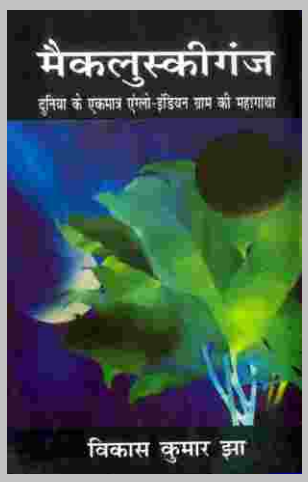

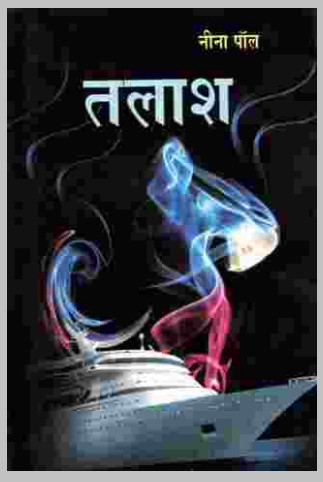

कथा (यू.के.) के महा-सचिव एवं प्रतिष्ठित कथाकार श्री तेजेन्द्र शर्मा ने लंदन से सूचित किया है कि वर्ष 2011 के लिए अंतर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान पत्रकार कथाकार श्री विकास कुमार झा को उनके (राजकमल प्रकाशन से 2010) में प्रकाशित उपन्यास मैकलुस्कीगंज पर देने का निर्णय लिया गया है। यह उपन्यास दुनियां के एक अकेले एंग्लो-इंडियन ग्राम की महागाथा है। इस सम्मान के अन्तर्गत दिल्ली-लंदन-दिल्ली का आने-जाने का हवाई यात्रा का टिकट, एअरपोर्ट टैक्स, इंगलैंड के लिए वीसा शुल्क, एक शील्ड, शॉल तथा लंदन के खास-खास दर्शनीय स्थलों का भ्रमण आदि शामिल होंगे। यह सम्मान श्री विकास कुमार झा को लंदन के हाउस ऑफ कॉमन्स में 27 जून 2011 की शाम को एक भव्य आयोजन में प्रदान किया जायेगा। सम्मान समारोह में भारत और विदेशों में रचे जा रहे साहित्य पर गंभीर चिंतन भी किया जायेगा।

इंदु शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट की स्थापना संभावनाशील कथा लेखिका एवं कवयित्री इंदु शर्मा की स्मृति में की गयी थी। इंदु शर्मा का कैंसर से लड़ते हुए अल्प आयु में ही निधन हो गया था। अब तक यह प्रतिष्ठित सम्मान चित्रा मुद्गल, संजीव, ज्ञान चतुर्वेदी, एस.आर. हरनोट, विभूति नारायण राय, प्रमोद कुमार तिवारी, असग़र वजाहत, महुआ माजी, नासिरा शर्मा, भगवान दास मोरवाल एवं हृषिकेश सुलभ को प्रदान किया जा चुका है।

7 अक्टूबर 1963 को जन्मे विकास कुमार झा ने सोशियॉलोजी में एम.ए. की डिग्री हासिल की है। वे रविवार, आउटलुक एवं माया जैसी पत्रिकाओं के संपादन विभाग से जुड़े रहे। आजकल वे राष्ट्रीय प्रसंग पत्रिका के संपादक के रूप में कार्यरत हैं। वे हिन्दी एवं अंग्रेज़ी में समान रूप से लिखते रहे हैं। सम्मानित उपन्यास के अतिरिक्त उनका कविता संग्रह इस बारिश में, उपन्यास भोग, निबन्ध संग्रह/परिचय पत्र एवं स्वतंत्र भारत का राजनीतिक इतिहास/सत्ता के सूत्रधार प्रकाशित हो चुके हैं। वे टेलीविज़न पर ऐंकर के रूप में भी काम कर चुके हैं।

इस कार्यक्रम के दौरान भारत एवं विदेशों में रचे जा रहे हिन्दी साहित्य के बीच के रिश्तों पर गंभीर चर्चा होगी।

वर्ष 2011 के लिए पद्मानन्द साहित्य सम्मान इस बार लेस्टर निवासी कथाकार एवं ग़ज़लकार नीना पॉल को उनके उपन्यास तलाश (अयन प्रकाशन) के लिये दिया जा रहा है। अम्बाला (भारत) में जन्मी नीना पॉल ने एम.ए., बी.एड. की डिग्रियों के अतिरिक्त संगीत की भी बाक़ायदा शिक्षा ली है। सम्मानित उपन्यास के अतिरिक्त उनके पांच ग़ज़ल संग्रह कसक, नयामत, अंजुमन, चश्म-ए-ख़्वादीदा, मुलाक़ातों का सफ़र और एक उपन्यास रिहाई प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी ग़ज़लों का एक ऑडियो सी.डी. कसक के नाम से भी जारी हो चुका है।

इससे पूर्व ब्रिटेन के प्रतिष्ठित हिन्दी लेखकों क्रमशः डॉ. सत्येन्द श्रीवास्तव, दिव्या माथुर, नरेश भारतीय, भारतेन्दु विमल, डॉ. अचला शर्मा, उषा राजे सक्सेना, गोविंद शर्मा, डॉ. गौतम सचदेव, उषा वर्मा, मोहन राणा, महेन्द्र दवेसर एवं कादम्बरी मेहरा को पद्मानन्द साहित्य सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है।

कथा यू.के. परिवार उन सभी लेखकों, पत्रकारों, संपादकों मित्रों और शुभचिंतकों का हार्दिक आभार मानते हुए उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता है जिन्होंने इस वर्ष के पुरस्कार चयन के लिए लेखकों के नाम सुझा कर हमारा मार्गदर्शन किया।

दीप्ति शर्मा (लंदन से)

Indo-Canada
Income Tax Services Ltd.

Income Tax / Book keeping Experts
Management Consultants

☎ 905-264-9599

905-264-9587

15 Ayton Crescent, Woodbridge, Ontario L4L 7H8

Mistaan Catering & Sweets Inc.

Specializing in Bengali Sweets We do catering for Weddings & Parties

मिष्ठान की मिठाइयाँ

मिष्ठान की मिठाइयाँ
खाओ रसगुल्ले और रस मलाइयाँ

Our Daily Take-out Foods include:

Channa Bhatura	Aloo Ghobi
Malai Kofta	Matter Paneer
Channa Masala	Chicken Masala
Chicken Tikka	Tandoori Chicken
Butter Chicken	Goat Curry

& many more delicious items

अब आप बैठ कर खाने-पीने का आनन्द ले सकते हैं

460 McNicoll Avenue, North York, Ontario M2H 2E1

Visit Our Website: www.mistaan.com

Telephone: (416) 502-2737 Fax: (416) 502-0044

तुम्हारा केवल इतना ही सम्बन्ध था

✍ हरीश चन्द्र शर्मा, कैनेडा

एक दिन अचानक मेरी नज़र घर की एक पुरानी एल्बम में लगे कुछ चित्रों पर पड़ी और मैंने अपनी माँ से पूछा, 'यह कौन है?' माँ की आँखे आँसुओं से भर गईं और रोते-रोते उन्होंने मुझे सारी कहानी सुनाई। वह कहानी आप के साथ बाँटना चाहता हूँ हालाँकि मैं लिखता नहीं हूँ और न ही कभी लिखने का सोचा था पर अधेड़ उम्र में थामी कलम आपके स्तम्भ ने मेरा हौंसला बढ़ाया और आज अपने परिवार की अनकही, अनसुलझी गाथा आपके साथ साझी कर रहा हूँ।

सं 1930/32 में लाहौर शहर में पंडित मुल्कराज की बड़ी बेटी विद्यावती का विवाह बड़ी धूम-धाम के साथ श्याम लाल शर्मा के साथ हुआ। श्याम लाल जी, कीनिया (नायरोबी) में एक अच्छे पद पर नियुक्त थे। पति-पत्नी विवाह के बाद नायरोबी में एक सुंदर घर में रहने लगे। घर में नौकर-चाकर, कार आदि सभी सुविधाएँ थीं। विद्यावती जी एक सर्वगुण सम्पन्न महिला थीं। उनमें नारी के सभी गुण मौजूद थे। उन्हें चित्रकारी, सिलाई, कढ़ाई और अनेकों प्रकार के भोजन बनाने का बहुत शौक था। सब कुछ होते हुए भी उन्हें

यह बालक अधिक से अधिक समय अपनी मौसी के साथ बिताने लगा और उसे सिखाया गया कि वह उनका ही बेटा है। मौसी-मौसा के प्यार की कोई सीमा नहीं थी। कीमती वस्त्र और उसकी आवश्यकता की हर वस्तु का पूरा ध्यान रखा जाता था।

सन्तान का सुख प्राप्त नहीं हुआ। वह माँ नहीं बन पाईं।

कुछ समय के बाद विद्यावती की छोटी बहन सरला देवी का विवाह भी नायरोबी के निकट किसी गाँव के निवासी पंडित कल्याणधर शर्मा से हुआ। दोनों बहनों में शुरू से बहुत प्रेम था, विवाह के बाद परदेस में वे एक-दूसरे के और भी निकट आ गईं। छोटी बहन को अपनी बड़ी बहन के निःसन्तान होने का बहुत दुःख था। उसने मन में सोचा कि उसकी कोख में यदि ईश्वर ने पुत्र दिया तो वह उसे अपनी बहन को दे देगी। समय ने उसकी सुनी और कुछ दिनों के बाद उसके घर एक नन्हा सा बालक आया। बालक का नाम नरेन्द्र रखा गया। ज्यों- ज्यों यह बालक बड़ा होने लगा, गौर वर्ण और उसके घुँघराले बालों को देख कर लोग आकर्षित होते थे। उसकी तोतली बातों को सुनकर सभी उसको प्यार से अपने साथ चिपका लेते थे।

वचनानुसार यह बालक अधिक से अधिक समय अपनी मौसी के साथ बिताने लगा और उसे सिखाया गया कि वह उनका ही बेटा है। मौसी-मौसा के प्यार की कोई सीमा नहीं थी। कीमती वस्त्र और उसकी आवश्यकता की हर वस्तु का पूरा ध्यान रखा जाता था।

1942 में जब नरेन्द्र 4/5 साल का था, विद्यावती ने भारत जाने का निश्चय किया और सोचा कि नाना-नानी तथा अन्य परिवार के सदस्यों से उसे मिलाया जाए। लाहौर शहर में पंडित मुल्खराज जी के घर पर बहुत शानदार पार्टी दी गई। समय बहुत तेज़ी से निकल गया और कीनिया वापसी का समय निकट आ गया।

उन्हीं दिनों जब वे भारत में थीं तो उन्हें एक सुखद समाचार मिला कि सरला देवी ने एक पुत्र को जन्म दिया है। इस बच्चे का नाम रखा गया हरीश चन्द्र जो की मैं हूँ। जब नरेन्द्र को यह बात बताई गई तो बहुत ही खुश हुआ कि उसका छोटा भाई आया है। वे कीनिया लौटने के लिए ज़ोर-शोर से तैयारी करने लगे। उन दिनों लम्बी यात्रा के लिए पानी वाले जहाज़ ही प्रयोग किये जाते थे। द्वितीय युद्ध का समय था, जहाज़ की टिकट मिलना भी आसान काम नहीं था। फिर भी नवम्बर 1942 में यस यस तिलावा नाम के जहाज़ में उन्हें सीट मिल गयी।

अभी जहाज़ कुछ दिन ही चला था कि जापानी जल सेना के सैनिकों ने इस जहाज़ को रोक लिया और कहा कि यह यात्रियों का जहाज़ नहीं है। उन्होंने जहाज़ में सैनिक सामान होने की शंका व्यक्त की 24 घंटे का समय देकर कैप्टन को आदेश दिया कि वह जहाज़ तुरंत खाली कर दे और अपने सारे यात्रियों को बाहर उतार ले ताकि वे इसे जल में डुबो सकें। इससे जहाज़ में खलबली मच गयी। सभी यात्री इधर-उधर भागने लगे। कई लोगों ने देखा था कि विद्यावती और बालक नरेन्द्र एक नाव पर सवार हुए थे, उनमें से कुछ लोग बाद में अपने ठिकानों पर पहुँच गए किन्तु उन दोनों का आज तक पता नहीं चल पाया।

उधर नायरोबी में सरला देवी (मेरी माँ) अपने बेटे नरेन्द्र और बहन विद्यावती के आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहीं थीं। उन्होंने हर जगह पूछ-ताछ की, फोन मिलाए, पत्र भेजे, लेकिन कुछ भी हाथ न लगा। कुछ दिनों बाद लापता लोगों की लिस्ट मिली, जिसमें उनका भी नाम है।

इस दुःखद समाचार ने मेरी माँ को झकझोर दिया और वे इतनी भावुक हो गईं कि आजीवन इस शोक से बाहर न आ पाईं। मेरे पिता हमेशा उन्हें दिलासा देते रहे कि भगवान एक दिन उन दोनों को तुम्हारे पास ले आयेगा।

उन्होंने बहुत से ज्योतिषयों को अपने हाथ की रेखाएं, जन्म-पत्री भी दिखाई किन्तु हर एक से निराशा ही हाथ लगी। सभी ने यही कहा कि तुम्हारा उसके साथ केवल इतना ही नाता था। तुम्हारा काम तो केवल उसे जन्म देना था।

समय चक्र चलता रहा और परिवार में नये सदस्य आ गए। लेकिन मैं हरीश चन्द्र आज भी अपने उस बिछड़े भाई को जिसकी याद में माँ आँसू बहाती रहती है और माँ के बहते आँसुओं में उसे देखा करता हूँ, जिसे कभी देखा न था। ◆

Hindi Pracharni Sabha

(Non-Profit Chatitable Organization)

Membership Form

For Donations and Life Membership we will provide a Tax Receipt

Annual Subscription: **$25.00 Canada and U.S.A.**

Life Membership: **$200.00**

Donation: **$ _____**

Method of Payment: cheque, payable to " Hindi Prachani Sabha"

For India:
CA - S.K.DHINGRA
S.K.Dhingra & Co
Chartered Accountants
501 Kirti Shikhar, District Center
Janak Puri, New Delhi - 110058, India
Ph - 25531678, 25505467

वार्षिक --३०० रुपये
दो वर्ष --६०० रुपये
पाँच वर्ष --१५०० रुपये
आजीवन --३००० रुपये

Name:_____

Address: _____

_____

Telephone: Home: _____Business_____

e-mail:_____

****

Contact in Canada:

Hindi Pracharni Sabha
6 Larksmere Court
Markham, Ontario L3R 3R1
Canada
(905)-475-7165 Fax: 905-475-8667
e-mail: hindichetna@yahoo.ca

Contact in USA:

Dr. Sudha Om Dingra
101 Guymon Court
Morrisville, North Carolina
NC27560, USA
(919)-678-9056
e-mail: ceddlt@yahoo.com

आख़िरी पन्ना

एक बूढ़े किसान की कहानी बचपन में सुनी थी -- एक किसान के छह बेटे थे। वे सभी आपस में लड़ते रहते थे। उनके झगड़ों से बूढ़ा किसान बहुत दुःखी रहता था। एक दिन उसने अपने बेटों को जंगल से लकड़ियाँ लाने के लिए कहा। और फिर उन लकड़ियों का एक बण्डल बना कर अपने लड़कों से कहा कि इसे तोड़ो। वे उसे तोड़ नहीं पाए। फिर उसने एक-एक लकड़ी अलग करके उन्हें तोड़ने को दी तो लड़कों ने झट से तोड़ दी। इस उदाहरण से उसने अपने बेटों को समझाया कि इकट्ठे रहने में जो ताकत है वह अलग होने या लड़ने-झगड़ने में नहीं। उसके बाद उसके बेटे इकट्ठे रहने लगे। इस कहानी को सुनाने के बाद अपने बड़ों को हमने यही कहते सुना कि एकता में बल है। यह कहानी मुझे इसलिए याद आई कि पिछले दिनों इस कहानी का उदाहरण देखने को मिला जब भारतीय क्रिकेट टीम की विजय हुई। टीम वर्क के रूप में वह एकता नज़र आई। काश! ऐसा टीम वर्क देश की उन्नति के लिए हो तो देश का वर्तमान और भविष्य बदल जाए। काश! ऐसा टीम वर्क हिन्दी और साहित्य के उत्थान के लिए हो। काश! ऐसा टीम वर्क भारत में बढ़ रहे अंग्रेज़ी के वर्चस्व के मध्य हिन्दी के प्रति युवाओं को आकर्षित करने के लिए हो।

ख़ैर मेरे चाहने से क्या होता है... मैं तो हिन्दी साहित्य में गुटबंदियाँ नहीं चाहती... किसी तरह का बँटवारा नहीं चाहती। इससे हमारी ऊर्जा का ह्रास होता है और साहित्य तथा साहित्यकारों के साथ इंसाफ नहीं हो पाता। यह बात जब तक हिन्दी प्रेमियों के भीतर से नहीं आएगी तब तक मेरे जैसे हिन्दीप्रेमी और इस बात के समर्थक कुछ नहीं कर पाएँगे। इस बार बस इतना ही...

पुस्तकों से लदी-भरी
दुकान में
ग्राहकों को देखकर
कोने में दुबकी पड़ीं
धूल से सनी
दो-तीन हिन्दी की पुस्तकें
कमसिन बाला-सी सकुचातीं
विरहणी-सी बिलखतीं
अँगुलियों के स्पर्श को तरसतीं
पाठक प्रेमी के हाथों में
जाने की लालसा में
प्रतीक्षारत हैं
पर अंग्रेज़ी दादा का वर्चस्व
प्रेमियों को
उन तक पहुँचने नहीं देता...

आपकी मित्र
सुधा ओम ढींगरा

CARPET PLUS

SAVE UP TO 70%
LUXURIOUS CARPETS
ORIENTAL RUGS

Commercial &
Residential
Installations

Broadloom

F •Installation
R •Underpad
E •Delivery
E •Shop at Home

Vinyl Tiles

Tel: (416) 661 4444
Tel: (416) 663-2222
Fax: (905) 264-0212

180 Winges Rd. Unit 17-19
Woodbridge,
Ontario L4L 6C6

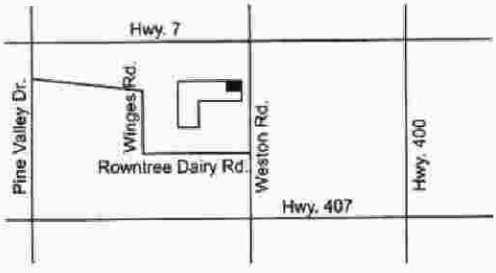

ॐ

"बिजली की रोशनी से रात्रि का कुछ अँधकार दूर हो सकता है. किन्तु सूर्य का काम बिजली नहीं कर सकती। इसी भाँति हम विदेशी भाषा के द्वारा सूर्य का प्रकाश नहीं कर सकते। साहित्य और देश की उन्नति अपने देश की भाषा द्वारा ही हो सकती है।"

– पंडित महामना मदनमोहन मालवीय

REPPA®
FLAGS & SOUVENIRS

A Division of
FCA Group Canada Inc.

Exceptionally fine source of more then 600 titles of International, Canadian and Provincial Pins, Flags, Crests, Caps, etc.

QUALITY CUSTOM WORK AVAILABLE FOR ALL OF THE ABOVE

83, Queen Elizabeth Blvd.
Toronto, ON. Canada
M8Z 1M5

Phone : 416-599-FLAG (3524)
info@reppa.ca
www.reppa.ca